



॥ श्री ॥

# श्री नीत्येनेमभावा

स्तवन संग्रह.

अनेक ग्रन्थों में संग्रह कम्के रचित किया है ।

जिमें—

रतलाम ( मालवा ) निवासी श्रीमान् दानवीर राय  
बहादुर श्रीष्टिवर्य श्रीकेशीसिन्हाजी माहव  
की आज्ञामे

प्रसिद्धकर्ता—

श्रीजगन्मयुग प्रधान श्रीजिनदत्तमूरी आनन्दचन्द्र पाठशाला  
के मेम्बर श्री मुनीम पन्नालालजी दासोंत व सेक्रेटरी  
श्रीहसराजजी लालन ने

श्री जेन प्रभाकर प्रेम रतलाम में छपाकर प्रगट की

धीर मगन २४४५

विक्रम समत् १९७६

प्रथमवार

निद्रावल

१०००,

III)



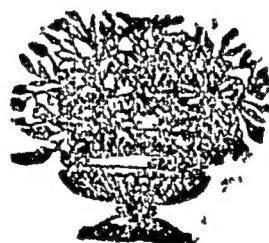
## चूमिका-

यह “स्तवनमंग्रह” नाम का ग्रन्थ अतिपरिश्रम से भगवद्भक्तजनों के उपकार के लिए अनेक ग्रन्थ समुद्रों से सार सार एकर कर-संक्षेपरूप में रचित किया गया है। उन स्तोत्रों का नाम-निर्देश संक्षेपरूप तथा फल, इस तरह है-श्रीजैनधर्म का प्रधान “नवकारमन्त्र” जो सर्व मंगल देनेवाला है। तथा-“नवग्रह-स्तोत्र” कर्मानुसार जगत्के सुखदुःख के नियम कर्ता ऐसे रेखर (नवग्रह) जिनभगवानरूप हैं उन्हीं के स्तुतिपूजन से सकल शान्ति होती है ऐसा पञ्चमश्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी ने कथन किया है। तथा-“धम्मो मंगल” स्वाध्याय इस का फल-जिस मनुष्य का मन सदा धर्म में रहता है उस पुरुष का देवता भी नमस्कार करते हैं। तथा-“जिनपञ्जरस्तवन” का फल-अंगों की रक्षा जैसे कर चर्ता है ऐसेही प्रत्येक अंगों में जिन भगवानों के नाम उच्चारणकर रक्षा करने पर सकल बाधा शान्त होती है। सपूर्ण लक्ष्मी का वह पुरुष आश्रय होजाता है सतानों की वृद्धि होती है। तथा-“लघुजिनमहस्त्रनामस्तवन” अति शान्तिदायक है पठन कर्ता इन्द्रदेव से वन्दनीय होजाता है। तथा-“श्रीशीतलजिनस्तोत्र” नामोच्चारणही से शान्ति देने वाला है। तथा-“श्रीपार्वजिनस्तोत्र” की महिमा स्तोत्र पाठ करने से ही मालूम होगी। तथा-“श्रीपरमात्मस्तोत्र” चिदानन्दरूपवीतराग भगवान् की महिमा का प्रतिपादक किसीको पाठकरन में प्यारा नहीं मालूम होगा। तथा-“नमस्कारस्तोत्र” मद्गलरूप है। तथा-अन्तिमतीर्थकर श्रीभगवान् महावीर जिन का छंद-गान करने में अतिप्रिय है। तथा-नवकारछन्द के दोहे अत्यन्त मनभावन है। तथा-“श्रीनवकारमन्त्र आत्मरक्षास्तोत्र”

संपूर्ण व्याधि नाशक है । “ श्रीवृहत्शान्ति ” सर्वसाधारण मनुष्य को अवश्य रोज करना उचित है । सर्वस्तोत्रों का माहात्म्य लिखने में भूमिका बड़ी होजायगी-इस्से संक्षेप मे समाप्त करदी है । महाशय लोग दयाकर क्षमा करेंगे ।

“ स्वामेभि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा स्वमन्तु मे ।

मित्ती मे सव्व भूएसु,वेरं मज्झ न केण वि ॥ १ ॥ ”



## ॥ सूचिपत्रम् ॥

	पृष्ठ
णवकारमंत्र-‘णमो अरिहताणं,	१
जगद्गुरुनवग्रहस्तोत्र-‘जगद्गुरुं नमस्कृत्य,	१
धम्मो मंगलस्त्राध्याय-‘धम्मो मंगलमुक्किह,	३
जिनपञ्जरस्तोत्र-‘ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः,	३
लघुजिनमहस्त्रनाम-‘नमस्त्रिलोकनाथाय,	६
श्रीशीतलजिनस्तोत्र-‘सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं,	१०
श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र-‘विशद्गुणविचित्रं सच्चरित्रं दधानो,	११
श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तोत्र-‘यस्य ज्ञानदयासिन्धो,	१२
श्रीविनिधयमरुयुक्तश्रीपार्श्वजिनस्तोत्र-‘लक्ष्मीनिदानं,	१३
श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तोत्र-‘गौडीग्रामे स्तम्भने चास्तुतीर्थे,	१४
श्रीपार्श्वजिस्तोत्र-‘विशद्गुणराजिविराजितं,	१५
श्रीपरमात्मस्तोत्र-‘शिवं बुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं,	१५
नमस्कारस्तोत्र-‘दर्शनं देवदेवस्य,	१७
श्रीमहावीरजिनछन्द-‘सेवो वीरने चित्तमां नित्यधारो,	१८
णवकारनो छन्द-‘वद्वितपूरे विविग्रपरं,	२१
पुनः णवकार छन्द-‘सुखकारणं भवियणं समरुं श्रीनवकारं,	२४
श्रीणवकारमन्त्र आत्मरक्षा-‘ॐ परमेष्ठी नमस्कारं,	२५
श्रीशरत्पारश्वजिनछन्द-‘सेवो पाशं शस्त्रेसरो मनशुद्धं,	२६
श्रीगौतमाष्टक छन्द-‘वीरं जिण्णसरेकेरो शीशं,	२८
श्रीशोलसती नो छन्द-‘आदिनाथ आदे जिनवरं वंदी,	२६
श्रीतीर्थमालास्तवन-‘शेजुजयं ऋषभं समोसरया,	३१

	५४
श्रीदृढशान्ति-‘भो भो भव्याः शृणुत वचन प्रस्तुतं सर्वमेतत्,	३३
सकलतीर्थवन्दना-‘सकल तीर्थ वंदू करजोड,	४०
शवकारस्तवन-‘श्रीनवकार जपो मनरंगे,	४२
श्रीगौतमस्वामी अष्टक-‘ग्रह उठी गौतम प्रणमीजे,	४३
श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तवन-‘आणी मनसूधी आसता,	४४
श्रीमङ्गलचार-‘सिद्धार्थ भूपति शोहे कृत्रियकुण्डे,	४५
श्रीभीडभञ्जन पार्श्वनाथ छन्द-‘भीडभंजन प्रभु भीडभंजन सदा,	४८
श्रीगौतमगुरुप्रभात छन्द-‘जयो जयो गौतम गणधार,	४६
श्रीपार्श्वनाथ छन्द-सकल सार सुरतरु जगजाणं,	४६
श्रीगोडीपार्श्वनाथ छन्द-‘धवलधींग गोडीधणी,	५१
श्रीचोत्रीसअतिशयनो छन्द-‘श्रीसुमतिदायक दुरितघायक,	५३
श्रीशिखामणनो छन्द-‘वरदायक माय सलाम करी,	५५
श्रीएकादश गणधरना नाम-‘एकादश गणधरना नाम,	५७
श्रीगौतम प्रभाति स्तवन-मातपृथ्वी सुत प्रात उठी,	५८
श्रीदोधक बावनी-‘ॐ यह अक्षर सार है,	५६
ज्वर ( ताव ) छन्द-‘ॐ नमो आनन्द पुर नगरे.	६५
क्रोधमान माया लोभनो छन्द-‘पहेला सरस्वतीनुं लीजे नाम,	६७
सरस्वती अष्टक-‘बुद्धि विमलकर नावबुधवर,	७१
श्रीमङ्गलाष्टक-‘मङ्गलं भगवान् वीरो,	७३
श्रीभीडभञ्जन पार्श्वनाथ छन्द-‘वारुविश्वमाँ देश काशीविराजे,	७५
श्रीआदिजिनेशरको पारणो-‘आदिजिनेशर कियो पारणो,	७६
श्रीमहावीरस्वामीको पारणो-‘श्रीअरिहंत अनंतगुण,	७६
श्रीपद्मावती आलोयणसज्जाय-‘दिवे राणी पदमावती,	८३

	पृष्ठ
श्रीमर्वपापादिक आलायणस्तवन-‘बेकरजोड़ी धिनवू जी,	८७
क्रोधनी सज्झाय-‘कडवा फल छे क्रोधना,	६१
श्रीमाननी सज्झाय-‘रे जीव ! मान न कीजिए,	६२
श्रीमायानी सज्झाय-‘समकित नुँ मूल जाणियेजी,	६२
श्रीलोभनी सज्झाय-‘तुमे लक्षण जो ज्यो लोभनारे,	६३
श्रीगोडीपार्श्वनाथ जिनस्तवन-‘श्रीजिनवदन निवासना,	६४
ढाल १-‘देसां श्रीहर देश छे काशी,	६५
ढाल २-‘श्रीसंखेसर पामजिनेसर,	६६
ढाल ३-‘इणीयज भरत सुचित्रमे,	६७
ढाल ४-‘तुरकाने दामढिया पांचसो,	६६
ढाल ५-‘एक दिन काजल भाखे मेघने,	१०२
ढाल ६-‘सुणो सुगुण सनेहा सेठजी,	१०४
ढाल ७-‘काजल सहू लोकानी सारें,	१०५
श्रीसिद्धगिरिस्तवन-‘ते दिन क्यारे आवसी हे,	११०
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘आज आपे चालो सहियो,	१११
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘श्रीचदा प्रभु पाहुणो रे,	११२
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘अंगडभावो मोने अतिघणो,	११४
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘जात्रा निनाहुं करिए विमलगिरी,	११५
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘आज बगई म्हारे रगवधार्द,	११६
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘भावधर घन्यादिन आज सफलो,	११८
वैराग्यपद-‘ऊठाने मेरा आनमराम,	११८
श्रीअष्टपभजिनस्तवन-‘भज मन ! नाभिनन्दनदेव,	११६
वैराग्यपद-‘घड़ी २ पल २ छिन २ निशादिन,	१२०



वैराग्यपद—‘रसना सफल भई,	१२०
वैराग्यपद—‘सोई सोई सारी रेन गुमाई,	१२१
पुनः वैराग्यपद—‘कहा कीनो नर भव पाके,	१२१
पुनः वैराग्यपद—‘रे मन क्युं जिननाम विसारयो,	१२२
कुमतिमुखवज्रचपेटका । अथवा-ननवमुख—‘कुमति हट तजो,	१२३
श्रीअजितजिनस्तवन—‘अजित जिन लगन लगी सो लगी,	१२६
श्रीगौडीपार्श्वजिनस्तवन—‘श्रीमत गवडी पार्श्वजिनेश्वर,	१२६
श्रीशान्तिजिनस्तवन—‘शान्ति जिनंदा मुभविनती,	१२७
श्रीऋषभजिनस्तवन—‘रिषभ जिन तुम सम नाँहीं,	१२८
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘अहो सुखकंद पार्श्वजिनचंद,	१२६
श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवन—‘एक अरज अवधारियेरे,	१३०
श्रीसिद्धगिरिस्तवन—‘सेतुंजा नो वासी प्यारो लागे म्हारा,	१३१
श्रीशान्तिजिनस्तवन—‘चित्त चावो सेवा चरणकी,	१३२
श्रीशान्तिजिनस्तवन—‘अष्टा षट्हो जपरलो प्रसादके,	१३२
श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवन—‘सामि सोभागी साँभलो,	१३३
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘भिर गिर यरमे भेहहो लाल,	१३५
श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवन—‘आज आखंद घन उमड्यो रे,	१३७
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘अश्वसेणजीरा छावा हो अलवेसर,	१३७
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘प्रभु पास जिगंद की शोभारे चालो,	१३६
वैराग्यपद—‘पिउड़ा जिन चरणरी सेवा मीठी मानु लागे,	१४०
वैराग्यपद—‘चेतनं तू क्या फिरे भूला,	१४१
श्रीशत्रुंजयरास—‘श्रीरिसहेसर पायनमी,	१४१
ढाल ?—‘शत्रुंजयने श्रीपुंडरीक,	१४२

ढाल २-‘केवलज्ञानी प्रथम तीर्थकर,	१४३
ढाल ३-‘शत्रुजाना कहूँ शोलउद्वार,	१४५
ढाल ४-‘भरत तणे पाट आठमें,	१४७
ढाल ५-‘शत्रुंजे गया पापछूटिये,	१५१
ढाल ६-‘सप्रति काले सोलमो ए,	१५२
श्रीगौतमरास-‘वीरजियोसर चरण कमल कमला कयवासो,	१५५
गौतमस्वामी की प्रभाती-‘राग प्रभाती जे करे,	१६५
वैराग्यपद-‘समझ नर जीवन थोरो,	१६५
महावीरस्वामी स्तवन-‘मगध देश सुहावनो रे,	१६६
चारसरणा-‘मुझने चार सरणा होय जो,	१६८
आलोयण स्तवन-‘लाख चोरासी जीव समावीए,	१६९
आलोयण स्तवन-‘पाप अठारे जीव ! परिहरो,	१६९
वैराग्यपद-‘धन धन तेह दिन मुझक कटी होमे,	१७०
अजितनाथ लावणी-‘अजित नाथ महाराज गरीब निवाज,	१७०
धूलिभद्रऋषिनवरमा-‘सुखसंपत्तिदायक सदा,	१७१
ढाल १-‘मने मारा वाप ना समझो,	१७२
ढाल २-‘आव्यो आसाढो मासरे,	१७६
ढाल ३-‘म्हारा मन माहीं लागे मीठो रे,	१७८
ढाल ४-‘म्हेतो जोग तुम्हारो जाण्यो रे,	१८१
ढाल ५-‘मेहसुँ माढ्यो वाद माननी तरसेरे,	१८२
ढाल ६-‘तु स्याने करे छे चालारे,	१८४
ढाल ७-‘सांभली ताहरा वयण,	१८६
ढाल ८-‘मे परणी सजमनारी रे,	१८८

- ढाल ६-‘पामिने प्रतिबोध, कोशयारे कोश्याव्रत उचरे रे, १६१
- शीयलनववाड-‘श्रीनेमिश्चर चरण जुग, १७२
- ढाल १-‘शीलसुतखर सेविये, १६३
- ढाल २-‘भावधरि नित्य पालिये, १६४
- ढाल ३-‘जाति रूप कुल देशनी रे, १६५
- ढाल ४-‘तीजी वाडी हिवे चित्तविचारो, १७७
- ढाल ५-‘मनहर इन्द्री नारीना दीठा बाधे विकार, १६८
- ढाल ६-‘वाडी हिवे सुणी पांवमीरे शीलतणी रखवाल, १६९
- ढाल ७-‘भर जोवन धनसामग्रीलही, २०१
- ढाल ८-‘ब्रम्हचारी सांभली वातडी, २०२
- ढाल ९-‘पुरुष कवल वत्रीस भोजन विधि कही, २०३
- ढाल १०-‘शोभा न करे देहनी न करे तणसिणगार, २०४
- ढाल ११-‘श्रीवीर दोइ दस परपदा मे, २०५
- श्रीआलोयणस्तवन-‘आदिश्वरपहिलो अरिहंत, २०६
- ढाल १-‘खाडण पीसण रांधणो रे सोवण जीमण ठाम, २०८
- ढाल २-‘गाम मुकाते मेलिया अकराकर कीध, २०९
- ढाल ४ (३)-‘इम अनरथ दंड लगायारे, २११
- भक्तिमार्ग नो कंटक-‘माया डांकण दूरे भागी, २१३
- भक्ति रहितो नो उपालंभ-‘जिन मुख से प्रभु नाम न, २१४



॥ \* ॥ श्री ॥ \* ॥

॥ \* ॥ श्रीवीतरागायनमः ॥ \* ॥

॥ श्रीजिनदत्तसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ एवकार मंत्र ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमोसिद्धाणं  
॥ २ ॥ एमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवझा  
याण ॥ ४ ॥ एमो लोए सवसाहूणं ॥ ५ ॥ ए  
सो पंच एमुकारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥  
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सवेसिं ॥ ८ ॥ पढंमं हवइ  
मंगलं ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ जगद्गुरु नव गृहस्तोत्र ॥

जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सद्गुरुज्ञापितं ॥  
ग्रहशान्तिं प्रविख्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥  
जिनेन्द्राः खेचराज्ञेया । पूजनीया विधिक्रमात् ॥  
पुष्पैर्विलेपने धूपैः । नैवेद्ये स्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभ-  
स्यमार्तडः । चन्द्र श्रृङ्गप्रजस्यच ॥ वासुपूज्योऽमृमिपु-  
त्रो । बुधोऽप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माणां ।

शांति कुंथुर्नमिस्तथा ॥ वर्धमानो जिनेन्द्राणां । पादप-  
 द्मे बुधंन्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषन्नाजितसुपार्श्वा । श्वाजिनंद-  
 नशीतलौ ॥ सुमतिःसंज्ञवःस्वामी । श्रेयांसश्चब्रह्मस्प-  
 तिः ॥ ५ ॥ सुविधेःकथितःशुक्रः । सुव्रतश्चशनैश्चरः ॥  
 नेमिनाथोन्नवेद्राहुः । केतुः श्रीमद्विपार्श्वयोः ॥ ६ ॥  
 जन्मलगेचराशौच । यदा पीडंति खेचराः ॥ तदा  
 संपूजयेद्धीमान् । खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥  
 पुष्पैर्गन्धादिभिर्धूपैः । नैवेद्यैः फलसयुतैः ॥ वर्णसद्भ्य-  
 दानैश्च । वासौर्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्य-  
 सोम मङ्गल । बुधगुरुशुक्र शनैश्चरोराहु ॥ केतु प्रमुखा  
 खेटा । जिनपतिपुरतोवतिष्ठंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृ-  
 तोच्चार । देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्चपूजितास्तथा ।  
 गृहाः संतुसुखावहा ॥ १० ॥ जिनानां मग्नतः स्थि-  
 त्वा । ग्रहाणांतुष्टिहेतवे ॥ नमस्कार शतंभक्त्या ।  
 जपेदष्टौ क्षरं नरं ॥ ११ ॥ नक्षत्राहु र्वाचेदं ।  
 पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः पूर्वाद् । ग्रह-  
 शांतिर्विनिर्मितः ॥ १२ ॥ इति श्रीनवग्रहशांतिका-  
 रकजिनस्तोत्रं ॥ २ ॥

॥❀॥ अथ धम्मो मंगल स्वाध्याय ॥❀॥

॥❀॥ धम्मो मंगलमुक्खिं । अहिंसा संजमो तवो ॥  
 देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मेसयामणो ॥ १ ॥  
 जहा दुम्मस्सपुप्फेसु । जमरो आविअइरसं ॥ नय  
 पुप्फ किलामेइ । सोअपीणेइअप्पयं ॥ २ ॥ एमेए  
 समणावुत्ता । जेलो ए सति साहुणो ॥ विहंगमाव  
 पुप्फेसु । दाणज्जेसणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वित्तिंल-  
 व्जामो । नयकोईउवहम्मइ ॥ अहागरेसूरियंते ।  
 पुप्फेसुजमरो जहा ॥ ४ ॥ महकारसमावुद्धा । जे  
 जवंति अणिस्सिआ ॥ णाणापिरुरयादंता । तेण  
 वुच्चंती साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ दुमपुप्फियानाम-  
 झयणंसम्मत्तं ॥ ❀ ॥ इति ॥ ३ ॥



॥ अथ जिनपंजरस्तोत्र ॥

॥❀॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं अर्द्धद्व्योनमोनमः ।  
 ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं सिद्धेद्व्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं  
 आचार्येन्द्व्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं उपाध्याये-  
 न्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं श्रीगौतमस्वामि

प्रमुख सर्वसाधुज्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंचनम  
 स्कारः । सर्वपापक्षयंकरः ॥ मंगलानांचसर्वेषां । प्रथ  
 मं जवतिमंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जएविजए । अर्हं  
 परमात्मनेनमः ॥ कमलप्रजसूरिंद्रो । ज्ञाषते जिन  
 पंजरं ॥ ३ ॥ एक जक्तोपवासेन । त्रिकालंयः पठे  
 दिदं ॥ मनोभिलषितंसर्व । फलंसलभतेध्रुवं ॥ ४ ॥  
 जूशय्या ब्रह्मचर्येण । क्रोधलोभविवर्जितः ॥  
 देवताग्रेपवित्रात्मा । षण्मासैर्लजतेफलं ॥ ५ ॥  
 अर्द्धतंस्थापयेन्मुर्द्धनि । सिद्धंचक्षुर्ललाटके ॥  
 आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये । उपाध्यायंतुघ्राणके ॥ ६ ॥  
 साधुवृंदंमुखस्याग्रे । मनः शुद्धंविधायच ॥ सूर्य  
 चंद्र निरोधेन । सुधिः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥  
 दक्षिणे मदनद्वेषी । वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अं-  
 गसंधिषु सर्वज्ञः । परमेष्ठिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वा-  
 शांश्रीजिनोरद्वे । दाग्रेयिंविजितेद्रियः ॥ दक्षिणा  
 शांपरंब्रह्म । नैऋतिंच त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ प-  
 श्चिमाशां जगन्नाथो । वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरांतीर्थ  
 कृतसर्वा । मीशानींचनिरंजनः ॥ १० ॥ पाताल-  
 जगवा नर्ह । नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणी प्रमुखा

देव्यो । रक्षन्तु सकलंकुलं ॥ ११ ॥ ऋष्योमस्तकं-  
 र्हे । दत्तितोपि विलोचने ॥ संचव- कर्णयुगलं ।  
 नाशिकां चातिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ट्रोश्रीसुमती  
 रक्षेत् । दत्तान्पद्मप्रभोविभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्व  
 देवोयं । तालु चंद्रप्रभोविभुः ॥ १३ ॥ कठ  
 श्रीसुविधीरक्षेत् । हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो वा-  
 ह्युगलं । वासुपूज्य- करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुली विम-  
 लोरक्षे । दन्तनोसोस्तनावपि ॥ सुधर्मोऽप्युदरा स्थी-  
 नि । श्रीशा तिर्नाभिमंरुद्रं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकंर-  
 क्षे । दरोरोमकटीतटं ॥ महिरूरूपृष्ठिवंशं । जंघे-  
 चमुनि सुवृत्तः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्निमोरक्षेत् ।  
 श्रीनेमिश्वरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथ-सर्वांगं । वर्द्ध-  
 मानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवि जलतेजस्क ।  
 वायवाकास मयंजगत् ॥ रक्षे दशेपपापेभ्यो ।  
 पीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेऽमशानेवा ।  
 संग्रामेशत्रुसंकटे ॥ व्यावृत्तोरश्विपदादि । नृनप्रेत-  
 जयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणेप्राप्ते । दान्त्र्या  
 परसमाश्रिते ॥ अपुत्रत्वेमहादोषे । मूर्खत्वेरोगभी-  
 शिने ॥ २० ॥ नाकिनी शाकिनी गृह्णे । नदा प्रद-  
 ग्गणदिने ॥ नयुत्तारेऽप्येपम्ये । व्यसनेचापदि-



स्मरेत् ॥ ११ ॥ प्रातरेव समुत्थाय । यःस्मरेज्जिन  
 पंजरं ॥ तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति । लब्धयते सुखसंपदं  
 ॥ १२ ॥ जिनपंजरनामेदं । यःस्मरत्यनुवासरं ॥ कम-  
 लप्रजराजेन्द्रः । श्रियंसलज्जतेनरः ॥ १३ ॥ प्रातः—  
 समुत्थाय पठेत्कृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥  
 आसादयेत्सः कमलप्रज्जाख्यं । लक्ष्मीं मनोवाञ्छितपू-  
 रणाय ॥ १४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगहे । देवप्रज्जाचा-  
 र्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादीन्द्रबूडामणिरेषजैनो । जी-  
 याद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ १५ ॥

॥ ❁ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्र संपूर्णम् ॥ ❁ ॥ ४ ॥

## ॥ अथ लघु जिनसहस्रनाम ॥

॥ नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥  
 वद्वे तस्यैव नामानि । मोक्षयसौख्याजिलाषया ॥ १ ॥  
 निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः ॥  
 निःशरीरो निरातङ्को । सिद्धः सूक्ष्मो निरञ्जनः ॥ २ ॥  
 निष्कलङ्को निरालम्बो । निमोहो निर्मलोत्तमः ॥  
 निर्जयो निरहङ्कारो । निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥  
 निर्दोषो निरुजः शान्तः । निर्जैवो निर्ममः शिवः ॥  
 निस्तरङ्गो निराकारो । निष्कर्मो निष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥

निर्वादो निरुपज्ञानः । निरागो निरघोजिनः ॥  
 निःशब्दःप्रतिमश्लेषः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥  
 निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्टकः शब्दवर्जितः ॥  
 अनिद्यो महापूतात्मा । जगत्शिखर शेखरः ॥ ६ ॥  
 निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः ॥ सोपि  
 योगात् शुभप्राप्तः । कर्मयोतिवलावहः ॥ ७ ॥ अ-  
 जरो अमरः सिद्धः । अर्चिनः अक्षयो विजुः ॥ अमू-  
 र्तः अच्युतोब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापतिः ॥ ८ ॥ अ-  
 निद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमोजवः ॥ अप्र-  
 मेयो जगन्नाथ । बोधरूपो जनात्मकः ॥ ९ ॥ अ-  
 व्ययः सकलाराध्यो । निष्पन्नो ज्ञानलोचनः ॥ अठे  
 योनिर्मलो नित्यः । सर्वशक्त्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अ-  
 जेयः सर्वतोन्नतः । निष्कपायो चक्रांतकः ॥ विश्व-  
 नाथः स्वयंबुद्धः । वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥  
 अंतको सहजानन्दः । अवाङ्मानसगोचरः ॥ असा-  
 ध्यःशुद्धश्चेतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनं-  
 तो विमल ज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशः ॥ कर्मा-  
 जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणीः ॥ १३ ॥  
 अद्यावाधो वरःशंभुः । विश्व वेदी पितामहः ॥ सर्वजु-  
 नहितोदयः सर्वलोकशरण्यकः ॥ १४ ॥ आनन्द-

रूपवैतन्यो । जगवां स्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनन्तानंत-  
 धीशक्तिः । सत्यव्यक्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अपृक-  
 र्मत्रिनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जित ॥ गौरवादित्र-  
 यादूरः । सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अन्नयः प्राप्त-  
 कैवलयः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवल-  
 ज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो  
 महाराध्यो । वरदो ज्ञानपात्रकः ॥ सर्वेशः सत्सुखा-  
 वासः । जिनेन्द्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञा-  
 नी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धो जगवान्नाथः । प्र-  
 स्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः मुगतो रौद्रः ।  
 सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो ज्ञानाधीशः । सचित्तः  
 पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो मु-  
 क्तिवह्नयः ॥ योगिन्द्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो  
 ज्ञान गोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्रः ।  
 सत्सौख्य त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः ।  
 कट्याणकोष्ठमूर्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः ।  
 सर्वपापविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिको देवोः । सर्वभूत  
 हितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः  
 पापनाशनः ॥ तनुमात्रश्चिदानंदः । चैतन्यश्चैत्य-  
 वैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव । मुक्तिस्थोम-

इतामहः ॥ मुक्तिकार्यायसंतुष्टो । निरागः पर-  
 मेश्वरः ॥ १५ ॥ महादेवो महावीरो । महामोह-  
 विनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । महामुक्तिप्रदा-  
 यकः ॥ १६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो  
 महात्मकः ॥ महार्द्धको महावीर्यो । महान्तिकपद-  
 स्थितः ॥ १७ ॥ महापूज्यो महान्यो । महाविघ्न-  
 विनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो । महामहिमश्च-  
 च्युतः ॥ १८ ॥ मुक्ता मुक्तिजसंबोधः । एकानंकवि-  
 निश्चलः ॥ सर्वबंध विनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः  
 ॥ १९ ॥ महागूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥  
 महामुक्तिप्रदोधोरो । महाहृद्यो महागुरुः ॥ २० ॥  
 निर्मारोमारविध्वंसी । निष्कामोविषयाच्युतः ॥ जग-  
 वंतो महाशांतो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ २१ ॥  
 परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्ठो परमेश्वरः ॥ परमा-  
 त्मापरानदोः । परंपरम आत्मकः ॥ २२ ॥ प्रस्तुतानं-  
 तविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ नाकृतिं नाक्षरो-  
 वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ २३ ॥ व्यक्ताव्यक्त-  
 जसंबोधः । संसारद्वेदकारणः ॥ निरवद्योमहा राध्यः ।  
 कर्मजिह्मनायकः ॥ २४ ॥ बोधसत्सु जगद्व्यो ।  
 विश्वात्मा नरकांतकः ॥ स्वयंनू पापहृत्पूज्यः । पुनी-

तोविजयः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीतो । रू-  
पातीतो निरंजनः ॥ अनन्तज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेश-  
नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्योन्नवाविध्वंसी । योगिनांज्ञान-  
गोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥  
विश्वदृक्क्षव्यसंबन्धः । पवित्रोगुणसागरः ॥ प्रसन्नः  
परमा राध्यः । लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो  
जगत्स्वामी । इन्द्रबन्धः सुरर्चितः ॥ निष्प्रपञ्चोनि-  
रातङ्को । निः शेष क्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो  
लोकसंसेव्यो । लोकालोक विलोकनः ॥ लोकोत्तमो  
त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्ट-  
कसहस्राणि । येष्वन्तिपुनः पुनः ॥ ते निर्वाणपदंयां-  
ति । मुच्यतेनात्र संशयः ॥ ४१ ॥ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

॥ इति लघु जिनसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तोत्रम् ॥

॥ सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं । सहृदयं हृदयं  
गमदेशनं ॥ अजिनतोत्तम ऋक्तिसुरेश्वरं । नमत  
शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दर सद्गुण  
मन्दिरं । विमल केवल बोधविकस्वरं ॥ अतिसुवर्ण  
सुवर्ण समद्युतं । प्रवरबन्धुरलक्षणसंयुतं ॥ २ ॥

( युग्मं ) यदीयजक्ति र्जविनां जवे भवे । जवेदजी-  
 पार्थनिदानमद्भुतं ॥ सएव नन्दात्म समुद्भवो जिनः ।  
 समर्चनीयः खलुशीतलः प्रभुः ॥ ३ ॥ कर्माजित-  
 तान् जविनः सुशीतलान् । कुर्वन्मुदावाक् सुधया  
 दयापरः ॥ सदेव देवो जवतात्मदैव मे । सदिष्ट  
 सिद्ध्यै जिनराजशीतलः ॥ ४ ॥ अधिगतशि-  
 वगर्मा वीतमोहादिकर्मा । दृढरथ तनुजन्मा सर्वतः  
 साधुधर्मा ॥ त्रिदशमाहित मूर्तिः स्फूर्तिमत्पुण्यकी-  
 र्तिः । जयतु गतजवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः  
 ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिनः स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ६ ॥

## ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्र ॥

विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो । दलित  
 दुरतराशि विश्वविश्वा वदानः ॥ प्रकट महिमरम्यो  
 दुर्मतीनामगम्यो । जयतु जिनपतिः श्रीपार्श्व  
 चिन्तामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतीवल्ली मूल मुन्मू-  
 लयन्ती । पटमकृतपटाब्जे यस्यत्रह्नीवपद्मा ॥ अवि-  
 कृतमति कायोत्सर्गमुद्रान्वितोसौ । जगनिबहुमतो-  
 स्मान् पातुवामांगजन्मा ॥ २ ॥ अविचलमणिवि-  
 भ्रत सत्फलानां सहस्रं । बहुलविमलजास्व दक्षूपणो

झासिगात्रः ॥ गुरुतर वरभक्त्या सक्तचित्ताङ्गनाजां ।  
 जवतु शिवसम्रद्धये चाश्वसेनिर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥  
 कुपितकरिमृगेश व्यालदावानलाब्धः । प्रहरणग-  
 दगुह्यातंकशंकापहर्त्ता ॥ विकसितमुखपद्मः सत्पु-  
 रेसूरताख्ये । जयतु नृजगलक्ष्मीत्राजमानोजिनेन्द्रः  
 ॥ ४ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ७ ॥

## ॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ यस्य ज्ञानदयासिन्धो । दर्शनं श्रेयसे  
 ध्रुवं ॥ सश्रीमानपार्श्वतीर्थेशौ । निषेव्यः सततं सतां  
 ॥ १ ॥ वामासूनोर्यशः पुंजै । रगाधस्यानघागुणाः ।  
 स्मर्यते येन सस्मार्यो । जवेत् प्राचीनवर्द्धिषां ॥ २ ॥  
 विहाय विषयासक्तान् । संसारोक्त सुरासुरान् । से-  
 व्यता मद्दयोधीराः । पार्श्व देवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥  
 जिनाः सर्वार्थदानेन । येन कटपद्रुमाअपि ॥ जवे  
 दज्यर्चितोलोके । सश्रियेचाम्रतायच ॥ ४ ॥ संस्तु-  
 तो मधुरश्लोकैः । जैनलाजप्रदायकः ॥ कट्याणका-  
 रको जूयात् । श्रीमान्शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीसमस्यामयीशंखेश्वरपार्श्व-

जिन स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीविविधयमकयुक्त श्रीपा-  
श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ लक्ष्मीनिदानं गुरुकर्मदानं । सऋर्मदानं जगतेद-  
दानं ॥ यद्देशपार्श्वं शितपादपार्श्वं । नुवामि पार्श्वे ज-  
वजेदपार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेगनसोसूनसमप्रजावा । समप्रजा  
वाजवदीयमूर्तिः ॥ विजाती वामांप्रजव त्रिलोके । जव  
त्रि लोकेन समर्चनीय ॥ २ ॥ तवेशपत्यं कजमादरेण ।  
हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ताजवेदेकपदे पराया ।  
निर्वेशवन्सौख्यपरंपरायाः ॥ ३ ॥ निः शेषचूवर्षि  
तदानवारी । यन्मानसे त्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव  
गव्युत्तम दानवारी । प्रोच्चारि तोहामयशाः सदैवः  
॥ ४ ॥ देवाधि देवाधिहर स्त्वमेव । सुज्ञान  
सुज्ञानजि बुद्धरूपः ॥ सारांग सारांग वितीर्णचूयः ।  
कल्याण कल्याणकृदंगभाजां ॥ ५ ॥ यैरर्च्यसेत्वं  
वरवैद्यराज । मनोजिरामैः सुमनोजिरामै ॥  
कर्माजिधैरुश्रितचूघनास्ते । विसारिलोकेश विसारि  
लोके ॥ ६ ॥ इत्थं ते जनपुङ्गवस्य जगवन् प्रोहाम



धामान्वितं । पादाब्जं परभागत्रत्त्रिभुवन—  
स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं कर्मविपक्ष पक्षदल-  
ने जव्या जवंतु क्षमाः । कट्याणाश्रय मुक्तिमामु-  
मखिलं तीर्त्वा जवांजोनिधिं ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीविविधयमकयुक्तश्रीपार्श्वजिन-  
स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्व जिन स्तोत्र ॥

॥ शालिनीठन्दः ॥ गौरीग्रामे स्तंजने चारुतीर्थे ।  
जीरावट्यां पत्तने लोड्रवाख्ये ॥ वाणारस्यांचापि  
विख्यातकीर्ति । श्रीपार्श्वेशं नौमि शंखे श्वरस्थं ॥ १ ॥  
इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं । वामादेव्यानन्दनं देव  
वंद्यं ॥ स्वर्गेभूमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥  
भित्वाजेयं कर्मजालं विशालं । प्राप्यानन्तं ज्ञान-  
रत्नंचिरत्नं ॥ लब्धामंदानंद निर्व्वाणसौख्यं ॥ श्री-  
पा० ॥ ३ ॥ विश्वाधीशं विश्वलोके पवित्रं । पापागम्यं  
मोक्षलक्ष्मीकलत्रं ॥ अंभोजाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥  
श्रीपा० ॥ ४ ॥ वर्षे रम्येखंगदोर्नागचंद्र । संख्येमा-  
से माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर् दर्शनं यस्य तंच ॥  
श्रीपा० ॥ ५ ॥ \* ॥ ॥ \* इति श्रीशंखेश्वरपार्श्व-  
जिनस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ १० ॥

## ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ ❀ ॥ विशदसद्गुण राजि विराजितं । घनघ-  
ना घननाद विजाजितं ॥ जजत जक्तिजरेण रमे-  
श्वरं । जगति पार्श्वजिनेश मनेश्वरं ॥ १ ॥ विवि-  
धवर्ण विचूपितविग्रहाः । विहितधुर्दमदर्पकनिग्र-  
हाः ॥ वसुयुगार्कमिताः सुकृताकराः । जिनवराः प्रज-  
वन्तु शिवंकरा ॥ २ ॥ रुचिरवर्ण निवर्द्धमनिन्दितं ।  
मुमनसां प्रकैररजिवन्दिनं ॥ निखिलसाधुजनाः  
खलुनिर्मिदं । जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥  
सकलजव्य सरोजविकाशिका । कुमृतिसंत मसोच्च-  
यनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा । जवन्तु  
वाग्जिनलाज शुभार्थदा ॥ ४ ॥ ❀ ॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् सपूर्णम् ॥ ११ ॥ ❀ ॥

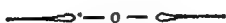


## ॥ ❀ ॥ अथ श्रीपरमात्मास्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ शिवं शुद्धं वृद्धं परं विश्वनाथं । नदेवं नवंधु-  
र्नकर्म नकर्ता ॥ नञ्जग नसंग नङ्घ्रा नकामं । चि-  
दानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥ १ ॥ नवंधो नमोद्धो  
नरागादिद्वोकं । नजोग नजोगं नव्याधिर्नशोक ॥

नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं । चिदा० ॥ १ ॥  
 नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षुर्नकर्णं  
 नवक्त्रं ननिद्रा ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा ।  
 चिदा० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिंता । न-  
 कुलृट् नभीतं नक्रष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नत्रत्यं नदे-  
 वो नमर्त्या ॥ चिदा० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्या-  
 पं । ऋषीकेश विष्णुश्चक्रमूर्तिजालं ॥ नपुण्यं नपापं  
 नअद्या नप्राणं । चिदा० ॥ ५ ॥ नवाढ्यं नवृद्धं  
 नविद्धि नमूढा । नछेद्यं नचेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥  
 नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा । चिदा० ॥ ६ ॥  
 नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं  
 नदृष्टो नज्ञव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं ।  
 चिदा० ॥ ७ ॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्त्ववेदी । न-  
 पूर्णा नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्योभिर्जिह्वा नपर-  
 मार्थमेकं । चिदा० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं  
 गुणनिधि श्वैतन्यरत्नाकरं । सर्वेभूतगतागते सुख-  
 दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥ त्रैलोक्याधिपति स्वयंस्व-  
 मनसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तंहरिवंशं हर्षहृद-  
 यं श्रीमान् भूदच्युतः ॥ ए ॥

॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं संपूर्णम् ॥ १२ ॥



॥ ❀ ॥ अथ नमस्कार स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं  
स्वर्गसोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन  
जिनेन्द्राणां । साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्ठतिचिरं पापं ।  
छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य ।  
संसारध्वांतनाशनं ॥ बोधनचित्तपद्मस्य । समस्तार्थ-  
प्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचन्द्रस्य । सद्ग-  
र्म्माभ्रतवर्षणं ॥ जन्मदाघविनाशाय । वृंहणंसुख-  
वारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेजक्ति जिनेजक्ति । जिनेजक्ति  
दिनेदिने ॥ सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु जवे  
जवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहित्राता । नहित्राता  
जगत्रये ॥ वीतरागसमोदेवो । न जूतो न जविष्य-  
ति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं नास्ति । त्वमेवशरणं  
मम ॥ तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षरक्षाजिनेश्वर  
॥ ७ ॥ वीतरागमुखंहृष्टा । पद्मरागसमप्रजं ॥  
नैकजन्म कृतं पापं । दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥  
अर्हंतो मंगलं नित्यं । सिद्धाजगतिमंगलं ॥ मंगलं—

साधवोमुख्यं । धर्मःसर्वत्रमंगलं ॥ ए ॥ लोकोत्त-  
माश्हारहतः । सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लोको त्तमो  
यतीशानां । धर्मोलोको त्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं  
सर्वदार्हतः । सिद्धाशरणमंगलां ॥ साधवः शरणं  
लोके । धर्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥

॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ १३ ॥



## ॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्यधारो । अरिक्रोध-  
ने मन्नथी दूरवारो ॥ संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं  
राग द्वेषथी दूर थाओ उठ्ठाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोह  
ना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न  
जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमोठो । जैन  
मार्गंढकी चूलां कां जमो ठो ॥ २ ॥ अलोत्री  
अमानी निरागी तजोठो । सलोत्री समानी सरागी  
जजो ठो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमोठो । नदी  
गंग मूकी गलीमां पमोछो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि  
चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुंरु आला ॥ के-

इ देव उत्संगे राखे ठे वामा । केइ देव साथे रमे वृं-  
 द रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेई जपमाला । केइ  
 मांसजकी महाविकराला ॥ केइ योगिणी जोगिणी  
 जोगरागे । केइ रुद्रणी छागनो होम मांगे ॥ ५ ॥  
 इसा देव देवी तणी आश राखे । तदा मुक्ति  
 नां सुःखने केम चाखे ॥ जदा लोचना थोकनो  
 पार नाव्यो । यदा मधनो विंदुओ मन्नजाव्यो  
 ॥ ६ ॥ जेइ देवला आपणी आश राखे । तेइ  
 पिरने मन्नशुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी जीर ते  
 केम जाजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे  
 ॥ ७ ॥ अरे मूढ ज्ञाता जजो मोक्ष दाता । अलो-  
 ची प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंता मणि  
 सारिखो एइ साचो । कलंकी काचना पिंडशुं मत  
 राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धि जेइ प्राणी कहे छे ।  
 सवि धर्म एकत्व चूलो जमे ठे ॥ कीहां सर्पवाने  
 कीहां मेरु धीरं । कीहां कायराने कीहां शूरवीरं  
 ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंजखरं । कीहां  
 कोइवानां कीहां खीरमं ॥ कीहां खीरसिंधु

कीहां क्षारनीरं । कीहां कामधेनु कीहां छागखीरं  
 ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कृन्वाणी । कीहां  
 रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकी ने कीहां  
 देवजोगी । कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी  
 ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारो ।  
 नमो वीरस्वामी जजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां  
 स्वप्नथी राज्यपामी । राचे मंदबुद्धि हरि जेह  
 स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न  
 माचे । जना मूढमां श्रेष्ठशुं इष्ट वाजे ॥ तजो  
 मोह माया हरो दंजरोशी । सजो पुण्य पोसी  
 जजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार  
 पामी । आव्या आश धारी प्रजु पाय स्वामी ॥  
 तुंहीं तुंहीं तुंहीं प्रजु पर्म रागी । भव फेरनो शृंख-  
 ला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानिये वीरजी अर्ज ठे  
 एक मोरी । दीजे दासकुंसेवना चरण तोरी ॥ पुण्य  
 उदय हुओ गुरु आज मेरो । विवेके लह्यो मे प्रजु  
 दर्श तेरो ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीमहावीरजिन ठंद संपूर्णम् ॥ १४ ॥

॥ ❀ ॥ अथ एवकारनो छंद ॥ ❀ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वंछित पूरे विविध परें । श्री जिन शासन  
सार ॥ निश्चे थीनवकार नित । जपतां जय जय  
कार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक फल । नव  
पद नवे निधान ॥ वीतराग श्रीमुख वदे । पंच  
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त ।  
समरथां संपत्ति थाय ॥ संचित सागर सातना ।  
पातक दूरपुलाय ॥ ३ ॥ संकल मंत्र शिर मुकुट  
मणि । सद्गुरु ज्ञापित सार ॥ सो भवियां मन  
शुद्धशुं । नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥

( छंद हाटकी )

नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य  
प्रमिद्ध । शमशान विषे शिव नाम कुमरनें सोवन  
पुरिसो सिद्ध ॥ नवलाखजपंता नरक निवारे  
पामें भवनो पार । सो जवियां जत्तें चोखें चित्तें  
नित जपिये नवकार ॥ ५ ॥ वांधी वरुशाखा  
ठींके वेसी हेठल कुड हुताश । तस्करनें मंत्र  
समर्प्यो आवर्के उढ्यो ते आकाश ॥ विधि रीते



जप्यां विषधर विष टाले ढाले श्रमृत धार ॥ सो० ॥  
 ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महावल व्यंतर  
 दुष्टविरोध । जेणे नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष  
 प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंतां थाये जिनवर इस्योठे  
 अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पट्टीपति शीख्यो मुनिव-  
 र पासें महा मंत्र मन शुद्ध । परजव ते राजसिंह  
 पृथिवीपति पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ८ ॥ मंत्रशकी  
 अमरापुर पोहतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥  
 ॥ ९ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि  
 परजाळे । दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग अधवलतो  
 ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्रजु-  
 वन अवतार ॥ सो० ॥ १० ॥ मनशुद्धें जपतां-  
 मयणासुन्दरी पामी प्रिय संयोग । इण ध्याने कुष्ठ  
 टढ्युं उंबरनुं रगत पित्तनो रोग ॥ निश्चेशुं जपतां  
 नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ ११ ॥  
 घटमांहिकृष्ण जुजंगम घादयोघरणी करवा घात ।  
 परमेष्ठि प्रजावें हारफूलनो वसुधा मांहि विख्यात ॥  
 कमलावतीयें पिंगल कीधो पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥  
 ॥ १२ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहिणी पामी

वाण प्रहार । पद पंच मुणंता पांडुपति घर ते थइ  
 कुंतानार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमां मंदिर अवहुः-  
 ख जजण द्वार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंवळ संवळे  
 कादव काढ्यां शकट पांचसे माल । दीधे नव-  
 कारें गया देवलोके विलसे अमर विमान ॥ ए  
 मंत्रयकी संपत्ति वसुधामां लही विलसे जैन  
 विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगे चौवीशी हुड अनं-  
 ती होसे वार अनंत । नवकार तणी केइ  
 आदन जाणे एम जाले अरिहंन ॥ पूरव दिशो  
 चारे आदि प्रपंचें समरथांसपत्तिसार ॥ सो० ॥  
 ॥ १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पण पामे जे कृत  
 कर्म कठोर । पुंरगिरी ऊपर प्रत्यक्ष पेरुयो  
 मणिधरनें एरुमोर ॥ सह गुरु सन्मुख विधियें स  
 मरतां सफल जन्म संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ मूली  
 कारोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहां  
 शेठें नवकार सुणाव्यो पाम्योश्चमरनी रुद्ध ॥ शेठने  
 घर आवी विघ्न निवारथो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥  
 ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि ज्ञानज पंचह पंचदान चारित्र ।  
 पंच निज्जाय महारुन पंचहु पंच नुनति सम-  
 कित्त ॥ पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पाखो पंचा-

घार ॥ सो० ॥ १७ ॥

॥ कलश ( ठप्पय ) ॥

नित्यजपिये नवकार सार संपति सुख दायक ।  
सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्रीजगनायक ॥  
श्रीअरिहंत सुसिद्ध शुद्ध आचार्य भणीजे । श्री-  
उवज्जाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजे ॥ नवकार  
सार संसारछे कुशल लाभवाचक कहे । एक  
चित्ते आराधतां विधि रुद्धि वंछित लहे  
॥ १७ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ इति श्रीएवकार नो ठंद संपूर्णम् ॥ ❀ ॥ १५ ॥

॥ ❀ ॥ पुनः एवकार छंद ॥ ❀ ॥

॥ सुख कारण जवियण समरुं श्री नवकार ।  
जिन शासन आगम चउदे पूरवसार ॥ इण मंत्रनी  
महिमा कहितां नलहुं पार । सुरतरु जिम चिंतित  
वांछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव  
सेव करे कर जोरु । जुझमंरुल विचरे तारे जवियण  
कोरु ॥ सुरठंदे विलसे अतिशय जास अनंत ।  
पहिले पद नमिये अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥  
जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत । पंचमि गति

पुहता अष्ट करम करिहंत ॥ कल अकल सरूपी-  
 पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं बीजेपद  
 वलि एह ॥ ३ ॥ गढ चार धुरंधर सुंदर ससिहर  
 सोम । करि सारणवारण गुणछतीसे थोम ॥ श्रुत  
 जाण शिरोमणि सागर जेम गंजीर । तीजे पद  
 नमिये आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुनधर गुण  
 आगम सूत्र जणावेसार । तप विध संयोगे जापे  
 अरथ विचार ॥ मुनिवर गुण युक्ता ते कहिये जव-  
 जाय । चौथे पद नमिये अह निश तेहना पाय  
 ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार । तपशी गुण  
 धारी वारी विषय विकार ॥ तप्त थावर पीहर  
 लोक मांहे जे साध । त्रिविधे ते प्रणमुं परमारथ  
 गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण कायण  
 जूत वेत्ताल । सवि पापपणासे धास्ये मंगल माल ॥  
 इण समरपां संकट दूरटले तत्काल । जंपे जिण  
 गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ इति णवकार छंद संपूर्णम् ॥ २६ ॥

॥ अथ श्रीणवकार मंत्र आत्मरक्षा ॥

॥ • ॥ ॐ परमेश्वरी नमस्कारं । सारं नव पदात्म

कं ॥ आत्मरक्षा करं वज्र । पंजराजं स्मराम्यहं  
 ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिरसि  
 स्थितं ॥ ॐ नमो सब सिद्धाणं । मुखे मुख पटंबरं  
 ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं । अंगरख्या तिशायिनी ॥  
 ॐ नमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ न  
 मोलोए सबसाहूणं । मोचके पादयो शुभे ॥ एतो पंच  
 नमुक्कारो । शिलावज्रमईतले ॥ ४ ॥ सव्व पाव प्पणा  
 सणो । वप्रो वज्र मयोवही ॥ मंगलाणंच सबेसिं । खादि  
 रंगार घातका ॥ ५ ॥ स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढमं हवइ  
 मंगलं ॥ वप्रो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥  
 महाप्रज्ञावा रक्षेयं । कुड्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्ठी  
 पदोद्धूता । कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते  
 रक्षां । परमेष्ठी पदै सदा ॥ तस्यनस्या झयं व्याधी ।  
 राधिश्चापि कदाचनः ॥ ८ ॥

॥ इति आत्मरक्षा स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ १७ ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिनवन्द ॥

॥ ॐ ॥ सेवो पाश शंखेसरो मन शुद्धे ।  
 नमो नाथ निश्चै करी एक बुद्धे ॥ देवी देवता  
 अन्यनें शुं नमो ठो । अहो जव्यलोको जुला कां

जमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक ना नाथ ने शुं तजो  
 छो । पढ्या पाशमां चूत ने कां जजोछो ॥ सुरज्जेनु  
 छंडी अजा शुं अजो छो । महा पंथ मूकी  
 कुपंथे ब्रजो ठो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी  
 काचमाटे । ग्रहे कोण रासजने हस्ति साटे ॥ सुर-  
 दुम उपासु कुण आक वावे । महा मूढ ते आकु-  
 ला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मे-  
 रुगंग । किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां वि-  
 श्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्ते प्रजु  
 पाश सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं ।  
 सह जीवने जे करे ठे सनाथं ॥ महा तत्व जाणी  
 सदा जेह ध्यावे । तेहनां दुःख दारिद्र्य दूरें गमावे  
 ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो छो ॥ कुशीलें  
 करी देहने कां दमो छो ॥ नहीं मुक्तिवासं विना  
 बीतरागं । जजो जगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥  
 उदयरत्न जाखे सदा हेत आणी । दयाभाव कीजे  
 मोहे दास जाणी ॥ मोरेआज मोतीयके मेह वृथा ।  
 प्रजु पाश शंखेश्वरो आपतृवा ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीशंखेश्वर पार्श्वजिन उद संपूर्णम् ॥ १७ ॥

## ॥ अथ श्रीगौतमाष्टक वंद ॥

॥ बीर जिणेंसर केरो शीश । गौतम नाम जपो  
 निशदीश ॥ जोकीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर वि-  
 लशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरिवर चढे ।  
 मनवंछित लीला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग ।  
 गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ  
 वंकडा । तस नामें नावे ढूकडा ॥ झूत प्रेत नवि-  
 मंरे प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम  
 नामें निर्मल काय । गौतम नामें बाधे आय ॥ गौतम  
 जिनशाशन शणगार । गौतम नामें जय जयकार  
 ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोळ । मनवंछित  
 कापरु तंबोल ॥ घरेसुघरणी निर्मल चित्त । गौतम  
 नामें पुत्र विनीत्त ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल  
 जाण । गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटा मं-  
 दिर मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥  
 घर मयगल घोडानी जोरु । वारु विलशे वंछित कोरु ॥  
 महीयल मानें मोहोटाराय । जो तूठे गौतमना पाय  
 ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी  
 संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान । गौतम

नामैं बाधे वान ॥ ७ ॥ पुण्यवंत अवधारो सह ।  
गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय  
कर जोड । गौतम तूठे संपत्ति कोरु ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीगौतमाष्टक ठंड संपूर्णम् ॥ १९ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी । सफल म-  
नोरथ कीजिये ए ॥ प्रभातें जठी मंगलिक कामें ।  
शोल सतीनां नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बाल कुमा-  
री जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी बेहेनकी ए ॥  
घट घट व्यापक अक्षर रूपें । शोल सतीमांदि  
जे बडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय शिरो-  
मणि । सुंदरी नामें रिपभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी  
त्रिजुवन मांहे । जेह अनोपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥  
चंदनवाला बाळपणार्थी । शीयलवती शुद्ध आवि  
का ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रतिलाज्या ।  
केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ  
धारिणी नदनी । राजिमती नेम बल्लजा ए ॥ जोव  
न वेशें कामनें जीत्यो । संजम लेइ देव दुल्लभा ए  
॥ ५ ॥ पंच भर तारी पांरुव नारी । डुपद तनया



चखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां । शीयल  
 महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशथ नृपनी-  
 नारी निरुपम । कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल  
 सद्गुणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालि का ए  
 ॥ ७ ॥ कौशंधिक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे  
 रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी सृगावती सती ।  
 सुरक्षुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची  
 शीयलें न काची । राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुख-  
 डुं जोतां पाप पुढाए । नाम लेतां मन उद्धसे ए  
 ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । जनकसुता  
 सीता सती ए ॥ जग सहु जाणे धीज करंता ।  
 अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे  
 तांतणे चालणी बांधी । कुवाथकी जलकाढीयुं ए ॥  
 कलंक उतारवा सतीय सुनद्रा । चंपा बार उधा-  
 कीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंडित ।  
 शिवा शिवपद गामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल  
 अश्यें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्ति-  
 नागपुरे पांडुगयनी । कुंतानामें कामिनी ए ॥ पांडव  
 माता दशे दशारनी । बहेन पतिव्रता पद्मनी ए  
 ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रि-

विधे नेहने वंदीये ए ॥ नाम जपतां पातिक जाए ।  
 दरिशाण दुरित निकंटिये ए ॥ १४ ॥ निपधा  
 नगरी नलइनरिंदनी । दमदंती तल गंहिनी ए ॥  
 संकट पडतां शीयलज राखुं । त्रिभुवन कीर्ति  
 जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीताजग जन पूजित ।  
 पुष्पचूला नें प्रजावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित  
 दाता । शोलमीसती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें  
 जाखो शाखें साखी । उदयरतन भाखें मुदा ए ॥  
 बाहाणुं वातां जे नर जणशे । ते लेशे सुख संवदा  
 ए ॥ १७ ॥

॥ इति श्री शोलमतीनो ठंद संपूर्णम् ॥ २० ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥

॥ ॐ ॥ शेत्रुजय कृपन् समोसरया । जला गुण  
 भर्यारे ॥ सीधा माधु अनंत । तीर्थ ते नमुं ॥  
 तीन कट्याणक निहां यया । मुगनें गयारे ॥ ने  
 मीसर गिरनार ॥ नी० ॥ १ ॥ अष्टापद एरु देहरो ।  
 गिरि सेहरो ॥ जगत्तें जगव्या त्रिव ॥ नी० ॥ आचू  
 चामुप अतिनखो । त्रिभुवन निखोरे ॥ विमल वमड  
 वस्तुषाख ॥ नी० ॥ २ ॥ समेत शिखर सोढामणो ।

रखीयामणोरे ॥ सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥  
 नयरी चंपा निरखीये । ह्रीये हरखीयेंरे ॥ सीधा  
 श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी ।  
 रुद्धें जरीरे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशल-  
 मेर जुहारीयें । दुःखवारीयेंरे ॥ अरिहंत बिंब  
 अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बीकानेरज वंदीयें । चिर-  
 नंदीयेंरे ॥ अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो  
 शंखेश्वरो । पंचासरोरे ॥ फलोधी थंभणपाश ॥ ती०  
 ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीऊरोरे ॥ जीरावलो  
 जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा  
 करोरे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीना-  
 मोलाई जादवो । गोमी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश  
 ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा । बावन जलारे ॥ रुचक  
 कुंडले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्व-  
 ती । प्रतिमा ठत्तीरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥  
 तीरथ जात्रा फल तिहां ॥ होजो मुज इहांरे ॥  
 समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीतीर्थमाला स्तवन संपूर्णम् ॥ २१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वृक्षशांति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो जो जव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्व-  
मेतत् । ये यात्रायां त्रिचुवनगुरोराहतां जक्तिजाजः ॥  
तेषां शान्तिर्जवतु भवतामर्हदादिप्रजावा । दारोग्य  
श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ जोजो-  
जव्यलोकाइहहि जरतै रावत विदेहसंभवानां ।  
समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । अव-  
धिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचाख-  
नानन्तरं । सकलसुरासुरेजैः सह समागत्य सविन-  
यमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । वि-  
हितजन्माजिषेकः । शान्तिमुद्घोषयति । ततोहं  
कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतन्स पन्थाः ।  
इति जव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रं-  
विधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रा स्ना-  
त्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा कर्णं दत्वा  
निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं १ । प्रीयन्तां २ ।  
जगवंतोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः । स्त्रैलोक्य-  
नाथा । स्त्रैलोक्यमहिता । स्त्रैलोक्यपूज्या । स्त्रैलो-  
क्येश्वरा । स्त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी

॥ १ ॥ निर्वाणी ॥ २ ॥ सागर ॥ ३ ॥ महायश ॥ ४ ॥  
विमल ॥ ५ ॥ सर्वानुभूतिः ॥ ६ ॥ श्रीधर ॥ ७ ॥ दत्तः  
॥ ८ ॥ दामोदरः ॥ ए ॥ सुतेजा ॥ १० ॥ स्वामी ॥ ११ ॥  
सुनिसुव्रतः ॥ १२ ॥ सुमतिः ॥ १३ ॥ शिवगतिः ॥ १४ ॥  
अस्तागः ॥ १५ ॥ ननीश्वरः ॥ १६ ॥ अनिलः ॥ १७ ॥  
यशोधरः ॥ १८ ॥ कृतार्थः ॥ १९ ॥ जिनेश्वरः ॥ २० ॥  
शुद्धमतिः ॥ २१ ॥ शिवकरः ॥ २२ ॥ स्यन्दन  
॥ २३ ॥ संप्रतिः ॥ २४ ॥ ॐ ॥ एते अतीतचतुर्विं  
शतितीर्थ कराः ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीऋषभः ॥ १ ॥  
अजितः ॥ २ ॥ संजवः ॥ ३ ॥ अभिनन्दनः  
॥ ४ ॥ सुमतिः ॥ ५ ॥ पद्मप्रभः ॥ ६ ॥ सुपार्श्वः  
॥ ७ ॥ चंद्रप्रभः ॥ ८ ॥ सुविधिः ॥ ए ॥ शीतलः  
॥ १० ॥ श्रेयांसः ॥ ११ ॥ वासुपूज्यः ॥ १२ ॥  
विमलः ॥ १३ ॥ अनन्तः ॥ १४ ॥ धर्मः ॥ १५ ॥  
शान्तिः ॥ १६ ॥ कुंयुः ॥ १७ ॥ अरः ॥ १८ ॥ मद्धिः  
॥ १९ ॥ सुनिसुव्रतः ॥ २० ॥ नमिः ॥ २१ ॥ नेमिः  
॥ २२ ॥ पार्श्वः ॥ २३ ॥ वर्द्धमानः ॥ २४ ॥ प्रमुखावर्तमा-  
नजिनाः ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीपद्मनाभः ॥ १ ॥ सूरदेवः  
॥ २ ॥ सुपार्श्वः ॥ ३ ॥ स्वयंप्रभः ॥ ४ ॥ सर्वानुभूतिः

॥ ५ ॥ देवश्रुतः ॥ ६ ॥ उदयः ॥ ७ ॥ पेढालः ॥ ८ ॥  
 पोष्टिलः ॥ ९ ॥ शतकीर्त्तिः ॥ १० ॥ सुव्रतः ॥ ११ ॥  
 अममः ॥ १२ ॥ निष्कयायः ॥ १३ ॥ निष्पुलाकः ॥ १४ ॥  
 निर्ममः ॥ १५ ॥ चित्रगुप्तिः ॥ १६ ॥ समाधिः ॥ १७ ॥  
 संवरः ॥ १८ ॥ यशोधरः ॥ १९ ॥ विजयः ॥ २० ॥  
 मद्धिः ॥ २१ ॥ देवः ॥ २२ ॥ अनन्तवीर्यः ॥ २३ ॥  
 नडंकरः ॥ २४ ॥ \* ॥ एते जावितीर्थंकराजिनाः ॥

॥ शान्ताः शान्तिकराः जवंतु मुनयो मुनिप्रव  
 रा । रिपुविजयदुर्जिह्वकान्तरेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु  
 वो नित्यं ॥ ॐ ॥ ॐ श्री नाजिः ॥ १ ॥ जिनशत्रुः  
 ॥ २ ॥ जितारिः ॥ ३ ॥ संवरः ॥ ४ ॥ मेघः ॥ ५ ॥  
 धरः ॥ ६ ॥ प्रतिष्ठः ॥ ७ ॥ महसेननरेश्वरः ॥ ८ ॥  
 सुग्रीवः ॥ ९ ॥ दृढरथः ॥ १० ॥ विष्णुः ॥ ११ ॥  
 वसुपूज्यः ॥ १२ ॥ कृतवर्मः ॥ १३ ॥ मिहसेनः ॥ १४ ॥  
 जानुः ॥ १५ ॥ विश्वसेनः ॥ १६ ॥ गूरुः ॥ १७ ॥  
 सुदर्शनः ॥ १८ ॥ कुंजः ॥ १९ ॥ सुमित्रः ॥ २० ॥  
 विजयः ॥ २१ ॥ समुद्रविजयः ॥ २२ ॥ अश्वसेनः ॥ २३ ॥  
 सिद्धार्थः ॥ २४ ॥ ॐ ॥ वर्तमान चतुर्विंशतिजिन-

जनकाः ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा ॥ १ ॥ विजया ॥ २ ॥  
 सेना ॥ ३ ॥ सिद्धार्था ॥ ४ ॥ सुमंगला ॥ ५ ॥  
 सुसीमा ॥ ६ ॥ पृथिवीमाता ॥ ७ ॥ लक्ष्मणा  
 ॥ ८ ॥ रामा ॥ ९ ॥ नन्दा ॥ १० ॥ विष्णु ॥ ११ ॥  
 जया ॥ १२ ॥ स्यामा ॥ १३ ॥ सुयशा ॥ १४ ॥  
 सुवृता ॥ १५ ॥ अचिरा ॥ १६ ॥ श्रीः ॥ १७ ॥  
 देवी ॥ १८ ॥ प्रजावती ॥ १९ ॥ पद्मा ॥ २० ॥  
 वप्रा ॥ २१ ॥ शिवा ॥ २२ ॥ वामा ॥ २३ ॥ त्रिशला  
 ॥ २४ ॥ ॐ ॥ वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥ ॐ ॥ ॐ श्री  
 गोमुखः ॥ १ ॥ महायक्षः ॥ २ ॥ त्रिमुखः ॥ ३ ॥  
 यक्षनायकः ॥ ४ ॥ तुम्बरुः ॥ ५ ॥ कुसुमः ॥ ६ ॥  
 मातंगः ॥ ७ ॥ विजयः ॥ ८ ॥ अजितः ॥ ९ ॥  
 ब्रह्माः ॥ १० ॥ यक्षराजः ॥ ११ ॥ कुमारः ॥ १२ ॥  
 षण्मुखः ॥ १३ ॥ पातालः ॥ १४ ॥ किन्नरः ॥ १५ ॥  
 गरुडः ॥ १६ ॥ गन्धर्वः ॥ १७ ॥ यक्षराजः ॥ १८ ॥  
 कुबेरः ॥ १९ ॥ वरुणः ॥ २० ॥ ऋकुटिः ॥ २१ ॥  
 गोमेधः ॥ २२ ॥ पार्श्वः ॥ २३ ॥ ब्रह्मशांतिः ॥ २४ ॥  
 ॥ ॐ ॥ वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥ ॐ ॥ ॐ चक्रेश्वरी  
 ॥ १ ॥ अजितबाला ॥ २ ॥ डुरितारि ॥ ३ ॥  
 काली ॥ ४ ॥ महाकाली ॥ ५ ॥ श्यामा ॥ ६ ॥

शांता ॥ ७ ॥ जृगुटी ॥ ८ ॥ सुतारका ॥ ए ॥  
 अशोका ॥ १० ॥ मानवी ॥ ११ ॥ चंडा ॥ १२ ॥  
 विदिता ॥ १३ ॥ अंकुशा ॥ १४ ॥ कंटर्पा ॥ १५ ॥  
 निर्वाणी ॥ १६ ॥ वला ॥ १७ ॥ धारणी ॥ १८ ॥  
 धरणप्रिया ॥ १९ ॥ नरदत्ता ॥ २० ॥ गांधारी ॥  
 २१ ॥ अंबिका ॥ २२ ॥ पद्मावती ॥ २३ ॥ सिद्धा-  
 यिका ॥ २४ ॥ ॐ ॥ वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थ-  
 करशाशनदेव्यः ॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं श्रीधृति कीर्ति कांति  
 बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु ।  
 सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी  
 ॥ १ ॥ प्रज्ञप्ती ॥ २ ॥ वज्रशृङ्खला ॥ ३ ॥ वज्रां-  
 कुशा ॥ ४ ॥ चक्रेश्वरी ॥ ५ ॥ पुरुषदत्ता ॥ ६ ॥  
 काली ॥ ७ ॥ महाकाली ॥ ८ ॥ गौरी ॥ ए ॥  
 गांधारी ॥ १० ॥ सर्वास्त्रमहाज्वाला ॥ ११ ॥ मान-  
 वी ॥ १२ ॥ वैरोध्या ॥ १३ ॥ अत्रुता ॥ १४ ॥  
 मानसी ॥ १५ ॥ महामानसी ॥ १६ ॥ एताः षोड-  
 शविद्यादेव्यो रक्षन्तुमे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्या-  
 याप्रज्ञातिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु ।  
 ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्वंघ्र सूर्या  
 भारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्वर राहु केतु सहि-



ताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवा—  
 दित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्र-  
 देवतादय स्ते सर्वे प्रीयंतां २ अक्षीणकोस कोष्ठा  
 गारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र त्रातृ  
 कलत्र सुहृत स्वजनसंबन्धि बंधुवर्गसहिताः नित्यं-  
 चामोदप्रमोदकारिणो ज्वंतु । अस्मिंश्च चूमंडले  
 आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्रावि-  
 काणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशम-  
 नाय शान्तिर्जवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि रुद्धि वृद्धि माङ्गव्यो-  
 त्सवाः ज्वंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि  
 शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा ज्वंतु स्वाहा ॥ श्रीमते  
 शान्तिनाथाय । नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्य-  
 स्यामराधीश । मुकुटाञ्ज्यर्चितां व्रजे ॥ १ ॥ शान्तिः  
 शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥  
 शान्तिरेव सदातेषां । येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥  
 ॐ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट गृहगति दुः स्वप्नदुर्निमित्ता-  
 दि संपादितहितसंपत् नामग्रहणं जयतु शान्तेः  
 ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराजसंनिवेशानां ।  
 गोष्ठीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेद्वांति ॥ ४ ॥  
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्जवतु । श्रीपौर लोकस्य

शांतिर्भवतु । श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु । श्रीराजा  
 धिपानां शांतिर्भवतु । श्रीराजसनिवेशानां शांति  
 र्भवतु । श्रीगोष्टिकानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा १  
 ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शांतिः  
 प्रतिष्ठा यात्रास्त्रात्रावसानेषु । शांतिकलशं गृहीत्वा ।  
 कुकुमचंदनकर्पूरागुरुधूपवासकुमुमांजलिसमेतः ।  
 स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचि वस्त्रश्रंदना  
 चरणांलंकृतः । चंदनतिलकं विधाय पुष्पमाला कंठे  
 कृत्वा । शांतिमुद्घोषयित्वा । शांतिपानीयं मस्तके—  
 दातव्यमिति । नृत्यतिनृत्यं मणिपुष्पवर्षं । सृजंतिगा  
 यंतिचमंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् ।  
 कृद्व्याणन्नाजोहि जिनाजिपेठे ॥ १ ॥ अहं तित्थ—  
 यरमाया शिवादेवी । तुह्य नयरनिवासिनी ॥ अह्य  
 शिवं तुम्ह शिवं । असुहो वसमं शिवं जवतु स्वाहा  
 ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परहितनिरताभवंतु  
 जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी जवंतु  
 लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः कृत्यं यांति । विद्यंते विघ्नव-  
 ह्नयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥  
 ॥ ६ ॥ इति श्रीबृहत्शान्तिः संपूर्णम् ॥ ७ ॥ २२ ॥

## ॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥

॥ ॐ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोरु । जिनवरनामें  
मंगल कोरु ॥ पहेंलें स्वर्गे लाख वत्तीश । जिनवर  
चैत्य नमुनिशदीश ॥ १ ॥ बीजेलाख अष्टावीश  
कह्या । त्रीजे वारलाख सर्दह्या ॥ चोथे स्वर्गे अरु  
लख धार । पांचमे वंदू लाखज चार ॥ २ ॥ ठठें  
स्वर्गे सहस पचास । सातमें चाळीस सहस प्र-  
साद ॥ आठमें स्वर्गे ठ हज्जार । नव दशमें वंदूं  
शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार वारमें त्रणशे सार । नव-  
ग्रैवेयकें त्रणशें अठार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली ।  
लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सताणुं  
त्रेवीस सार । जिनवर जुवन तणो अधिकार ॥  
लांबा शो जोजन विरतार । पचास जंचा बोहोत्तर  
धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी बिंब परिमाण । सभा-  
सहित एक चैत्ये जाण । शो कोरु बावन कोरु  
संजाल । लाख चौराणुं सहस चौआल ॥ ६ ॥  
सातशे ऊपर साठ विशाल । सवी बिंब प्रणमुं त्रण  
काल ॥ सात कोरुने बोहोत्तर लाख । जुवनपती-  
मां देवल जाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण ।

एक एक चैत्यें संख्या जाण ॥ तेरशे कोड नि-  
 व्यासी कोड । साठ लाख वंदूं करजोरु ॥ ७ ॥ व-  
 त्रीशेनें थोगणसाठ । तिर्ठांलोकमां चैत्यनो पाठ ॥  
 त्रण लाख एकाणुं हज्जार । त्रणशे वीश ते विंव  
 जुहार ॥ ८ ॥ व्यंतर योतिपीमां वली जेह । शा-  
 श्वता जिनवर वंदूं तेह ॥ रिखज चड्याननवारिखे-  
 ण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत शि-  
 खर वंदूं जितवीश । अष्टापद वंदूं चौवीश ॥ वि-  
 मलाचल नें गढ गिरनार । आवूउपर जिनवर जु-  
 हार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारगे श्री-  
 अजित जुहार ॥ अंतरीक वरकाणो पाश । जीरा-  
 वलोनें थंभण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण  
 जेह । जिनवर चैत्य नमु गुण गेह ॥ विहरमान  
 वंदूं जिन वीश । सिद्ध अनंत नमु निशिटीश  
 ॥ १३ ॥ अढी छीपमां जे थणगार । अढार सह-  
 स शीलांगना धार । पंच महाव्रत सुमती सार ।  
 पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अर्पितर तप  
 उजमाल । ते मुनि वंदूं गुणमाणि माल ॥ नित नित  
 जठी कीर्ति करूं । जीव कहें जव सायर तरूं ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीसकल तीर्थ वंदना संपूर्णम् ॥ २३ ॥

# ॥ ❀ ॥ णवकार स्तवन ॥ ❀ ॥

—:0:—

श्री नवकार जपो मन रंगे । श्रीजिन शाशन  
साररी माई ॥ सर्व मंगल मांहे पहिलो मंगल । ज-  
पतां जयजय काररी माई ॥ श्री० ॥ १ ॥ पहिले पद  
त्रिभुवन जन पूजित । प्रणमुं श्री अरिहंतरी मा-  
ई ॥ अष्टकर्म बरजत बीजेपद । ध्यावुं सिद्ध अनं-  
तरी माई ॥ श्री० ॥ २ ॥ आचारिज तीजै पद स-  
मरुं । गुण छत्तीस निधानरी माई ॥ चौथे पद उव-  
जाय जपीजे । सूत्र सिद्धांत सुजाणरी माई ॥ श्री० ॥  
॥ ३ ॥ सर्वसाधु पंचम पद प्रणमुं । पंच महा व्रत  
धाररी माई ॥ नवपद अष्ट इहां ठे संपद । अरुसठ  
वरण संचाररी माई ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सातइहां  
गुरु अक्षर एहना । एकअक्षर उच्चाररी माई ॥  
सात सागर ना पातिक जावे । पद पंचास विचाररी  
माई ॥ श्री० ॥ ५ ॥ संपूरण पणसे सागरना । पाप  
पूलाये दूररी माई ॥ इह जव खेमकुशल मनवंठित ।  
पर भव सुख जरपूररी माई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ईरति  
सोवन पुरिसो सीधो । शिवकुमार इणध्यानरी मा-  
ई ॥ सर्पफीटि हुई फूल माला । श्रीमतिने परधानरी

माई ॥ श्री० ॥ ७ ॥ जह्नु उपद्रव करतो निवारथो ।  
 परचो एह परसिद्धरी माई ॥ चोरचण्ड पिंगल ने  
 हुंरुक । पामे सुर नर रिद्धरी माई ॥ श्री० ॥ ८ ॥  
 पंच परमेष्ठी मंत्र जगज्जन्तम । चवदे पूरवसाररी  
 माई ॥ गुण बोले श्रीपदमराज गुरु । महिमा जा-  
 सु अपाररी माई ॥ श्री० ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीणवकार स्तवन संपूर्णम् ॥ १४ ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामी अष्टक ॥

प्रह् उठी गौतम प्रणमोजे । मन वंछित फल  
 नो दातार ॥ लब्धि निधान सकल गुणसागर । श्री  
 वर्द्धमान प्रथम गण धार ॥ प्रह् ॥ १ ॥ गौतम  
 गोत्र चवद विद्यानिधि । प्रथवी मात पिता वसु  
 जूति ॥ जिनवर चांणि सुणी मनहरख्यो । बोलायो  
 नामे इन्द्रजूति ॥ प्र० ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत लेई  
 प्रजुपासे । वैजिनवर त्रिपदी मनरंग ॥ श्रीगौतम  
 गणधर तिहां गृथ्या । पूरव चवद पुत्रादश अंग  
 ॥ प्र० ॥ ३ ॥ लघधई अष्टापदगिरचढीयो । चैत्य-  
 वंदन जिनवर चौबीश ॥ पनरैसे तिमोतरतापस ।  
 प्रतीबोधी कीधा निजसीस ॥ प्र० ॥ ४ ॥ अद्भुत

एह सुगुरुनो अतिशय । जसु दीखे तसु केवलज्ञान ॥  
जावजीव ठठ २ तपपारणे । आपणपै गोचरीये म-  
ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कामधेनु सुतरु चिंतामणी ।  
नाम मांहिजसु करेरे निवास ॥ ते सद् गुरुनो  
नाम जपंता । लाजे लखमी लील विलास ॥ प्र० ॥  
॥ ६ ॥ लाज घणो विणजे व्यापारे । आवे प्रह्वण  
कुशले खेम ॥ ते सदगुरुनो ध्यान धरंता । पामे पुत्र  
कलत्र बहुप्रेम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ गौतमस्वामि तणा  
गुणगातां । अष्ट महा सिद्ध नवरे निधान ॥ समय  
सुंदर कहे सुगुरु प्रसादे । पुन्य उदय प्रगट्यौ प-  
रधान ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीगौतमाष्टक छंद संपूर्णम् ॥ २५ ॥

**अथ श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथ स्तवन**

आणी मनसूधी आसता । देव जुहारुं सासता ॥  
पार्श्वनाथ मनवंठित पूर । चिंतामण मोरी चिंता  
चूर ॥ १ ॥ अणियाली तोरी आंखनी । जाणे कमल  
तणी पांखनी ॥ मुख दीठा दुख जावे दूर ॥ चिंता ॥  
॥ २ ॥ को केहने को कहेने नमें । म्हारे मनमे तूहिं  
जगमे ॥ सदा जुहारुं जगे सूर ॥ चिंता ॥ ३ ॥ वी-

छडिया वाले सर मेल । वैरी दुसमण पाछा ठेल ॥  
 तूछे ह्वारे हाजरा हजूर ॥ चिंताण ॥ ४ ॥ मुज मन  
 लागी तुमसूं प्रीत । बीजो कोयनआवे चित्त ॥ करो  
 मुज तेज प्रताप पंडूर ॥ चिंताण ॥ ५ ॥ येह स्तोत्र मनमें  
 धरे । तेहना चिंत्या कारज सरे ॥ आधि व्याधि  
 दुखजावे दूर ॥ चिंताण ॥ ६ ॥ जव भव देजो तुम  
 पाय सेव । श्रीचिंतामणि अरिहंत देव ॥ समय सुंदर  
 कहे सुख जरपूर ॥ चिंताण ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणी पार्श्व नाथ स्तवन—

संपूर्णम् ॥ २६ ॥

॥ अथ श्री मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ जूपति शोहे क्षत्रियकुण्डें, तस घेर  
 त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी,  
 चण्ड सुपन लहे जामिनीए ॥ त्रुटक ॥  
 जामिनी मध्ये शोभतारें, सुपन देखे बाल ॥ मयगल  
 रूपजने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर  
 ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्मसर जलनिधि  
 उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंवार ज-  
 ज्वल, बन्दि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी



महा, करत जग उद्योत ॥ चउद सुपन सूचित वि-  
 श्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलुं बो-  
 ली एए, श्रीवीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां  
 नयरी राजग्रही, श्रेणिक नामें नरेसरू ए ॥ धनवर  
 गोवर गाम वसे तिहां, वसुजुति विप्र मनोहरू ए ॥  
**॥ त्रुटक ॥** मनोहरू तस मानिनि, पृथिवि नामे नार ॥  
 इंद्र जूति आदेश छे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञ-  
 कर्म तेणें आदरचुं, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें  
 समे तिहां समो सरथा, चौबीसमां जिनराय ॥ उ-  
 पदेश तेहनो सांभली, लीधो संजमचार ॥ अगीयार  
 गणधर थापीया, श्रीवीरें तेणी वार ॥ इन्द्रजुति गुरु  
 जगते थयो, महा लब्धिनो जंकार ॥ मंगल बीजुं  
 बोलीये, श्रीगौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिं  
 दनो पाकली पुरवरें, सकलाळ नामें मंत्री सरूए ॥  
 लाठलदे तसनारी अनूपम, शीयलवती बहु सुख  
 करू ए ॥ **त्रुटक ॥** सुख करू संतान नव दोय,  
 पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवन्तमां शिरोमणी, शू-  
 लिजद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर,  
 वस्या वर्षजवार ॥ जोग जली पेरे जोगव्या, ते

जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषयवामी,  
 पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासे रह्यो निश्चल,  
 मग्यो नहीं लवलेख ॥ शद्ध शीयल पाळे विषय टाळे,  
 जगमां जे नर नार ॥ मंगल त्रीजुं वोलीए, श्री यू-  
 लिज्जद आणगार ॥ ३ ॥ हेम मणि रूप मय धर्मित  
 अनुपम, जडित कोशीसां ते जें ऊगेए ॥ सुरपति  
 निर्मित त्रण गढ शोजित, मध्य सिंहासन ऊगम-  
 गेए ॥ **चुटक** ॥ ऊगमगे जिन सिंहासनेए,  
 वाजिन्न कोमा कोरु ॥ चार निकायना देवता, ते  
 सेवे वेहुकर जोरु ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चो-  
 त्रीश अतिशय वंत ॥ समवसरणे विश्वनायक,  
 शोजे श्रीजगवन्त ॥ सुरनर किन्नर मानवी, वेठी  
 ते पर्पदा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्म ना  
 चार प्रकार ॥ दान शीयल तप जावना रे, टाळे  
 सघला कर्म ॥ मंगल चौथुं वोलीयें, जगमांहे  
 श्रीजिनधर्म ॥ ए चार मंगल गावशे जे, प्रजातें  
 धरी प्रेम ॥ ते कोनि मंगल पामशे, उदय रह  
 भाळे एम ॥ ४ ॥

॥ इति श्री मंगलचार संपूर्णम् ॥ २७ ॥

# ॥ अथ श्री भीड चंजन पार्श्वना- थ छंद ॥

॥ ❀ ॥ जूलणा छंद प्रजाती ॥ ❀ ॥

भीरुचंजन प्रभु भीरुचंजन सदा, नहिं कदा  
निष्फल थाय सेवा ॥ चविजन जावशुं चजन भां-  
ही चजे, परम पद संपदा तखत लेवा ॥ १ ॥ का-  
शी बणारसी जिन पद पुरे जयो, वामा अश्वसेन  
सुत विश्व दीवो ॥ सेहीवेत्रक तटे खेटकपुर तपे,  
कटपनी कोरु कृपाल जीवो ॥२॥ जीडचवभित्तीचय-  
जावट्ट चंजणो, चक्ति जनरंजणो चावें नेढ्यो ॥ आज  
जिनराज मुज काज सिद्धां सवे, मोह राजाननो मान  
मेढ्यो ॥ ३ ॥ कोटिमन कामना मुजस बहु ठाम-  
ना, शिव सुख धामना आज साध्यां ॥ मंगल मा-  
लिका आज दीपालि का, मुज मन मंदिरें मोज  
वाध्यां ॥ ४ ॥ पाठ केँ ठाठ में काति वद आठ में,  
सतर अढ्योत्तरेँ पास गायो ॥ उदय निज दासनो  
एह अरदास सुणि, हितधरी नाथजी हाथ सायो ॥५॥

॥ इति श्री भीरु चंजन पार्श्वनाथ छंद-  
संपूर्णम् ॥ २८ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतम गुरु-

प्रज्ञात ठंद ॥ ❀ ॥

जयो जयो गौतम गणधार, मोटी लब्धितणों  
 जंदार ॥ समरे वंठित सुख दातार, जयो जयो गौ-  
 तम गणधार ॥ १ ॥ वीरवजीर बम्भो अणगार, चौ-  
 दहजार मुनि सिरदार ॥ जपतां नाम होय जयकार ॥  
 जयो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कलत्र  
 सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोमि विस्तार  
 ॥ जयो० ॥ ३ ॥ घरे घोना पायक नहिं पार, सुखासन  
 पालखी उदार ॥ बैरी विकट थाये विसराल ॥ जयो०  
 ॥ ४ ॥ ग्रह उठी जपिये गणधार, ऋद्धि सिद्धि  
 कमला दातार ॥ रूप रेख मयण अवतार ॥ जयो०  
 ॥ ५ ॥ कवि रूपचन्द गुरु केरो शिष्य, गौतम गुरु  
 प्रणमो निशादिश ॥ कहे गुणचन्द एसमता गार-  
 ॥ जयो० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री गौतम प्रज्ञात ठंद सम्पूर्णम् ॥ २९ ॥

॥ अथ श्री पार्श्व नाथ ठंद ॥

॥ चौपाइ ॥

॥ सकल सार सुर तरु जगजाणं, जसु जस

वास जगत परिमाणं ॥ सकल देव शिर  
मुगुट सुचंगं, नमो नमो जिनपति मन रंगं ॥ १ ॥

॥ पारुधी च्छंद ॥

जो जन मन रंगं, अकल अजंगं, तेज तुरंगं नीलंगं  
॥ सवि शोभा संगं, दग्ध अनंगं, शीश जुजंगं  
चतुरंगं ॥ बहुपुण्य प्रसंगं, नित्य उठरंगं, नव नव  
रंगं नारंगं ॥ कीरति जल गंगं, देश डुरंगं,  
सुरपति संगं सारंगं ॥ १ ॥ सारंगा वक्रं, पुण्य  
पवित्रं, रुचिर चरित्रं जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्रं,  
पंकज पत्रं, निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥ जग जीवनमित्रं,  
तरु सत सत्रं, मित्रा मित्रं मावित्रं ॥ विश्वत्रय  
चित्रं, चामर ठत्रं, शीश धरित्रं पावित्रं ॥ २ ॥ पावित्रा  
चरणं, त्रिजुवन शरणं, मुगुटा चरणं आचरणं ॥  
सुर अर्चित चरणं, शिव सुख करणं, दारिद्र्य हरणं  
आवरणं ॥ सुख संपत्ति भरणं, जवजल तरणं, अध  
संहरणं उद्धरणं ॥ गोअमृत करणं, जनमन  
हरणं, वरणा वरणं आदरणं ॥ ३ ॥ आदरणा पालं,  
जाक कमालं, नित नूपाल आयु पालं ॥ अष्टमी  
शशि समभालं, देव दयालं, चैतन चालं सुकमालं ॥  
त्रिजुवन रखवालं, महा डुकालं, महाविकरालं भय

टाळं ॥ शृंगार रसालं, मह केमालं, हृदय विशालं  
 नृपालं ॥ ४ ॥ कलश ॥ ठप्पय ॥ अकल रूप उ-  
 दार, सार शिव संपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप,  
 डुरिय डुह डुःख निवारक ॥ चिहुं दिश आण  
 अखंरु, चंरुतप तेज दिणंदह ॥ अमर अपठर  
 कोडि, गावे जस नमेनरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर-  
 मणि, पाय अधिक मंगल नीलो ॥ मुनि मेघ  
 राज कहे जिनवर जयो, श्री पार्श्वनाथ त्रिजुवन  
 तिलो ॥ ५ ॥

इति श्री पार्श्वनाथ छंद सम्पूर्णम् ॥ ३० ॥

॥ अथ श्री गौरी पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ दोहा ॥

धवलधींग गोडीधणी, सेवक जन साधार ॥

पंचम आरे पेखियें, साहिव जग आधार ॥ १ ॥

॥ जुजंग प्रयात वृत्तं ॥

तजोमान माया भजो जाव आणी, वामा नंदनें  
 सेवियें सार जाणी ॥ जुवो नाग नागिणी नाथध्यानें,

पाम्या शक्रनी संपदा बोधि दाने ॥१॥ वश्या पाटणें  
 काल केतो धरामा, पधारथा पठे प्रेमशुं पार करमां ॥  
 थलीमां वली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश  
 त्रैलोक्य धारी ॥३॥ धरी हाथमां लाल कव्वान रंगे,  
 भिडी गातकी रातकी नील अंगे ॥ चकी नीलमे  
 तेजीये विघ्न वारे, अराध्या थका पथं चूलां सधारे  
 ॥ ४ ॥ जेणे पाशगोमी तणां पाय पूज्या, शत्रु सर्व-  
 दा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी थया आज  
 ठोटा, प्रभु पार्श्वनाएक प्राक्रम मोहोटां ॥ ५ ॥  
 गोमी आप जेरे नव खंड गाजे, जेहथी शाकिनी  
 डाकिनी दूर जाजे ॥ पूरे कामना पार्श्व गोमी प्र-  
 सिद्धो, हेलां मोहराज जेणें जेर कीधो ॥ ६ ॥ महा  
 दुष्ट दुर्दंत जे चूत चूमा, प्रभु नाम पामे सर्वत्रास  
 गुंमा ॥ जरा जन्मने रोगना मूल कापे, अराध्यो सदा  
 संपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न जाखें नमो पार्श्व  
 गोडी, नाखो नाथजी दुःखनी जाल त्रोमी ॥ ८ ॥  
 ॥ इति श्री गोमी पार्श्व नाथ छंद सम्पूर्णम् ॥३१॥

# ॥ अथ श्री चोत्रीस अतिशय नो बंद ॥

॥ श्री सुमति दायक, दुरित घायक, ज्ञान  
अनुभव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमं,  
जुगम करजोडी करी ॥ १ ॥ बहु पाव जक्तें, शुण  
जिनवर, चोत्रीसे अतिशयें करी ॥ जे सुगुरु मुख  
थी, सुण्यां ते कहूं, आगमशास्त्रें अनुसरी ॥ २ ॥  
तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिनकेरा, रोम नख  
वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र आस्ति, द्वितीय  
अतिशय ए सही ॥ ३ ॥ गोडुग्ध सरिखो, मांस  
लोही, तृतीय तेह वस्त्राणियें ॥ चोथो ते उत्पल  
गंध सरिखो, श्वासोच्छ्वास सुजाणियें ॥ ४ ॥ आहार  
ने नीहार प्रछन्न, एह अतिशय पांचमो ॥ आका  
श गतधर्म चक्र ठठो, गगन ठत्र ए सातमो ॥ ५ ॥  
रह्या अंबर श्वेत चामर, जुगम अष्टम ए कह्यो ॥  
फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवम अतिशय ए लह्यो  
॥ ६ ॥ आकाशगत ध्वज सहसमंडित, इन्द्र ध्वज  
आगे चले ॥ ए दशमो अतिशय कह्यो श्रुतमां,  
देखी परमत खल भले ॥ ७ ॥ इग्यारमे जिहां



स्वामी जभा, रहे वली वेसे जिहां ॥ छाया शु-  
 धज देव तत्क्षण, अशोक तरुवर रचे तिहां  
 ॥ ७ ॥ द्वादशम अतिशय प्रज्ञामंदल, पुढें  
 रविकर जीपए ॥ रमणिक सुंदर भोमी जागसो,  
 तेरमो एदीपए ॥ ८ ॥ अधोमुख होय सर्व कंटक,  
 चउद में अतिशय वली ॥ अनुकूल यज्ञने परिणमें  
 ऋतु, पंच दशमो सुख लली ॥ १० ॥ संवर्तक पवने  
 जोमी पूंजे, जोजन लगें ए सोल में ॥ सुगन्ध वृष्टी  
 तिहां वरसे, प्रगट अतिशय सतर मे ॥ ११ ॥  
 जानु प्रमाणे बीट नीचो, पंच वरण सुहामणा ॥  
 जलने ते अल ना फूल वरसे, अठार में अतिशय  
 घणा ॥ १२ ॥ अमनोझ शब्दादिकही नाशे, उंग-  
 णीस में अतिशयें वली ॥ वीशमें शुभिदा थाये;  
 एम कहेते केवली ॥ १३ ॥ एकवीशमे प्रभुतणी  
 देशना, जोजन लगे सविजन सुणे ॥ बाविश में  
 प्रभु अर्ध मागध, जाषायें जिनजी भणे ॥ १४ ॥  
 त्रेवीश मे जिनवाणी जनने, हेतु शिवभणी परि-  
 णमे ॥ चोवीश मे प्रभु चरण मूलें, वैर जंतुना उ-  
 पशमें ॥ १५ ॥ अन्यर्लिङ्गी नमे जिननें, पंचविंश-  
 ति अतिशयें ॥ अन्य तीरथी मौन्य थाये, छवी-

समें प्रभु निश्चयें ॥ १६ ॥ पण वीश जोजन लगे  
 जिनथी, इतने मारी नहीं ॥ स्वचक्रने परचक्रन  
 होये, तीस अतिशय ए सही ॥ १७ ॥ अति वृष्टिने  
 अना वृष्टि, दुर्निद नरण एनवि उपजे ॥ चोत्रीस  
 मे प्रभु आधि पीडा, व्याधि दुःखन संपजे ॥ १८ ॥  
 चोत्रीस अतिशय एह कहिया, सूत्र समवायांगमां ॥  
 जे नणतां गुणतां हिये धरतां, रहे आतम  
 रंगमां ॥ १९ ॥ निज शुद्ध आतम रूप प्रगटे, जा-  
 वशुं जो ध्याइयें ॥ दर्शनादिक रत्न लहिये, परम  
 सुख पद पाइयें ॥ २० ॥ अरिहंत जगवन्त तणा  
 अतिशय, जणो आणी आसता ॥ बहु पुण्य करियें  
 ध्यान धरियें, सुख लहियें सासता ॥ २१ ॥ श्री-  
 सूरिविद्या उदाधि सेवक, शिष्य एणी परें संस्तवे ॥  
 मुनि ज्ञान सागर कहे प्रभु पद, सेव मांगुं जवो  
 जवे ॥ २२ ॥

॥ इति श्रीचोत्रीस अतिशय नो ठंद-  
 संपूर्णम् ॥ ३२ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीशिखामण नो छंद ॥ ❀ ॥

॥ त्रोटक वृत्त ॥

॥ वरदायक माय सलाम करी, कहुं सार शिखा

मण एक खरी ॥ नर नारी सहु हियमें धरियें, जिम  
 आपद संकट उद्धरियें ॥ १ ॥ परजात समे गुरु  
 देव नमो, जिमदारिद्र दोहग दूरें गमो ॥ भगवन्त  
 सदा चरणा नजियें, कुलरीति कठूकबु नां तजियें  
 ॥ २ ॥ लमियें नहिं माय नें बापथकी, बढियें नहिं  
 कोय थी बाधी जकी ॥ विश्वास न कीजे नारि  
 तणो, गुरु राज समीप थी ज्ञान जणो ॥ ३ ॥ द-  
 रबार अलिकननां भखियें, घर जीतर अक्षर नहीं  
 लखियें ॥ रखियें नहिं चारु पमोस सदा, तरियें नहिं  
 नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू विधिसे  
 करियें, ठग दाव रमी धन ना जरियें ॥ पर देश-  
 मां गाफिल ना फरियें, नरपति थकी डरता रहियें  
 ॥ ५ ॥ जुगटां व्यसनी परिना रमियें, ऋषि  
 साध अनाथ कुं ना दमियें ॥ करियें नहिं आल  
 अगन्नी तणी, बलि दीजियें सीख सुमित्त जणी  
 ॥ ६ ॥ गुरु आसन उपरि नाधसियें, दुर्जनसे संगति  
 ना बसियें ॥ बली धीज न की जियें जुठ किसी,  
 घणीवार न कीजियें बात हंसी ॥ ७ ॥ वयणां  
 मुख बोलह ते पलियें, सज्जन थी स्नेह धरी मलि  
 यें ॥ परनारिनी संगति प्यार तजो, परमारथ कारज

नित्य नजो ॥ ८ ॥ सुख कार शिखामण एम कहे,  
कवि उत्तम ते जयमाल लहे ॥ गुरु चार लहू अड  
दीर्घ धरो, इम त्रोटक नामक छंद करो ॥ ९ ॥

॥ इति श्री शिखामण ठंद सपूर्णम् ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीएकादश गणधरना नाम ॥

॥ एका दश गणधर ना नाम, प्रह उठीने करुं  
प्रणाम ॥ इंद्रचूति पहिलो ते जाण, अग्निचूति  
वीजो गुण खाण ॥ १ ॥ वायुचूति त्रीजो जग सार,  
गणधर चोथो व्यक्त उदार ॥ शासन पति सुधर्मा  
सार, मंजित नामे ठटोधार ॥ २ ॥ मौर्य पुत्र ते  
सातमो जेह, अकंपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनि  
वर मांहे जे परधान, अचल ज्ञात नवमो ए नाम  
॥ ३ ॥ नाम थकी होय कोमी कढ्याण, दशमो मेता-  
रज अविरल बाण ॥ एकादशमो प्रभास कहेवाय,  
सुख संपत्ति जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा  
गणधार, गुण मणि रयण तणा चंदार ॥ उत्तम विजय  
गुरुनो शिष्य, रत्नविजय वंदे निश दिस ॥ ५ ॥

॥ इति श्री एकादश गणधर ना नाम

सम्पूर्णम् ॥ ३४ ॥

# ॥ अथ श्रीगौतम प्रज्ञाति स्तवन ॥

## ॥ राग प्रज्ञाति ॥

मात पृथ्वी सुत प्रात ऊठी, नमो गणधर गौतम  
 नाम गेलें ॥ प्रहसमें प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा,  
 चढ़ती कला होय वंशवेले ॥ मात० ॥ १ ॥  
 वसुधूपति नंदन विश्वजन वंदन, दुरित निकंदन  
 नाम जेहनं ॥ अजेद बुद्धें करी जविजन जे भजे,  
 पूर्ण पोहोचे सही ज्ञान्य तेहनं ॥ मात० ॥ २ ॥  
 सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण  
 कामधेनु ॥ तेह गौतमनं ध्यान हृदयें धरो, जेह  
 थकी अधिक नहीं माहात्म्य केनं ॥ मात० ॥ ३ ॥  
 प्रणव आदें धरीमाया बीजें करी, स्वमुखें गौतम  
 नाम ध्याये ॥ कोमि मन कामना सफल वेगें  
 फलें, विघन बैरी सवे दूर जाये ॥ मात० ॥ ४ ॥  
 ज्ञान बल तेज ने सकल सुख संपदा, गौतम नाम  
 थी सिद्धि पामे ॥ अखंड प्रचंड प्रताप होय अव  
 निमां, सुरनर जेह ने शीश नामे ॥ मात० ॥ ५ ॥  
 दुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिनें  
 व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रेतनां जोर जांजे

वली, गौतम नाम जपतां उद्धासे ॥ मात० ॥ ६ ॥  
 तीर्थ श्रष्टापदे आप लवधे जई, पन्नरसें त्रणने दी-  
 खदीधी ॥ अठमने पारणे तापस कारणे,  
 क्षीर लवधे करी अखुट कीधी ॥ मात० ॥ ७ ॥  
 वरस पञ्चास लगे गृह्वासे वस्या, वरस वली  
 त्रीज करी वीर सेवा ॥ वार वरसां लगे केवल  
 जोगव्युं, जक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मात० ॥ ८ ॥  
 महियल गौतम गोत्र महिमा निधि, गुणनिधि ऋद्धि  
 ने सिद्धि टाई ॥ उदय जस नाम थी अधिक लीला  
 लहे, सुजस सोजाग्य दोलत सवाई ॥ मात० ॥ ९ ॥  
 ॥ इति श्री गौतम प्रजातिस्तवनसंपूर्णम् ॥ ३५ ॥

## ॥ अथ श्री दोधक वावनी ॥

उयह् अक्षर सार है, ऐसा श्रवरन कोय ॥  
 सिद्ध सरूप जगवान शिव, शिरसा बंदू सोय ॥ १ ॥  
 नमिये देव जगत गुरु, नमिये सद गुरु पाय ॥  
 दयायुक्त नमिये धरम, शिव सुख लेय उपाय ॥ २ ॥  
 मनकी ममता दूर कर, समता धर घट मांहि ॥  
 रमता राम पिठानके, शिव मुख ले क्युं नाहि ॥ ३ ॥  
 शिव मंदिरकी चादधर, अथिर श्रंध तजि दूर ॥

लपट रह्यो क्या कीच में अशुचि जिहां जरपूर ॥ ४ ॥  
 धंधाहीमें पच रह्यो, आरंज किये अपार ॥ उठ  
 चलेगो एकलो, शिर पर रहेगो भार ॥ ५ ॥ अ-  
 न्यायी जन देत धन, बहुत रहित फल सोय ॥ दान-  
 स्वल्प फल पिण बहुत, न्याय उपार्जित होय ॥ ६ ॥  
 आतम परहित आपकुं, क्या परकुं उपदेश ॥ निज  
 आतम समज्यो नहीं, कीनो बहुत कलेश ॥ ७ ॥  
 इतनाही में समजलें, क्या बहुत पढे सों ग्रन्थ ॥  
 उपशम विवेक संवर लहें, याको शिव पुर पंथ  
 ॥ ८ ॥ इति निति याथें गई, प्रगट नई सवरीत ॥  
 गीत मार्ग पेदा कीउं, गाउं तिनके गीत ॥ ९ ॥ उदय  
 नये रविके जसा, जावे सब अंधार ॥ त्यों सद गुरु  
 के बचनसें, मिटें मिथ्यात अपार ॥ १० ॥ ऊगत  
 बीज सु खेत में, जसा सुजल संयोग ॥ त्यों सद  
 गुरु के बचन से, उपजत बोध प्रयोग ॥ ११ ॥ एक  
 टेक धरी ए जसा, निर्गुण निर्मम देह ॥ दोष रोग  
 जामें नहीं, करीयें ताकी सेव ॥ १२ ॥ ए विषम  
 गति कर्म की, लिखी न काहु जात ॥ रंकनथें रा-  
 जाकरें, राजा रंक दिखात ॥ १३ ॥ उस बिंदु कुश-

अग्र्यें, परतन लग्गें वार ॥ आयु अथिर ते सैं जसा,  
 कर कतु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊपधन मिले मित्तज्युं,  
 जायें मरें न कोय ॥ कर औपध एक धर्म को,  
 जसा अमर तुं होय ॥ १५ ॥ अंध पंगु  
 ज्यों एक हे, जरे न पावक मांहि ॥ ग्यान  
 सहित क्रिया करे, जसा अमर पुर जांहि ॥ १६ ॥  
 अमर जगत में को नही, मरे अमर सुर राज ॥ गढ  
 मढ मंदिर ढह परे, अमर सुजस जस राज ॥ १७ ॥  
 कंचन से पीतर गृहे, मूरख मूढ गिमार ॥ तजे  
 धर्म मिथ्यामती, जजे अधर्म असार ॥ १८ ॥  
 खल संगति तजियें जसा, विद्या शोजित तोय ॥  
 पन्नग मणि संयुक्त सो, क्यों न जय कर होय ॥ १९ ॥  
 गाज शरदकी कारिमी, करत हैं बहुत अवाज ॥  
 तनक न वरसे दान ल्यों, कृपण नदें जस राज ॥ २० ॥  
 घरटी के दो पुमविचे, कण चूरण ज्यों होय ॥  
 ल्यों दो नारी विच पोढ्यो, नर उगरे न कोय ॥ २१ ॥  
 नही ग्यान जामें जसा, नही विवेक विचार ॥  
 ताको संगन कीजिये, पर हरिय निरधार ॥ २२ ॥  
 चपला कमला जानके, कतु खरचो कतु खाओ ॥  
 एक दिन जोइ सुत्रो जसा, लांवा करकें पाओ ॥ २३ ॥



ठल कर बलकर बुधिकर, करकें जसा उपाय ॥  
 आतम वसकर आपनो, दुरजन दूर तजाय ॥ २४ ॥  
 जुवती सब युग वस किओ, किसी न राखी मांम ॥  
 तासों जो न्यारा रहे, ताको जसा प्रणाम ॥ २५ ॥  
 जाजी बात न कीजिये, थोड़ाहीमें आन ॥ जसा  
 बराबर लेखवो, आप प्रान पर प्रान ॥ २६ ॥ नग  
 दुहिता पति आभरण, ताको अरि जसराज ॥  
 तस पति नारी बिनु पुरुष, नवधें शोजा लाज ॥  
 ॥ २७ ॥ टाणां टुंणा ठोरदें, याथें न सरें काज ॥  
 चोखे चित जिन धर्मकर, ज्युं काज सरें जसराज  
 ॥ २८ ॥ ठगसो जो पर मन ठगें, पर उपजावें  
 रीऊ ॥ जास करें बस जगतको, साचा ठग सो—  
 ईज ॥ २९ ॥ रुरे कहा जस राज कहें, जो अपने  
 मन साच ॥ क्षिण मे प्रगट होयगा, ज्यों प्रगटायो  
 काच ॥ ३० ॥ ढहे कोट अग्यान का, गोला ग्यान  
 लगाय ॥ मोह राय को मारले, जसा लगे सब पांय  
 ॥ ३१ ॥ नदी नखी नारी तणो, नागन कुल जस—  
 राज ॥ नर स्त्री नर पती निर्गुणिन, आठे करे अकाज  
 ॥ ३२ ॥ तारे ज्यों नरको जसा, जर सायर में पोत ॥  
 त्यों गुरु तारे भव जलधि, करें ग्यान उद्योत ॥ ३३ ॥

थोऊ लोऊ नहि जीउकों, जो लाख कोटि धन होत ॥  
 समता जो आवे जसा, सुखी सदा मन पोत ॥ ३४ ॥  
 दक्षिण उत्तर चार दिस, जसा जमें धन काज ॥  
 प्रापति विना न पाईयें, कोमी करो सुउपाय ॥ ३५ ॥  
 धन पाया खाया नही, दियाजी कतु नाहि ॥  
 सो वागुरी होयें धनमें जसा, हुंढत है धन  
 मांहि ॥ ३६ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक  
 खारो नीर ॥ नीच मीत जस राज कहें, पांचो  
 दहें शरीर ॥ ३७ ॥ परछपगारी जगतमें, अलप  
 पुरुष जसराज ॥ शीतल वचन दया मया, जाके  
 मुख पर लाज ॥ ३८ ॥ फोज दिसो दिस मिल  
 गई, जसा घुरे निसाण ॥ जुजें सन मुख जायनें,  
 सूर गणे नहि प्राण ॥ ३९ ॥ बुंव परे सब दोर हे,  
 लेखे आयुध हाथ ॥ वदन मलिन कर हैं जसा, जब  
 जाचें कोय अनाथ ॥ ४० ॥ जगति जलि जगवंत की,  
 संगति भलि सुसाध ॥ ओरन की संगति जसा, आठो  
 पहर अपाध ॥ ४१ ॥ मूरख मरण न देख कें, करत  
 बहुत आरंभ ॥ सात विसन सेवें जसा, करे धर्म विच  
 दंज ॥ ४२ ॥ याग करें प्राणी हणें, जापे धर्म उखंठ ॥  
 देखो ग्यान विचार के, क्यों पावे वैकुंठ ॥ ४३ ॥

रीस त्याग वैराग धर, होय जोगी अवधूत ॥ शि-  
 व नगरी पावे जसा, कर ऐसी कर तूत ॥ ४४ ॥  
 लहेणा देणा कतु नही, मुहकी मिठी वात ॥  
 हृदय कपट धर हे जसा, ताके शिरपर लात  
 ॥ ४५ ॥ वरसें वारिधि अहो निशें, खाख रती नुंपान  
 ॥ जाग्य विना पावे नहीं, याचक दाता दान  
 ॥ ४६ ॥ शंख शरीखां उजला, नर फूटरा फरक ॥  
 जसा न शोजे दान विण, तुटी कान धरक ॥ ४७ ॥  
 परो पंथ हें सूरको, रणविच मुंरु विहंरु ॥ पाठा  
 पाथ्रो धरे नहीं, जो होई शत खंड ॥ ४८ ॥ साय  
 र मोती नीपजें, हीरा हीरा खाण ॥ ग्यान ध्यान  
 त्यानिपजे, जसा सुगुरु की वाण ॥ ४९ ॥ हस्त  
 को मंरुण दान है, घर मंरुण वरनार ॥ कुल मंरुण  
 अंगज जसा, धन मंडण संसार ॥ ५० ॥ लंछन  
 निस पति श्याम रुचि, सूरज लंछन ताप  
 ॥ दाता लंछन धन बिना, सबहु देत सराप  
 ॥ ५१ ॥ दांत दांत समता रति, हूणे नहीं षट  
 काय ॥ जसा ग्यांन किरिया गमन, सोसाधु कहें  
 वाय ॥ ५२ ॥ सतरसें तीसें समें, नवमी शुक्ल

आषाढ ॥ दोधकवावनी जसमुनि, पूरन करी  
अगाध ॥ ५३ ॥

॥ इति श्री दोधक वावनी संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

॥ अथ ज्वर ( ताव ) छंद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनन्द पुर नगरे, अजयपाल राजान ॥  
माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥  
सात रूप शक्ति हुओ, करवा खेल जगत्त ॥  
नाम धरावे जूजुवा, पसरयो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥  
एकांतरो वेयां तेरो, त्रियो चोथो ताम ॥  
शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छन्द ॥

ए साते तुज नाम सुरंगा, जपता पूरे कोमि उ-  
मंगा ॥ तें नाम्या जे जालिम जूगां, जगमां व्यापी  
तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे चूपति सव रंका,  
त्रिभुवनमां वाजे तुज डंका ॥ माने नहिं तुं केहनि  
शंका, तूठो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक  
सिद्ध तणा मदमोके, असुर सुरा तुज आगल

दोमे ॥ डुठ धीठना कंधर तोमे, नमिचाले तेहने  
 तुं ठोडे ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, माह्याने  
 जिम तिम बह कावे ॥ पहिलो तुं केरुमा थी आवे,  
 सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हुं  
 हुं कार करावे, पांशलियां हामां करु मावे ॥ उनाले  
 पण अमल जगावे, तापें पहिरणमां मुतरावे ॥ ८ ॥  
 आशो कार्तिकमा तुज जोरो, हव्यो न माने धागो  
 दोरो ॥ देश विदेश परावे शोरो, करे सर्व तुं तातो  
 तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हामां भंजे, पापीने तामे  
 कर पंजे ॥ जक्ति वत्सल जावें जो रंजे, तो सेवक  
 ने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोरुक तोरुक डमरु  
 काकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धुंसरु  
 धांसड धाकं, चढतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥  
 पिशुन पछारुण नहीको तोथी, तुज जस जीड्या  
 जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी,  
 मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ जक्त थकी  
 एवढी कां खेढो, अवल अमिनां ठांटां रेढो ॥  
 लाखा जक्तनो ए निवेढो, महाराज मूको मुज  
 केढो ॥ १३ ॥ लाजवसोमां अजया राणी, गुरु  
 आण मानो गुण खाणी ॥ घरे सिधावो करुणा आणी,

कहुंतुं नाके छींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छंद  
जे पढ़शे, तेहने ताव कदी नव चढ़शे ॥ कांति वाल  
देही नीरोगं, लेहेशेलखमीलीला जोगं ॥ १५ ॥

ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वदीजें ॥  
आनंदपुर अवनीश, अजयपाल आखीजें ॥ अजया  
जात अढार, बांचिये साते वेटा ॥ जपता एहिज  
जाप, जक्तसुं न करे खेटा ॥ उत्तरे अंग चढियो  
पलक में, तारा वयणे मुदा ॥ कहें कांति रोग नावे  
कदि, सार मंत्र गणिये सदा ॥ १६ ॥

यह छंद सात बार, अथवा इक्कीश बार, सुणे  
पढे तो ज्वर जाता रहे ॥

॥ इति श्री ज्वर छंद संपूर्णम् ॥ ३७ ॥

॥ अथ क्रोध मान माया-  
लोभ नो छंद ॥

॥ चौपाइ ॥

पहेलां सरस्वतीनु लीजे नाम, चौबीश जिनने  
करं प्रणाम ॥ क्रोध मान माया ने लोभ, भाखु

अर्थ करी थिर थोत्र ॥ १ ॥ क्रोधें तप कीधों पर  
 जले, क्रोधें कर्म घणेर फले ॥ क्रोधें करणी रूडी जाय  
 क्रोधें समता रस सूकाय ॥ २ ॥ क्रोध तणे वश  
 कांश् नवि गणे, मात पिता गुरुने अवगणे ॥ क्रोधें  
 पंचेन्द्रिय मूजाय, क्रोधें जेर घणेरोथाय ॥ ३ ॥ क्रोधें  
 विकथा बाधें घणी, क्रोधें कर्म निका चित जणी ॥  
 क्रोधें बे बन्धव आफले, क्रोधें जरत बाहुबल लमे  
 ॥ ४ ॥ क्रोधें अचंकारी जटा, क्रोधें परशुं करे खटपटा ॥  
 क्रोधें अर्जुन माली नाम, महावीर स्वामी कोधों सु-  
 ठाम ॥ ५ ॥ क्रोधें कूरु कपट केलवे, क्रोधें जुंमि गति  
 मेलवे ॥ क्रोधें फरसराम फरसी फेरवे, क्रोधें सुनुम  
 दल मेलवे ॥ ६ ॥ क्रोधें ब्रह्मदत्त थयो कठोर, ब्राह्मण  
 मोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें सासु थइ नणंद, सुजड्रा  
 सती शिर कीधो फंद ॥ ७ ॥ क्रोधें काया कर्मनो  
 बंध, क्रोधें घरमां पेसे बंध ॥ क्रोधें चेमोते महाराय,  
 हल विहल मामा घर जाय ॥ ८ ॥ क्रोधें कोणिक  
 कटकी करे, जांगी विशाला पाठो फरे ॥ क्रोधें  
 लक्ष्मण नें वालिराम, क्रोधें रावण टाढ्यो ठाम ॥ ९ ॥  
 क्रोधतणी छे खोटी वात, कोई न करसो एहनी तात ॥

क्रोधें कर्म घणा बंधाय, क्रोधें दुर्गति पमवा जाय  
 ॥ १० ॥ तेह जणी सहु छमो क्रोध, सुख निर्वाध ल  
 हो बलि बोध ॥ मान तणी हवे सुणजो वात, मान  
 तजे ते सबल सुजात ॥ ११ ॥ माने मान तुरंगें चमे,  
 माने मोह जाल मां पमे ॥ माने नीच कुलें अवतरे,  
 माने विनय मूल नवि जरे ॥ १२ ॥ माने चौगतिने  
 अनुसरे, माने जवुन जव माहें फिरे ॥ शांव प्रद्युम्न  
 कह्यो विचार, माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥  
 माने बलि राजा निरधार, ब्राह्मण रूप धरयो मोरार ॥  
 मान गयद तणो ठे जोर, बाहुबले छांड्यो एक  
 ठोर ॥ १४ ॥ मान तणी ठे बधती बेल, माने  
 नमियां दुखनी रेल ॥ माने वीरमती ते नार, चंदने  
 कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥ प्रेमला लच्छी हार्थें चनी,  
 सूरज कुमे कीधो नर फरी ॥ माने दुर्योधन दुःख-  
 लहे, माने सर्पनी उपमा कहे ॥ १६ ॥ माने धर्म न-  
 पामे कटा, माने कर्म बंधाये सदा ॥ माने मान बंध-  
 तो होय, माने जीव फरे सहु कोय ॥ १७ ॥ माने  
 धुळु गलें नर सोय, मान तजे ते सुखियो होय ॥  
 माने गज असवारी करे, माने जीव अगोचर फिरे  
 ॥ १८ ॥ मान तणी ते ए गति कही, धर्मी नर ते



सुणजो सही ॥ हवे मायानो कहुं विचार, माया नरक  
 तणो ठे ठार ॥ १९ ॥ माया मोह तणो ठे दोष, माया  
 कर्म तणो ठे पोष ॥ माया कपटें मद्धिनाथ, मायामोह  
 तणो ठे साथ ॥ २० ॥ माया यें कूड कपट केदवे,  
 मायायें जुंझी गति मेलवे ॥ माया मानव जूठो  
 लवे, माया नर नारी शोषवे ॥ २१ ॥ माया  
 आखारु चूति मुणिंद, मायायें लारु वोहोरथा  
 फंद ॥ माया मोहोंटो छे मकरंद, माया प-  
 रिया सृज चंद ॥ २२ ॥ माया फंद तणी जे  
 जाल, माया सिंह तणी ठे फाल ॥ माया अधिक  
 करे उफंद, माया कर्म तणो ठे कुंड ॥ २३ ॥  
 माया मांहे धर्म न थाय, माया पुण्य करे अंतराय ॥  
 ठोटो मोहटो मायाधरे, माया सबल संसारे फिरे  
 ॥ २४ ॥ माया जाले बांध्यो जीव, मायाये प्राणी  
 करतो रीव ॥ अर्थ कह्यो माया नो सार, लोच  
 तणो हवे कहुं विस्तार ॥ २५ ॥ लोभे लक्षण जाये  
 सहु, लोने परिया दाणव बहु ॥ लोने लाज  
 घणरो थाय, लोने नर नारी उजाय ॥ २६ ॥ लोने  
 गांमो घेलो होय, लोभे धर्म न जाणे कोय ॥  
 लोने सागर दत्त जलमां पड्यो, लोच सुचुम चक्री

ने नह्यो ॥ २७ ॥ लोचने संचय धननो करे, माखी  
 जिम महु आलें फिरे ॥ लोचने धन नवि खर्चे धणी,  
 वागुल जव पामशे कां फणी ॥ २८ ॥ लोचने देश  
 विदेशें जाय, लोचने नरनारी अफलाय ॥ पुण्य होय  
 तो पामें वली, वेठा धर्म करो मन रली ॥ २९ ॥  
 क्रोध लोचनो ठांको पास, श्रावक धर्म करी उद्घास ॥  
 लोचने नाना मोटो जीव, लोचने अकार्य करे सदीव  
 ॥ ३० ॥ लोचन तणी गति ठांको सार, तीर्थ यात्रा क-  
 रो उदार ॥ अढार पांत्रीमा वर्ष मज्जार, वागरु देश  
 बको डुमार ॥ ३१ ॥ देव दर्शन करो सुखकार, पामो  
 जिम जव सायर पार ॥ क्रोध मान माया नो संग,  
 बलि ठांको लोचन प्रसंग ॥ ३२ ॥ कहे कवि सुणो पं-  
 कित राय, कांति विजय हरखे गुण गाय ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री क्रोध मान माया लोचन नो  
 ठंड संपूर्णम् ॥ ३८ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक ॥

॥ हरिगीत छन्द ॥

वृद्धि विमलकर नावबुधवर, निरूप रमनी, निर  
 खियें । वर देय न दाता, पद प्रवाता, मन्त्रमाला

हरस्वियें ॥ स्थिर थानंजा, अति अचंभा, रूपरम्भा  
 चलकती ॥ नजियें जवानी, जगतजानी, राजरानी  
 सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख दैवत, प-  
 द्मपेखत, आसनं । सुखदाय सूरति, मायमूरति, दुः-  
 ख दुरति, निवारनं ॥ त्रिहुलोक नारक, विघ्नवारक,  
 धराधारक, धरपती ॥ नजियें ॥ २ ॥ केवियां को-  
 पित, लोज लोपित, अवनि ओपित, ईश्वरी । संतोष  
 धारन, विघ्न वारन, मदन मारन, महेश्वरी ॥ खल  
 दह्यां खण्णन, छिद्र छंणन, दुष्ट दंणन, नरपती ॥  
 नजियें ॥ ३ ॥ शिव शक्ति साची, रंग राची, अज  
 अजाची, योगिनी । मद करन मत्ता, तरन तत्ता,  
 धत्तधत्ता, ध्वंगिनी ॥ जिन आण पंति, मनरमंति,  
 धवलदंति, वरमती ॥ नजियें ॥ ४ ॥ जल थल ज-  
 नानी, पवन पानी, मति बखानी, बीजली । गिर  
 वरां गहन, वाघवाहन, सर्पसाहन, शीतली ॥ ह-  
 दहांक धारी, हत हजारी, धनुष धारी, जगवती  
 ॥ नजियें ॥ ५ ॥ ऊणणाट ऊल्लरि, धिधिम धपवरि,  
 रिरिरिधर, खल्लियें । धिधिधौं किधौं, गरुदि धिधिक  
 धिरतं, धिधिकधौं गडदी, गल्लियें ॥ झांकि झां झां  
 कुरुमतिझां, तत्तकि त्रां त्रां, दमकती ॥ नजियें ॥

॥ ६ ॥ रिरि रमकि, रमि रिमि, जिजिमि  
 जिमि जिमि, ठमकि ठम पग, रच्चिये । घ-  
 म घमकि, घम घम, ग्रहाणिक गृहाणि, गमअति  
 अमग, नृत्ति मच्चिये ॥ तत थेइय तानन, मात मानन,  
 अचल आनन, दरसती ॥ जजिये ॥ ७ ॥ चव  
 चक्र चालन, ऊटिक जालन, गर्वगालन, गंजनी ।  
 विरदां विदारन, महिष मारन, दलिङ्ग दारन जं-  
 जनी ॥ चरचिये चनी, खलांखंनी, मदन मंनो,  
 मलकनी ॥ जजिये ॥ ८ ॥ कविकरे अष्टक, टले  
 कष्टक, विसन पृष्टक, कक्षिये । मणिमौजि मंडित, पढे  
 पंडित, एअखंनित, पेखिये ॥ दयासुर देवी, सुरां  
 सेवी, नितनमेवी, जगपती ॥ जजिये ॥ ९ ॥

॥ इति श्री सरस्वती अष्टक संपूर्णम् ॥ ३९ ॥

## ॥ अथ श्री मंगलाष्टक ॥

मंगलं जगवान् वीरो । मंगलं गौतमः प्रभुः ॥  
 मंगलं शूलि जडाया । जैन धर्मोऽस्तु मंगलं ॥ १ ॥  
 नाचेयायाः जिनाः सर्वे । भरतायाश्च चक्रिणः ॥

कुर्वंतु मंगलं सर्वे । विष्णवः प्रति विष्णवः ॥ २ ॥  
 नाभि सिद्धार्थ चूपाद्या । जिनानां पितरः समे  
 पालिता खंरु साम्राज्या । जनयन्तु जयंमम ॥ ३ ॥  
 मरुदेवी त्रिशलाद्या । विख्याता जिन मातरः ॥  
 त्रिजगज्जनिता नंदा । मंगलाय भवन्तु मे ॥ ४ ॥  
 श्रीपुंरुरीकेंद्रचूति । प्रमुखा गण धारिणः ॥ श्रुत  
 केवलं नो पीड । मंगलानि दिशंतु मे ॥ ५ ॥ ब्रा-  
 म्ही चन्दन बालाद्या । महासत्यो महत्तरा ॥  
 अखंड शील लीलाद्या । यच्छंतु मममंगलं ॥ ६ ॥ च-  
 केश्वरी सिद्धायिका । मुख्य शासन देवताः ॥ स-  
 म्यगूहशां विघ्नहरा । रचयंतु जयस्त्रियं ॥ ७ ॥ क-  
 पर्दी मातंग मुख्या । यक्षा विख्यात विक्रमाः ॥  
 जैन विघ्नहरा नित्यं । दिशंतु मंगलानि मे ॥ ८ ॥  
 यो मंगलाष्टक मिदं, पटुधी रधीते । प्रातर्नरः सु-  
 कृतज्ञावित, चित्तवृत्तिः ॥ सौजाग्य जाग्य कलिता  
 धुत, सर्व विघ्नो । नित्यं स मंगल मलं, लज्जते ज  
 गत्याम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्री मंगलाष्टक संपूर्णम् ॥ ४० ॥

# ॥ अथ श्री भीमजंजन पार्श्व- नाथ छंद ॥

॥ जुजंगी छंदनी चाल ॥

बारु विश्वमां देश काशी विराजे, जिहां जान्ह  
वी नीर गंजीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहां  
प्रसिद्धि, शोना स्वर्गनी जिणे उलाली लीधो ॥ १ ॥  
घणुं शुं वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे  
जोवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी  
धरा ने पाले, प्रेमशुं अश्वसेनाजिधाने ॥ २ ॥ वामा  
तेहनी गेहनी रूपे रंजा, शोले सर्व नारी जीतो  
ए अचंजा ॥ सदा सुंदरी ते सोहे चन्द्र वयणी,  
सुती सेजमां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक  
दशमां थको जे सनूरे, प्रजुपार्श्व वामाकुले पुण्य-  
पूरे ॥ चतुर्थीं दिने चैत्रनी कृष्ण पक्षे, वस्या गर्भ  
वासे विशखा सुरक्षे ॥ ४ ॥ देवी चौद सुहणा  
तदा दिव्य देखे, महामोद पामी माने तेह  
लेखे ॥ जायो पोशमासे दशमी अंधारी, आखा वि  
श्वनो जेह उद्योत कारी ॥ ५ ॥ मलि दिगकुमारी  
सुरेंडे मखायो, गायो हलरायो पूजीने वधायो ॥

वधंते प्रभु यौवने जाम जायो, प्रजावती राज कन्या  
 प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय जोग विलासी वस्या गृह  
 वासे, वरष त्रीशमें वृत लीधुं उद्धासे ॥ त्र्यासी  
 रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तपस्या करी शुक्ल  
 ध्यानाज्यासी ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर्दोष चारित्र  
 पाली, बहु कर्मना वृद्धनां मूल बाली ॥ थया केव  
 ली चैत्रनी कृष्ण चोथे, देखे लोक अलोकने ज्ञान  
 ज्योते ॥ ८ ॥ मली देवताये महा मोद धारी, करयो  
 त्रिगुणो विश्व व्यामोह कारी ॥ स्वामी दिव्यसिंहा  
 सने बेठा सोहे, बारे परखदाना बहु मन्नमोहे ॥ ९ ॥  
 नवे नेहशुं एहने जे निहाले, त्रिधा ताप संताप ते  
 दूर टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, मुने  
 मानखो तेहनो लागे मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना  
 दीन बंधु दयानी, प्राणी पुण्यपामी सुणो जैनवाणी ॥  
 लही दुर्लजं मानवं ए शरीरं, मुधा कां गमो छो  
 बुधबोध हीरं ॥ ११ ॥ मदे जेह माता पड्या  
 मोह पासे, धने जेह धाता विषय ने विलासे ॥  
 मुंजाया मुग्ध माया तणा फंद मांही, मिथ्या ते  
 ग्रस्या शुद्धने तेन चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ

धर्म धोरी, तंजी कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ जजी  
 शुद्धने ते लहे शुद्ध हेतु, थाय तेह मिथ्यातनो  
 धूमकेतु ॥ १३ ॥ वसी वासना जेहनी जैन वयणे,  
 नावे आमलो तेहने कोइ नयणे ॥ जेहनां चित्त  
 सिद्धांतमांहे रमेछे, किम तेह जूला कहोने जमेठे  
 ॥ १४ ॥ मिथ्याते लीना तेहने ते गमेठे, दोषी  
 जीवना ते जिहां तिहां दमेठे ॥ फरी छाख चोराशी  
 ना फेरमांहे, विनानाथ तेहने धरे कोणवाहे ॥ १५ ॥  
 जिणे जैन सिद्धांतनी युक्ति जाणी, कहो ने कोइ  
 तेहने गमेअन्यवाणी ॥ हीरे जेहदयो ओलखी हेत  
 आणी, कहो किम ते संग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥  
 देइ देशना ने प्रजुतीर्थ थापे, जग जंतु बन्धु पणे  
 बोध आपे ॥ मही मंडले विचरे जेम वायु, पुरुं भोग  
 वी एकसो वर्ष आयु ॥ १७ ॥ मासे श्रावणे शैल समे  
 त शृंगे, वर्याश्वेत पट्टी दिने मुक्ति संगे ॥ प्रजु  
 जीड जंजन नामे जजंता, भांजे जीरु ने सुख  
 आपे अनंता ॥ १८ ॥ सेवो शुद्ध बुद्धे सदा बोध  
 दाता, भजो जाव जक्ते प्रजु चूत त्राता ॥ सेव्यो  
 हेजशुं एह सहजे सधारे, पूज्यो प्रेमशुं पापना  
 बंधवारे ॥ १९ ॥ बधे वन्दतां संपदा जे वधारे, धरयुं



ध्यानमां सेवकां बाहे धारे ॥ अचर्यो उद्धटे आपदा-  
 थी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह संसार तारे ॥ २० ॥  
 नम्यो नेहशुं जेह नवे निद्धि आपे, कीजे चाकरी  
 तो चारे गति कापे ॥ जोतां जेहनी आदि कोई न  
 जाणे, कवि तेहना गुण केता वखाणे ॥ २१ ॥ नमो  
 नाथ अनाथ सनाथ कारी, नमस्ते अरूपी बहु  
 रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा तमा सिद्धि भर्ता, नमो  
 पारगामी नमो सौख्यकर्ता ॥ २२ ॥ नमो मुक्ति  
 दाता नमो तुं विधाता, नमो विश्वनेता नमो तुं वि-  
 ख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवेदी नमस्ते, नमो शं-  
 करो सर्व व्यापी नमस्ते ॥ २३ ॥ सेढी वेत्रवत्योप  
 कंठे दिदारु, खेहुंहरिआलुं वसे गाम वारु ॥ राजे  
 तत्र त्रेविसमो तीर्थराय, जेहना नामथी कोटि क-  
 ल्याण थाय ॥ २४ ॥ धरणेन्द्र पद्मावती ने पसाय,  
 सदा संघना विघ्नदूरे पलाय ॥ उदयरत्न चाखे गा-  
 ता पार्श्वस्वामी, पूरी आज में तो नवे निद्धि  
 पामी ॥ २५ ॥

॥ इति श्रीजीरुभंजन पार्श्वनाथ छंद  
 संपूर्णम् ॥ ४१ ॥

## ॥ अथ श्री आदि जिनेश्वर को पारणो ॥

॥ आदि जिनेश्वर कियो पारणो । आ रस शेल-  
ही ॥ आदि० ॥ टेक ॥ गरुा एकसो आठ शेलकी ।  
रस जरिया छे नीका ॥ उलट जात्र श्रेयांस वहिरावे ।  
मांनदिवी आवूकोरे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुर्जी  
वाज रही हे । सोनैयारी वरखा ॥ वारेमाससुं कियो  
पारणो । गई चूख सब तिरखा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ ऋद्धि  
सिद्धि कारज मनो कामना । घर घर मगलाचार ॥  
हुनियां हरख वधामणा सिरे । आखात्रोज तिवाररे ॥  
आ० ॥ ३ ॥ संकट काटो विघननिवारो । राखो हमारी  
लाज ॥ बेकरजोकी नान्हूकहिता । ऋपभ देव म-  
हाराजरे ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ इति श्री आदि जिनेश्वर को पारणो सपूर्णम् ॥ ४१ ॥

## अथ श्री महावीर स्वामी को पारणो

॥ दोहा ॥

श्री अरिहंत अनंत गुण । अतिशय पूरण गात्र ॥  
मुनि जे ज्ञानी जे सयमी । ते कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥

पात्रतणी अनुमोदना । करतो जीरण शेठ ॥

श्रावक अच्युत गति लहे । नव ग्रेवे कांहेठ ॥ १ ॥

दश चउमासा वीरजी । विचरत संयम वास ॥

वेशाळा पुर आविया । इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

एकघर घोमा हाथियाजी ( एहनी देशी ) ॥ चौ-

माशी एह इग्यारमीजी । विचरत साहस धीर ॥

वेशाळापुर वाहिरेजी । आठ्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥

( जगत गुरु त्रिशला नन्दनजी ) जलें में जेठ्या

श्रीजिनराय । सखीरी चोक पुरावो आय ॥ मेरेजाग

अनोपम थाय ॥ ( जग० ) ॥ २ ॥ बलदेव नो ठे देह

रो जी । तिहां प्रभु कावसग लीध ॥ पञ्चक्खाण

चउमासनोजी । स्वामी ए तपकीध ॥ ( जग० ) ॥ ३ ॥

जीरण शेठ तिहां रहेजी । पाले श्रावक धर्म ॥ आकारे

तिण ओलख्याजी । जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ( जग० )

॥ ४ ॥ आज अठे उपवासियाजी । स्वामी श्री वर्द्ध

मान ॥ काढही सही प्रभु जीमसे जी । सै हथ देस्युं

दान ॥ ( जग० ) ॥ ५ ॥ सदा शेठ इमर्चितवेजी ।

होसी सफल मुक्त आस ॥ पद्द मास गिणता थकां

जी । पुरी थई चौमास ॥ ( जग० ) ॥ ६ ॥ सामग्री

आहार नीजी । जीरण कीध तैयार ॥ प्रचुनो मारग दे  
 खतो जी । वैठो घरने वार ॥ ( जग० ) ॥ ७ ॥ घरि  
 आवैठे पाहुणा जी । निहुत्या एकण वार ॥ प्रचुजी  
 कान पधारसी जी । में निहुत्या वारं वार ॥ ( जग० )  
 ॥ ८ ॥ पीठे करिस्युं पारणोजी । हुं प्रचुने पमिलाज ।  
 होय मनोरथ एह्वोजी । तो बिन वरसे आत्त ॥  
 ( जग० ) ॥ ९ ॥ अवसरउठ्या गोचरी जी । श्री-  
 सिद्धारथ पूत । वेशालापुर आवतांजी । पूरण घरेय  
 पहुत्त ॥ ( जग० ) ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नहीं जी ।  
 जगम तीरथ एह ॥ चेमीनें कहे एह्वो जी । कांश्क  
 जिद्दादेह ॥ ( जग० ) ॥ ११ ॥ चाटूजरने वाकुलाजी ।  
 प्रचुने आणी दीध ॥ निरागी तेही लियाजी । तिहां  
 प्रचु पारणो कीध ॥ ( जग० ) ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडु-  
 चीजी । जयबोले करजोमि । हेम शृष्टिहुई तिहांजी ।  
 साढी वारह कोडि ॥ ( जग० ) ॥ १३ ॥ कहो शेष तुझे  
 स्युंदीयोजी । कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रतें इम क-  
 हे जी । में वैराई हीर ॥ ( जग० ) ॥ १४ ॥ राजादिक  
 सहु ए कहेजी । धन २ पूरण शेष ॥ जंची करणी  
 ते करीजी । अवर सहु तुज हेठ ॥ ( जग० ) ॥ १५ ॥  
 जीरण शेष सुणे तवेजी । वाजित्र डुंडुची नाद ॥

अनन्त कियो किहां पारणो जी । मनमें थयो विख-  
चाद ॥ (जग०) ॥१६॥ हुंजग में अज्ञागियोजी । मेरे  
नाया साम ॥ कटपवृक्ष किम पामियेजी । मारुमंरुज  
ठाम ॥ (जग०) ॥१७॥ जेता मनोरथ में कियाजी । ते-  
तारह्या मनमांहि ॥ निरधन जिम श चिंतवेजी । तिम  
तिम निरफलथाहि ॥ (जग०) ॥ १८ ॥ स्वामी तिहां  
कियो पारणोजी । कियो अनेथ विहार ॥ आयापाश  
संतानियाजी । तिहां मुनि केवल धार ॥ (जग०) ॥१९॥  
वैशाला पूर राजियाजी । लोका सुं आणंद ॥ राय  
प्रश्न पुछे तिहांजी । सुगुरु चरण अरविंद ॥ (जग०)  
॥ २० ॥ मेरे नगर में को अठेजी । जीव पुन्य ज-  
शवन्त ॥ कहे केवली आज तोजी । जीरण शेष  
महंत ॥ (जग०) ॥२१॥ राय कहे किण कारणेजी ।  
जीरण शेष महंत ॥ दान दियो जिन वीरनेजी ।  
पूरण ते जसवंत ॥ ( जग० ) ॥ २२ ॥ रायप्रते कहे  
केवलीजी । पूरण दीनो दान ॥ हेमवृष्टिफल तेहनें  
जी । अवरन कोई प्रमाण ॥ (जग०) ॥२३॥ देवल्लो-  
कतिणवार में जी । जीरण घाटयो बन्ध ॥ विना दान  
दीना लह्योजी । उत्तम फल सम्बन्ध ॥ ( जग० )  
॥ २४ ॥ घडी एक सुर डुंडुजीजी । जो न सुणन्तो

कान ॥ लहितो जीरण तो सहीजी । केवल अवि-  
चलठाण ॥ (जग०) ॥ १५ ॥ राजा जीरण ने दियो  
जी । अधिक मान सन्मान ॥ मुख्यनगर में थापियो  
जी । जोवो पुन्य प्रमाण ॥ ( जग० ) ॥ १६ ॥ दान  
दियो सुपात्र नेजी । ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्र दान  
अनुमोदताजी । जीरण जिम फल थाय ॥ (जग०)  
॥ १७ ॥ इमजाणी अनुमोदनाजी । दानसुपात्र रसाख ॥  
दान देवे सुपात्रनेजी । तेहने नमे मुनिमाल ॥  
( जग० ) ॥ १८ ॥

॥ इति श्री महावीर स्वामी को  
पारणो संपूर्णम् ॥ ४३ ॥

॥ अथ श्रीपद्मावती आलोयण  
सज्भाय ॥

द्विवेराणी पदमावती । जीव राशि खमावे ॥ जा-  
णपणुं जगदोहिलो । इणवेला आवे ॥ १ ॥ ( तेमुऊ  
मिच्छामिडुकरुं ) ॥ अरिहंतनी साख । जेमें जीव  
विराधिया । चउरासीलाख ॥ २ ॥ ( ते० ) ॥ सातला-  
ख पृथ्वीतणा । साते अप्पकाय ॥ सातलाख तेउका-  
यना साते बलिवाय ॥ ३ ॥ ( ते० ) ॥ दस प्रत्येक

वनस्पती । चउदह साधारण ॥ बिति चउरिंझि जीव  
 ना । बेबेलाख बिचार ॥ ४ ॥ ( ते० ) ॥ देवतातिरयंच  
 नारकी । चार २ प्रकासी ॥ चउदह लाख मनुष्य  
 ना । एलाख चउरासी ॥ ५ ॥ ( ते० ) ॥ इणजव पर-  
 जव सेविया । जेपाप अढार ॥ त्रिविध २ करिपरिहरं  
 । पुरगतिदातार ॥ ६ ॥ ( ते० ) ॥ हिंसा कीधी जी-  
 वनी । बोढ्या मिरखावाद ॥ दोष अदत्ता दान ना ।  
 मैथुन उनमाद ॥ ७ ॥ ( ते० ) ॥ प्ररिग्रह मेढ्यो  
 कारिमो । कीधो क्रोधविशेष ॥ मान माया लोभ में  
 किया । वलि राग ने द्वेष ॥ ८ ॥ ( ते० ) ॥ कलहकरी  
 जीव दूहव्या । दीना कूमा कलंक ॥ निन्दा कीधी पा-  
 रकी । रति अरति निस्संक ॥ ९ ॥ ( ते० ) ॥ चाकी खाधी  
 चोतरो । कीधा थापणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । ज-  
 लो आण्यो जरोसो ॥ १० ॥ ( ते० ) ॥ षाटकी ने ज-  
 व में किया । जिवना वध घात ॥ चिन्मीमार जव  
 चिडकला । मारथा दिनरात ॥ ११ ॥ ( ते० ) ॥  
 माठीगरभव माछला । जाढ्या जलवास ॥ धीवर  
 जील कोलीजवे । मृग मारथा पास ॥ १२ ॥  
 ( ते० ) ॥ काजी मुद्धानेभवे । पढी मंत्र कठोर ॥ जीव  
 अनेक जवेकिया । कीधा पाप अघोर ॥ १३ ॥ ( ते० )

कोटवालने जव में किया । अकराकर दंरु ॥  
 बंदीवान मराविया । कोरड़ा ठकी रुंरु ॥ १४ ॥  
 ( ते० ) ॥ परमा धरमी नइ जवे । दीधा नारकी  
 दुक्ख ॥ छेदन जेदन वेदना । ताम्बा अतिति-  
 क्व ॥ १५ ॥ ( ते० ) ॥ कुंजारने जवमें किया ।  
 निम्माइ पचाव्या ॥ तेली जव तिल पीलिया ।  
 पापी पेट भराय ॥ १६ ॥ ( ते० ) ॥ हालीने  
 जव हल खड्या । फाड्या पृथ्वीपेट ॥ सूरु-  
 निदान घणा किया । दीधा बलद चपेट ॥ १७ ॥  
 ( ते० ) ॥ मालीनें भव रोपिया । नानाविध वृक्ष ॥  
 मूल पत्र फल फूलना । लागा पापना लक्ष् ॥ १८ ॥  
 ( ते० ) ॥ अधोवाई आंगमी । जरया अधिका जार ॥  
 पोठी जंट कीना पड्या । दया नावि लिगार ॥ १९ ॥  
 ( ते० ) ॥ ठीपाने जव छेतरयो । कीधा रांगणी  
 पास ॥ अगनि आरंज किया घणा । धातुर्वाद अ-  
 ज्यास ॥ २० ॥ ( ते० ) ॥ सूर पणे रण ऊऊता । मा-  
 रया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस भख्या घणा ।  
 खादा मूलने कंद ॥ २१ ॥ ( ते० ) ॥ खाण खणावी  
 धातुनी । पाणी कुलंच्या ॥ आरंज कीधा अति-  
 घणा । पोते पापज संच्या ॥ २२ ॥ ( ते० ) ॥ अगार-



कर्म किया बली । घरमे दव दीधा ॥ सुंस लेई वीत  
 रागना । कूरा कोशज पीधा ॥२३॥ ( ते० ) ॥ वि-  
 द्धी जव उंदर लिया । गीलोई हत्यारी ॥ मूढ ग-  
 मार तणें जवे । में जूं लीख मारी ॥२४॥ ( ते० ) ॥  
 चाड जूंजा तणें जवे । एकेझीजीव ॥ ज्वारीचिणा-  
 गहुं सेकिया । पाकंता रीव ॥ २५ ॥ ( ते० ) ॥ खांरु-  
 ण पीसण गारना । आरंज अनेक ॥ रांधण इंध-  
 ण आगिना । किया पाप उदेक ॥ २६ ॥ ( ते० ) ॥  
 विकथा च्यार किधी बली । सेव्या पंच प्रमाद ॥  
 इष्ट वियोग पड्यां किया । रोदन विषवाद ॥ २७ ॥  
 ( ते० ) ॥ साधुअनें श्रावक तणा । वृतलेईजागा ॥  
 मूख अने उत्तर तणा । दूषण मुऊ लागा ॥ २८ ॥  
 ( ते० ) ॥ सांप विंतु सिंह चीतरा । शिकारानें शम-  
 ली ॥ हिंसक जीव तणें जवे । हिंसा किधी सब-  
 ली ॥ २९ ॥ ( ते० ) ॥ सूआवडे दूषण घणा । बलि-  
 गरज गलाव्या ॥ जीवाणी ढोढ्या घणा । शीलवृत  
 जंजाव्या ॥ ३० ॥ ( ते० ) ॥ भव अनंत जमता थ-  
 कां । किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध २ करि वो-  
 सरुं ॥ तिणसुं प्रतिबंध ॥ ३१ ॥ ( ते० ) ॥ इणजव प-  
 रजव इणपरें ॥ कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ क-

રિ વોલરું । કરું જનમ પવિત્ર ॥૩૨॥ (તે૦) ॥ રાગ-  
વૈરાળી જે સુણે । એત્રિજીઢાલ ॥ સમય સુંદર કહે  
પાપથી । તૂટે તતકાલ ॥૩૩॥ (તે૦) ॥

॥ ઇતિ શ્રીપદમાવતી આલોચણ સિઙ્ગાય  
સપૂર્ણમ્ ॥ ૪૪ ॥

## ॥ અથ શ્રી સર્વ પાપાદિક આલોચણ સ્તવન ॥

થેકર જોમી વિનવૂજી । સુણિ સ્વામીનુત્રિદીન ॥  
કૂન કપટ મૂંકી કરીજી । વાત કહું આપવોત ॥૧॥  
કૃપાનાથ મુજ વિનતી અવધાર । તું સમરથ ત્રિ-  
જુવન ધર્ણીજી ॥ મુજને હુત્તર તાર ॥ કૃપા ॥૨॥  
જવસાયર જમતાં થકાંજી । દીઠાં હુઃખ અનંત ॥  
જાગ સંયોગે જેટિયોજી । જવ જજણ જગવત ॥  
કૃપા ॥ ૩ ॥ જે હુઃખ જાંજે આપણોજી । તેહને  
કહિયે હુઃખ ॥ પરહુઃખ ભંજણ તું સુણ્યોજી । સેવ-  
કને થો સુઃખ ॥ કૃપા ॥ ૪ ॥ આલોચણ લીધા-  
પણેજી । જીવ રુઝે સસાર ॥ રૂપી લક્ષ્મણા મહાસતી-  
જી । એહ સુણો અધિકાર ॥ કૃપા ॥ ૫ ॥ દૂપમ-  
કાલે દોહિલોજી । સૂધો ગુરુ સંયોગ ॥ પરમારથ

पीछे नहीं जी । गरुर प्रवाही लोग ॥ कृपा० ॥ ६ ॥  
 तिण तुऊ आगलि आपणाजी । पाप आलोउं आज  
 ॥ माय बाप आगलि बोलतांजी । बालक केही ला-  
 ज ॥ कृपा० ॥ ७ ॥ जिन धर्म स सहू कहेजी । आपे  
 अपणी बात ॥ समाचारी जूई स जी । संशय प-  
 रुं मिथ्यात ॥ कृपा० ॥ ८ ॥ जाण अजाण पणें क-  
 रीजी । बोढ्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग उमाव-  
 तांजी ॥ हारयो जनम निटोल ॥ कृपा० ॥ ९ ॥  
 जगवंत भाख्यो ते किहांजी । किहां मुऊ करणी  
 एह ॥ गज पाखर खरकिम सहेजी । सबल विमास-  
 ण तेह ॥ कृपा० ॥ १० ॥ आप परुपुं आकरोजी ।  
 जाणें लोक महंत ॥ पिण न करुं परमादीयोजी ॥  
 मासा हस दृष्टांत ॥ कृपा० ॥ ११ ॥ काल अनंते  
 में लह्याजी । तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे  
 पामियाजी । किहां जई करुं पुकार ॥ कृपा० ॥ १२ ॥  
 जाणुं उत्कृष्टी करुंजी । उद्यत करुंअ विहार ॥  
 धीरज जीव धरे नहीं जी । पोते बहु संसार ॥ कृपा०  
 ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुऊ आकरोजी । नगमें रूडी-  
 वात ॥ परनंदा करता थकांजी । जाये दिनने रा-  
 त ॥ कृपा० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिलीजी ।

आलस आणें जीव ॥ धरम पखे धंधे पड्योजी ।  
 नरगे करस्ये रीव ॥ कृपा० ॥ १५ ॥ आणहुंता गु-  
 णको कहेजी । तो हरखुं निशिदीश ॥ को हित  
 सीख जली कहेजी । तो मन आणुं रीश ॥ कृपा०  
 ॥ १६ ॥ वाद जणी विद्या जणीजी । पर रंजण उ-  
 पदेश ॥ मन संवेग धरयो नहींजी । किम संसार  
 तरेश ॥ कृपा० ॥ १७ ॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतां-  
 जी । सुणता करम विपाक ॥ खिण एक मनमां-  
 हि उपजेजी । मुळ मरकट वैराग ॥ कृपा० ॥ १८ ॥  
 त्रिविध श करि ऊचरंजी । जगवंत तुह्य हजुर ॥  
 वारवार जांजु बलिजी । दूटक वारो दूर ॥  
 ॥ कृपा० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचितांजी ।  
 कीधा आरंज कोड ॥ जयणा न करी जी-  
 वनीजी । देव दयापर छोरु ॥ कृपा० ॥ २० ॥ व-  
 चन दोष व्यापक कहाजी । दाख्या अनरथ दंड ॥  
 कूरु कपट बहु केलवीजी । व्रत कीधा शत खंरु ॥  
 कृपा० ॥ २१ ॥ आणदीधो लीजे त्रिणोजी । तोही  
 अदत्ता दान ॥ तेदूपण लागी घणांजी । गिणतां-  
 नावे ग्यान ॥ कृपा० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं  
 जी । राचेरमणी रूप ॥ काम विटवण सी कहूंजी ।

ते तूं जाणे सरूप ॥ कृपा० ॥ २३ ॥ माया ममता में  
 पड्योजी । कीधो अधिको लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो-  
 कारमोजी । न चढी संयम सोच ॥ कृपा० ॥ २४ ॥  
 लागा मुक्त ने लाबचेजी । रात्रि जोजन दोष ॥  
 में मन मूक्यो माहुरोजी । न धर्यो धर्म संतोष  
 ॥ कृपा० ॥ २५ ॥ इणभव परजव दूहट्याजी । जीव  
 चौराशी लाख ॥ ते मुक्त मिच्छामी डुक्कमंजी ।  
 जगवन्त तोरी साख ॥ कृपा० ॥ २६ ॥ करमा  
 दान पत्तरै कल्याजी । प्रगट अठारेपाप ॥ जे में की-  
 धा ते सहजुजी ॥ बगस २ माई बाप ॥ कृपा० ॥ २७ ॥  
 मुक्त आधार ठे एटलोजी । सरद हिष्ठाठे शुद्ध ॥  
 जिन धर्म मीठो जगत में जी । जिम शाकर ने दूध  
 ॥ कृपा० ॥ २८ ॥ रिषभ देव तुं राजियोजी । सेत्रुंज-  
 गिरि सिणगार ॥ पाप आलोया आपणाजी । कर-  
 प्रचु मोरी सार ॥ कृपा० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-  
 धर्मनोजी । पाप आलोयांजाय ॥ मनसुं मिच्छामि-  
 डुक्कमंजी । देतां दूर पुलाय ॥ कृपा० ॥ ३० ॥ तुं  
 गति तुं मति तूं धणीजी । तुं साहिब तुं देव ॥  
 आणधरुं सिर ताहरीजी । जव २ ताहरो सेव ॥  
 कृपा० ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इस चढिय सेत्रुंज चर-

ਭੇਦਿਆ ਨਾਮਿ ਨੰਦਨ ਜਿਨਤਣਾ । ਕਰ ਜੋਮਿ ਆਦਿ-  
 ਜਿਘਾਂਦ ਆਗੇ ਪਾਪ ਆਲੋਯਾ ਆਪਣਾ ॥ ਸ਼੍ਰੀਪੂਯ-  
 ਜਿਨਚੰਦ ਸੂਰਿ ਸਦ੍ਗੁਰੁ ਪ੍ਰਥਮ ਸਿਧਿ ਸੁਜਸਬਣੇ ।  
 ਵਾਧਿ ਸਕਲ ਚੰਦ ਸੁਸੀਸ ਵਾਚਕੁ ਸਮਧਿ ਸੁੰਦਰ ਗ-  
 ਣਿ ਜਣੇ ॥ ੩੨ ॥

॥ ਇਤਿ ਸ਼੍ਰੀਸਰਵਪਾਪ ਆਲੋਯਣਾ ਗਰਜਿਤ ਸਤਵਨੰ  
 ਸੰਪੂਰਨੰ ॥ ੪੫ ॥

॥ ਅਥ ਕ੍ਰੋਧਨੀ ਸਯਾਯ ॥

ਕਰੁਣਾਂ ਫਲ ਠੇ ਕ੍ਰੋਧਨਾ । ਭਾਨੀ ਐਸ ਵਾਲੇ ॥ ਰੀ-  
 ਸ਼ ਤਣੇ ਰਸ ਜਾਣੀਏ । ਫਲਾਫਲ ਤੋਲੇ ॥ ਕਛਵਾਂ ॥ ੧ ॥  
 ਕ੍ਰੋਧੇ ਕ੍ਰੋਧ ਪੂਰਵ ਤਣੁ । ਸੰਜਮ ਫਲਜਾਯ ॥ ਕ੍ਰੋਧ ਸ-  
 ਦ੍ਰਿਤਿ ਤਧ ਜੇ ਕਰੇ । ਤੇਨੋ ਲੇਖੇ ਨ ਥਾਯ ॥ ਕਰੁ ॥ ੨ ॥  
 ਸਾਧੁ ਬਧੋਂ ਤਪਿਯੋ ਹੁਤੋ । ਧਰਤੋ ਮਨ ਬੈਰਾਗ ॥ ਸਿ-  
 ਧਿਨਾ ਕ੍ਰੋਧ ਥਕੀ ਥਯੋ । ਚੰਦੁ ਕੋਸ਼ਿਯੋ ਨਾਗ ॥ ਕਰੁ ॥  
 ੩ ॥ ਥਾਗ ਭਠੇ ਜੇ ਧਰ ਥਕੀ । ਤੇ ਪਹੇਲੁੰ ਧਰਵਾਲੇ ॥  
 ਜਲਨੋ ਜੋਗ ਜੋ ਨਵਿ ਮਲੇ । ਤੋ ਪਾਸੇਨੁੰ ਪਰਜਾਲੇ ॥  
 ਕਰੁ ॥ ੪ ॥ ਕ੍ਰੋਧ ਤਣੀ ਗਤਿ ਐਵੀ । ਕਹੇ ਕੇਵਲ ਨਾ-  
 ਣੀ ॥ ਫਾਧ ਕਰੇ ਜੇ ਹੇਤਨੀ । ਜਾਲਵ ਜੋ ਐਸ ਜਾਣੀ ॥  
 ਕਛ ॥ ੫ ॥ ਠਧ ਰਤਨ ਕਹੇ ਕ੍ਰੋਧਨੇ । ਕਾਛਜੋ ਗ-

ले साही ॥ काया करजोनिरमली । उपशम रस  
नहीं ॥ करुण ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीक्रोधनी सज्जाय सम्पूर्णम् ॥ ४६ ॥

॥ अथ श्री माननी सज्जाय ॥

रेजीव मानन कीजिये । मानें विनय न आवेरे ॥  
विनय विना विद्या नहीं । तो किम समकित पोवेरे  
॥ रेजीवण ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं । चारित्र-  
विण नहीं मुक्तिरे ॥ मुक्तिनां सुखठे शाश्वतां । ते  
किम लहिये जुक्तिरे ॥ रेजीवण ॥ २ ॥ विनय बन्धो सं-  
सारमां । गुणमा अधिकारी रे ॥ मानें गुण जाये ग  
ली । प्राणी जो जो विचारीरे ॥ रेजीवण ॥ ३ ॥ मान-  
करयुं जे रावणें । तेतो राममाचोरे ॥ डुर्योधन गर्वे करी ।  
ते अंते सत्रि हारचोरे ॥ रेजीवण ॥ ४ ॥ सूखां लाकरा  
सारिखो दुख दायी ए खोटोरे ॥ उदयारत्न कहे  
माननें देजो तमे देश वटोरे ॥ रेजीवण ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमाननी सज्जाय सम्पूर्णम् ॥ ४७ ॥

॥ अथ श्रीमायानी सज्जाय ॥

समकितनुं मूल जाणीयेजी । सत्य वचन सा-  
क्षात ॥ साचामां समकित वसेजी । मायामें मि-

ધ્યાતરે ॥ ( પ્રાણી મકરિસ માયા લગાર ) ॥૧॥ મુખ  
 મીઠો જૂઠો મનેંજી । કૂમ કપટ નોરે કોટ ॥ જીર્જે-  
 તો જી જી કરેજી । ચિતમા તાકે ચોટરે ॥ પ્રાણી૦  
 ॥૨॥ આપ ગરજે આઘો પમેજી । પિણ ન ધરે વિશ્વાસ ॥  
 મનસું રાખે આંતરોજી । એ માયા નો પાસરે ॥  
 પ્રાણી૦ ॥ ૩ ॥ જેદશું વાંધે પ્રીતડીજી । તેદશુ રહે  
 પ્રતિકૂલ ॥ મેલ ન ઠમે મન તણોજી । એ માયા નો  
 મૂલરે ॥ પ્રાણી૦ ॥૪॥ તપ કીધો માયા કરીજી ।  
 મિત્ર શુ રાખેરે જેદ ॥ મહિજિણેસર જાણજોજી ।  
 તો પામ્યા સ્ત્રી વેદરે ॥ પ્રાણી૦ ॥૫॥ ઉદય રત્ન કહે  
 સાંજલોજી । મેલો માયાની વુઝ ॥ મુક્તિ પુરી  
 જાવા તણોજી । એ મારગઠે શુઝરે ॥ પ્રાણી૦ ॥૬॥  
 ॥ ઇતિ શ્રીમાયાની સજ્જાય સમ્પૂર્ણમ્ ॥ ૪૦ ॥

## ॥ અથ શ્રીલોચની સજ્જાય ॥

તુમે લક્ષણ જોડ્યો લોચ નારે । લોભે જન પામે સ્વો-  
 જનારે ॥ લોભે કાહ્યા મન કોહલા કરેરે । લોભે દુર-  
 ઘટ પંથે સંચેરે ॥ તુમે૦ ॥૧॥ તજે લોચ તેના લેઝું  
 જામણારે । વલિ પાય નમી ને કરુ સ્વામણારે ॥ લો-  
 બે મરજાદા ન રહે કેહનીરે । તુમે સંગન મેલો તે



हनीरे ॥ तुमे० ॥१॥ लोचे घर मेहली रणमां मरेरे।  
लोचे जंच ते नीचुं आचरेरे ॥ लोभे पाप जणी  
पगला भरे रे । लोचे अकारज करतां न ओसरे  
रे ॥ तुमे० ॥ ३ ॥ लोचे मनकुं न रहे निरमलुं रे ।  
लोचे सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोचे न रहे प्रेतने  
पावतुं रे। लोचे धन मेले बहु एगतुं रे॥ तुमे० ॥४॥ लोभे  
पुत्र प्रते पिता हणे रे । लोचें हत्या पातिका न वि गणे  
रे ॥ ते तो दाम तणे लोचें करी रे । ऊपर मणिधर  
थार्ये ते मरी रे ॥ तुमे० ॥५॥ जोतां लोचने थोच दी-  
से नहीं रे । एहवो सूत्र सिद्धांते कह्युं सहीरे ॥ लोचे  
चक्री संजुम नामे जुओरे । ते तो समुद्र माहे वूमी  
सुओरे ॥ तुमे० ॥६॥ इम जाणीने लोचने छंड ज्योरे ।  
एक धर्मसुं समता मंड ज्योरे ॥ कवि उदय रत्न जाखे  
मुदारे । वडुं लोच तजे तेहने सदारे ॥ तुमे० ॥७॥

॥ इति श्री लोचनी सज्जाय सम्पूर्णम् ॥४॥

। अथ श्री गोडी पार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

॥ दोहा ॥

श्रीजिन वदन निवासना, श्रीसरसत सम रेह ॥

तिर्थकर तेवीसना, गाइस हुं गुण गेह ॥ १ ॥

गुण गरवो गोमी पुरो, गाजे गोमी राय ॥  
 संकट हरण संपत्ति करण, स्मरण करुं सुहाय ॥१॥  
 सम काखे प्रतिमा तिने, शुभ मुहूर्त शुभ वार ॥  
 महिमा पसरी महियले, पूजीस पाटण मांय ॥३॥  
 परचा श्री प्रभु पासना, प्रगट ठे प्रति मांय ॥  
 मति सारे हुं छोरु मद, आखिस गुण करि आय ॥४॥

॥ ढाल पहिली ॥

देसां श्रीहर देश ठे काशी, नगरी वाणारसी  
 वासी रे ॥ जिनवर जयकारी, हुं जाळं एहनी वारी  
 रे ॥ जिनवरण ॥ १ ॥ राजकरे अश्वसेन नरिंदा,  
 तेज रुपे अजि नवा अंटा रे ॥ जिनवरण ॥ गुणनो  
 खाणी मिठी वाणो, ब्रम्हधाणिणी वामा राणी रे ॥  
 जिनवरण ॥ २ ॥ तेहनी कुखे प्रभु अवतरिया, शुभ  
 रुप सुगुण पर जरिया रे ॥ जिनवरण ॥ पोस वदी  
 दशमी दिन प्रभु जाया, तेज रवि तेज हराया रे ॥  
 जिनवरण ॥ ३ ॥ ठपन दिशा कंवरी मिल गायो,  
 खण नारकियां सुख पायो रे ॥ जिनवरण ॥ जन्मम-  
 होच्छव इन्द्रे किनो, तिहां पास कुंवर नाम दिनो  
 रे ॥ जिनवरण ॥ ४ ॥ जोवन में कन्या परणार्ई,

परजावती नाम कहाई रे ॥ जिनवरण ॥ वैरागे प्रभु  
 दीक्षा लिनी, हुवा केवल ज्ञान सवाई रे ॥ जिनवरण  
 ॥५॥ सो वरसारो प्रभु आजखो पायो, प्रभु पांचमी  
 गत संभारी रे ॥ जिनवरण ॥ अनंता दर्शन ज्ञान  
 अरूपी, समता धर सिद्ध सरूपी रे ॥ जिनवरण ॥६॥  
 जोती सरूप जनम दाय किनो, अजर अमर पद  
 लिनो रे ॥ जिनवरण ॥ पूजीजे प्रभु ठामों ठामें,  
 गवरी गाजे गोमी गामे रे ॥ जिनवरण ॥ ७ ॥  
 सुणो भवि यण तुम गोमी केरा, भावसुं सब बिंब  
 जलेरा रे ॥ जिनवरण ॥ ८ ॥

॥ इति ढाल पहिली संपूर्णम् ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

श्री संखेसर पास जिनेसरण ॥ एदेशी ॥

थापीरे प्रतिमा तीन के, मोमुदावाद में ॥ अण  
 समो बिंबन कोय, दिसेरे प्रतिमा दमे ॥ १ ॥ मूरत  
 गोमी सामनी, तुरके लेगया ॥ धरती खण ने तेह,  
 राखी रे प्रतिमा सही ॥ २ ॥ एक दिन सोणे मांहि,  
 जहा आवि कहे ॥ गोमी पास नो बिंब, ते धरती  
 मांहि रहे ॥ ३ ॥ प्रगट करजे तेह, तुरक तुं तुरकमा ॥

नहीं तर परसे चीड, देशस दुःख वंकरा ॥ ४ ॥  
 पर कर वासी मेघो, पाटण आवसे ॥ अकृत तिलक  
 छिलारु, के सेनाण पावसे ॥ ५ ॥ पास जिनेसर  
 केरिओ, प्रतिमा देयजो ॥ पूरा पांचसे दामके, गुणने  
 लेहजो ॥ ६ ॥ मनसुं करते वात, सहु चित्त सरदही ॥  
 सुणे मांहि आय के, जह्म रायां कही ॥ ७ ॥ ह्वे  
 मेघाने हाथे विंव, जिनवर तणो ॥ आसे शणविध  
 एह, चरित्र जवि यण सुणो ॥ ८ ॥

॥ इति ढाढ दूसरी संपूर्णम् ॥

॥ ढाढ तीसरी ॥

इणीयज जरत सु क्षेत्रमें, परकर नामे देशरे ॥  
 सहु देशां शिर रो सेहरो, नहीं तिहा दुःख पर वेशरे ॥  
 इणी० ॥ १ ॥ राज करे तिहां राजवी, नरपति राय  
 खंगार रे ॥ सूर धीर अति साहजी, जात तणे  
 पंवार रे ॥ इणी० ॥ २ ॥ तिण देशे एक नगर  
 ठे, वुंदेसर एक गाम रे ॥ धरती नार तणे संगे,  
 विध रच्या तिलक सुठामरे ॥ इणी० ॥ ३ ॥ उण  
 देशे काजल इसो, नामे ठे मोटो साहरे ॥ कपटी  
 कुड़ अवगुण जरयो, लोजी लोज अथाग रे ॥

इणी० ॥ ४ ॥ बेनी काजल साहनी, मेघा साहने  
 दीधरे ॥ सारा वनेवी तणो, सगपण सखरो कीधरे ॥  
 इणी० ॥ ५ ॥ मांहो मांह सुखे घणो, गमावे दिन  
 रातेरे ॥ एक दिवस मेघा जणी, काजल जाखी  
 आ वातरे ॥ इणी० ॥ ६ ॥ धन लेई पाटण तुमे, जा-  
 थो नी व्यापार काजरे ॥ मानी बात साह मेघजी,  
 चाढ्या तुरत समाजरे ॥ इणी० ॥ ७ ॥ वैतांने  
 सुगन सखरा हुवा, सय दुई से काम सिद्धरे ॥ अनुक्रमे  
 पाटण आविया, आसे यहां नवि निद्धरे ॥ इणी०  
 ॥ ८ ॥ उत्तारा मेघे दिया, केरा तंबु ताणरे ॥ राते  
 सुणे मांहि कह्यो, बात सहु जहा राणरे ॥ इणी०  
 ॥ ९ ॥ तुरक घरे जिनवर तणी, मूरत महि  
 मां वंतरे ॥ दाम पांच सो देयने, लीजो मन धर  
 खंतरे ॥ इणी० ॥ १० ॥ जहा गयो निज थानके,  
 निशजर जगो सूररे ॥ पाटण केरे चोवटे, तुरक फिरे  
 ठे वनूर रे ॥ इणी० ॥ ११ ॥ जितने दीठा साह  
 मेघजी, सोइ पोता सेनाणरे ॥ हालोनी हम घर  
 साहजी, थांने देखामां जग जाणरे ॥ इणी० ॥ १२ ॥  
 हरख भराणो हिवमो, आया असुरां रे गेहरे ॥

जख हर तेज विराजता, दीठा जिन सस नेहरे ॥  
इणी० ॥ १३ ॥ आमूरत राखो तुमे, दो मुज  
पांचसो दामरे ॥ वेण सुण्या अमृत जिता, उद्धस्यो  
आतम राम रे ॥ इणी० ॥ १४ ॥

॥ इति ढाल तीसरी संपूर्णम् ॥

॥ ढाल चौथी ॥

तुरकांने दामडिया पांचसो, जणे विंव लियो  
मन हरखे रे ॥ मारे जाग्य दिसा अतिजागी, जाग्य  
दिसा अतिजागी, मेंतो आज हुवा वरु जागी रे ॥  
मारे० ॥ १ ॥ जावट मननी जागी, प्रचुजी सुं  
अंतर ले लागीरे ॥ मारे० ॥ समता रुप सोभागी,  
नेरंजण ने ने रागीरे ॥ मारे० ॥ २ ॥ अकल सरुप  
अथागी, मेंतो पायो शिवपुर पागीरे ॥ मारे० ॥  
विमल मुद्रा बेरागी, तवजोग हुवा प्रचु त्यागीरे ॥  
मारे० ॥ ३ ॥ मनरा मनोरथ फलिया, मांने तेवी-  
समां जिनवर मिलियारे ॥ मारे० ॥ दुःख दोहग  
पर करिया, मारा वखत अनोपम फलियारे ॥  
मारे० ॥ ४ ॥ मोतीके नृठा मेशो, मारी प्रगटी  
मुकृत देहारे ॥ मारे० ॥ दिठी प्रचुजीरी देहो,

मारानेण जराणा जाजा नेहोरे ॥ मारेण ॥ ५ ॥ हुवो  
 अधिक उच्छावो, चित्रानी पुगी चावोरे ॥ मारेण ॥  
 निरुपम त्रिचुवन राया, मेंतो पायो पुण्य वा वायोरे ॥  
 मारेण ॥ ६ ॥ गुणमन गुणे गेगाया, मेंतो पास  
 जिनेसर पायारे ॥ मारेण ॥ सुंदर अति सुख दाया,  
 जाया जाया वामा राणीरा जायोरे ॥ मारेण ॥ ७ ॥  
 तीन प्रदिक्कणा दिनी, कर लटके वंदना किनीरे ॥  
 मारेण ॥ द्रव्य जाव पूजा किनी, सहु हाम हियानी  
 सिधीरे ॥ मारेण ॥ ८ ॥ वरि रु वयापारें लिनो, मन  
 मान्या कारजकिनोरे ॥ मारेण ॥ रु जराया उंट तेवी-  
 सो, जिणमांहि राख्या जगदीसोरे ॥ मारेण ॥ ९ ॥  
 पाटण हुंथी सिधाया, अनुक्रमे राय धनपुरे आयारे  
 ॥ मारेण ॥ दाण लेवाने दाणी, आवे अतिहरख  
 जराणीरे ॥ मारेण ॥ १० ॥ गुणियां उंटज लेखे,  
 पण ओछो अधको पेखेरे ॥ मारेण ॥ दाणी अचरज  
 पायो, तब मेघाने बोलायोरे ॥ मारेण ॥ ११ ॥ मेघो  
 कहे सच वाणी, मांय मूरत पासनी आणीरे ॥  
 मारेण ॥ राखीठे रु मांहि, घणा जतनासुं उमांही  
 रे ॥ मारेण ॥ १२ ॥ आमूरत परजावे, हमने एक

अचरज आवेरे ॥ मारेण ॥ दाणी जिन विंव दीठो,  
 चित्तडा मे लागो मीठोरे ॥ मारेण ॥ १३ ॥ पूजी  
 करि प्रणामे, दाणी छोड गया निज ठामेरे ॥ मारेण ॥  
 त्यांथी वुंदेसर आया, नर नारी हरख सवायारे ॥  
 मारेण ॥ १४ ॥ सहजुन सामा आया, नारी मिळ  
 मंगल गायारे ॥ मारेण ॥ मोती जर थाल वधाया,  
 वरि जेत निशाण घोरायारे ॥ मारेण ॥ १५ ॥ संघ-  
 सहु चित्त हरखे, जिण विंव ने नेणे निरखेरे ॥ मारेण ॥  
 ड्रव्य भाव कर ठाटो, वेसाड्या जिनवर पाटोरे ॥ मारेण ॥  
 ॥ १६ ॥ संवत चवदे छत्तीसे, काति सुदी बीज  
 शुन दिवसेरे ॥ मारेण ॥ शुभ मोरत थावरवारो, प्रजु  
 थाप्या जगत आधारोरे ॥ मारेण ॥ १७ ॥ मेघा मन  
 शुन जावे, शुन भावे जावना भावेरे ॥ मारेण ॥  
 जिन वर ना गुणगावे, जां दिन दिन दीपे वरधावेरे ॥  
 मारेण ॥ १८ ॥

॥ इति ढाल चौथी संपूर्णम् ॥

॥ दोहा ॥

मेघासा नी चार्या, मृगा नेणी नार ॥

गुणवंती गुण रागणी, सुदर अति अजिराम ॥१॥



तेहनी कुंखे अवतरचा, पुत्र रतन श्रीकार ॥

मेणों ने महियो बेहु, दीसंता दीदार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

एक दिन काजल जाखे मेघने, अर सांजल मोरी-  
 बात ॥ दाम हमारा ओ तुं तो लेअने, अर गयो  
 हुंतो गुजरात ॥ एक० ॥ १ ॥ ते लेखो दीजो हो  
 वेवरा शुभ हणी, अर नही तर टूट से प्रीत ॥ बल तो-  
 मेघो कहे सुण काजल सही, अर धन खरचो धर्म  
 रीत ॥ एक० ॥ २ ॥ पांचसो दामे हो मूरत मनहू,  
 अर मैं लिनी मन खंत ॥ कहे काजल आ प्रतिमा  
 किण कामरी, अर मारे धन सुं रंग ॥ एक०  
 ॥ ३ ॥ मां हो मां हे जगमता बेहुजणा, अर वीता  
 बारे वरस ॥ सगपण हुतो ओ धन संसार में, अर वा-  
 लो विस्वा वीस ॥ एक० ॥ ४ ॥ जगमा रे बीचमे  
 ओ मूरत पासनी, पूजी सेठ धनराज ॥ तिण समे  
 गोठीने साणो दीयो, अर बात अधिक जहाराज ॥  
 एक० ॥ ५ ॥ नगरी रो नास हुंतो में जाणियो, अर-  
 आया तुरत अण ठाम ॥ सिय पारस प्रजु ना ओ बिं-  
 ब राखण जणी, अर करजे एह उपाय ॥ एक० ॥  
 ६ ॥ प्रह उठी ने रथ वृषजा सुं जोतकी, अर तण उ-

पर तण ठाप ॥ एक निस्तर मिल तियो एकण  
 मिल थकी, अर धरजे तुं धणियाप ॥ एक० ॥ ७ ॥  
 थल वोरा पेराओ पर्वत सारीखा, अर दिसंत विक-  
 राल ॥ तिण थरां एकलो तुं रथ खरजे, अर निरु थ-  
 को तत्काल ॥ एक० ॥ ८ ॥ वयता जिण थानक रथ-  
 थंभीजसे, अर त्यां लीजे विश्राम ॥ वर थर ठामे  
 ओ श्रीप्रभु पासे नो, अर चैत्य करे अजिराम ॥  
 एक० ॥ ९ ॥ तिण समे गोठीने सोच उपनो, अर  
 पाणी नही पापाण ॥ सुन्न रोई में वण धन देवल  
 तणो, अर कम मंठावा मंठाण ॥ एक० ॥ १० ॥ सिय  
 पारस स्वामीने परसादसुं, अर दुई से वाता साण ॥  
 सहु वीर तंत स्वपन मांहि कही, अर जहा गयो  
 निजथान ॥ एक० ॥ ११ ॥ हवे प्रह उगोओ सेठ  
 रथ जोतरयो, अर उपर ठविया साम ॥ वारे कोसे  
 बुंदेसर हुंती आविया, अर थंजाणा रथ ठाम ॥  
 एक० ॥ १२ ॥ चिंता चुरीने मारगनी खेदसुं, अर  
 आई नोद तेवार ॥ स्वपना में सेवक सामीने कहे,  
 अर सुणो सेठ महाराज ॥ १३ ॥

॥ इति ढाल पांचमी संपूर्णम् ॥

## ॥ ढाव छट्टी ॥

सुणो सुगुण सनेहा सेठजी, मीठी मायरी वाण-  
 जी ॥ सुणो० ॥ जायजो दक्षिण दिश जणी, तिहां  
 कने खीलो ठाणजी ॥ सुणो० ॥ १॥ ते खणजो तुमे-  
 नूमिका, अमी समो प्रगट से नीरजी ॥ सुणो० ॥  
 तिहां कने धवरा ठे आकरा, हेठे धन छे सधी-  
 रजी ॥ सुणो० ॥ २ ॥ स्वस्तिक सोपारी तणो, दी  
 से ठे सेनाणजी ॥ सुणो० ॥ तिण धरती में पत्थर  
 घणो, प्रगट डलट से खाणजी ॥ सुणो० ॥ ३ ॥  
 पाणी पाषाण प्रगट्यो, प्रगट्यो बरेअ निधानजी ॥  
 सुणो० ॥ सखावटो सिरौही वसे, तिण ने यहां  
 बोलायजी ॥ सुणो० ॥ ४॥ सुणे मांहि जकजी, सि-  
 खावट रे जायजी ॥ सुणो० ॥ देवल करजे तुं पास-  
 नो, जिहां निरोगी थायजी ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ श्री-  
 जिन जुवनाणे कामसुं, मत करजे कांइ ढीलजी ॥  
 सुणो० ॥ तेरु सखावट आवियो, सेठ दियो  
 सन्मानजी ॥ सुणो० ॥ ६॥ सखरे मोरत शुज दिने,  
 मंकायो मंकाणजी ॥ सुणो० ॥ मन हरणीकिनी  
 कोरणी, तेलो वरणीन जायजी ॥ सुणो० ॥ ७॥ दीठा

तन मन उद्धसे, नेन रया लोभायजी ॥ सुणो ॥  
 उत्तम तीरथ अजिनवो, रचियो वळेअ वखाणजी ॥  
 सुणो ॥ ७ ॥ वखाण्यो सारी पृथ्वी, लोक कहे वाइ  
 वाइजी ॥ सुणो ॥ गोमी गाम सुनो हतो, तेतो  
 तुरत वसायजी ॥ सुणो ॥ ८ ॥ गोमी गाम रे नामसुं,  
 गोमी पास कहायजी ॥ सुणो ॥ धोरी धर्मरे अण  
 जुगे, मेघो मोटो साइजी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ इको अ-  
 जिस चढ्यो नही, विचमें हुई एक बातजी ॥ सुणो ॥  
 काजल मेंघाने हवे इण विध कर से घातजी ॥ सु-  
 णो ॥ ११ ॥

॥ इति ढाल ठही संपूर्णम् ॥

॥ ढाल सातमी ॥

काजल सहु लोकानी साखें, मेघाने इम भाखे रे ॥  
 घात होवण हारी, होवण हारी होवण हारी ॥ तो  
 कायन लागे कारी रे ॥ बात ॥ १ ॥ लागो धनजो  
 देरा सारु, तो आधो देउं हम वारु रे ॥ बात ॥ २ ॥  
 मेघो कहे पास मूरत पाई, तो हम घर अणहुंत  
 न काई रे ॥ बात ॥ ३ ॥ पारस स्वामी ने सुप्रसादे,  
 हम घर नव निद्ध थावे रे ॥ बात ॥ ४ ॥ लोक

सहु मेघाने वखाणे, तो जिम काजलं दुःख आणे  
 रे ॥ बात० ॥ ५ ॥ मनरी बात सहु मेघे जासी, तो  
 काजल रयो विमासी रे ॥ बात० ॥ ६ ॥ किण हीक  
 विध मेघाने हुं मारुं, तो मन चिंत्याही सुधारुं  
 रे ॥ बात० ॥ ७ ॥ मनरी बात सहु मन में धारी,  
 तो कुन्नी बात वणाई रे ॥ बात० ॥ ८ ॥ पुत्रीरो  
 विवाह रचायो, तो मेघाने बोलायो रे ॥ बात० ॥ ९ ॥  
 जह्नु राज निज सोणे आया, तो मरणे री घात  
 बताई रे ॥ बात० ॥ १० ॥ काजल सही तो ने  
 मारेसे, तो दुध मांई विष देसे रे ॥ बात० ॥ ११ ॥  
 तिण सुं दुध चोजन मत करजो, तो बात सहु  
 सरदहजो रे ॥ बात० ॥ १२ ॥ जह्नु राज निज  
 आनक पूगा, तो जितने सूरज उगो रे ॥ बात०  
 ॥ १३ ॥ मेघा दिन उगे मन बारचो, तो काजलरे  
 घर आयो रे ॥ बात० ॥ १४ ॥ आदर मान अधिक  
 देव रायो, तो जुगत सुं चोजन जीमायो रे ॥ बात०  
 ॥ १५ ॥ वरि विष वैरी दुधज दीनो, तो ते पण मेघा  
 पीनो रे ॥ बात० ॥ १६ ॥ जावी बात विष याद न  
 आई, तो ते जह्नुराय बताई रे ॥ बात० ॥ १७ ॥

दुध जोजन मेघे मरणज पाम्यो, तो हुवा शुभ गत  
 हानी रे ॥ वात० ॥१७॥ मृगा देवी मेणो महियो  
 आयो, तो देखीने अति दुःख पायो रे ॥ वात०  
 ॥१८॥ डोह करी कुल तिलक जमायो, तो काजल  
 चूमि विचारी रे ॥ वात० ॥१९॥ कुल हीने काजल  
 काम किनो, तो कुलने कलंकज दीनो रे ॥ वात०  
 ॥ २० ॥ पापी जाई चूमो किनो, तो अप जस जग-  
 मांहे लिनो रे ॥ वात० ॥ २१ ॥ वेनी आ वात भे  
 नवी किनी, तो मो सिर दोखी दीनी रे ॥ वात०  
 ॥२२॥ हुवण हारी सुं जोर न चाखे, तो अम वेनी  
 मन बारयो रे ॥ वात० ॥२३॥ लोक सहु इम फिट  
 आखे, तो मोखा मोखी कह दाखे रे ॥ वात० ॥२४॥  
 मेणो महिये धीरज धारी, तो मरण मेघा रो सुधा-  
 रयो रे ॥ वात० ॥ २५ ॥ हवे काजल सारो संघ  
 घुलायो, तो देवल इमो चमायो रे ॥ वात० ॥२६॥  
 इमो देवल शिखर चढायो, तो परने धरती आयो  
 रे ॥ वात० ॥ २७ ॥ दूजी वार तीजी वार चढायो,  
 तो शिखर उपर नवी ठायो रे ॥ वात० ॥२८॥ तिण  
 समे जेहे उचरी वाणी, ते पण सगला जाणी रे ॥

वात० ॥३०॥ मेणो महियो जे चामेसे, ते तो इमो  
थिर रहसे रे ॥ वात० ॥ ३१ ॥ संवत चवदे ने  
चुंबाले, तो शुन भोरत शुभवारे रे ॥ वात० ॥ ३२ ॥  
तिण दिन इंडो शिखर चढायो, तो पुण्ये अचल  
रहायो रे ॥ वात० ॥ ३३ ॥ देवल देव विमान  
समदोसे, तो जोतां तन मन हिंसे रे ॥ वात० ॥ ३४ ॥  
देहरे प्रतिष्ठा प्रजुजी नी कीनी, तो किरत निरमल  
लिनी रे ॥ वात० ॥ ३५ ॥ ओ तीरथ मेघे साह  
रचायो, तो नामे अचल रहायो रे ॥ वात० ॥ ३६ ॥  
मेघे सुतरा मनोरथ फलिया, तो धन खरचे जस  
लिनो रे ॥ वात० ॥ ३७ ॥ महिर तीरथ गोडी चावो  
तो ठाम ठाम मांहि ठावो रे ॥ वात० ॥ ३८ ॥  
सुर असुर नर कोमा कोमी, तो सिव करे करजोमी  
रे ॥ वात० ॥ ३९ ॥ मद मत्सर सहु मन सुं छोमी,  
तो गायो गोमी गोडी रे ॥ वात० ॥ ४० ॥

दोहा ॥

मोरी सहियांए जयो जयो जग गोडी धणी, अर  
एकल मल अवीर ॥ मोरी सहियांए दोयलागज  
बंधण जणी, अर सायब साचो सिंह ॥ मोरी सहि-

यांए० ॥ १ ॥ मोरी सहियांए, देश विदेशे कांई  
 फिरो, अर कांई करो मनमें विचार ॥ मोरी स-  
 हियांए, एक मने ओ जवीजणो, अर सेवो संत  
 साधार ॥ मोरी सहियांए० ॥ २ ॥ मोरी सहियांए,  
 पुत्र अपुत्र्याने देवे, अर निर्धनीयां धन होय ॥  
 मोरी सहियांए, परचा पूरण इण जुगे, अर सुर तरु  
 समो प्रजु एह ॥ मोरी सहियांए० ॥ ३ ॥ मोरी  
 सहियांए, आज घडी सुधनी जली, आज जन्म  
 परिमाण ॥ मोरी सहियांए, गायो रसना कलि युगे  
 थिर चित्त थलरो रांण ॥ मोरी सहियांए० ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

संवत अठार पचवीस वरसे, चेतसुदी तेरस  
 दिने, थलचाय धायो गुणे गायो, हरख धरने शुज  
 मती, पाठक श्री खेमा प्रमोद शीसा, अनोपचंदने  
 शुज मही, समएह पंचम अरे जायो, धवल धींग  
 गोनी धणी ॥ १ ॥

॥ इति ढाल सातमी संपूर्णम् ॥

॥ इति श्री गोडी पार्श्वनाथ जिन वृद्ध स्तव  
 संपूर्णम् ॥ ५० ॥



# ॥ अथ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥

॥ देशी गरवाकी ॥

तेदिन क्यारे आवसी हे । ( जोरे बहिनी )  
जासुं सिद्धाचलनी जात ॥ मोरी सहियां हे ॥  
पाजे चढता प्रेमसुं हे । ( जोरे बहिनी ) गाईये  
गुण अखियात ॥ मोरीसहियां हे ॥ तेदिन० ॥ १ ॥  
अदनुत उंचो देहरो हे । ( जोरेबहिनी ) मूल-  
नायक आदिनाथ ॥ मोरी सहियांहे ॥ जोली  
जगत जली परेहे । (जोरे०) निरख्या होय सनाथ ॥  
मोरी० ॥ तेदिन० ॥ २ ॥ नाहीं निरमल नीरसुं  
हे । ( जोरे० ) पहिर खीरोदक चीर ॥ मोरी० ॥ के-  
शर भरिय कचोलमीहं । ( जोरे० ) पूजसुं सुगुण सु-  
धीर ॥ मोरी० ॥ ते० ॥ ३ ॥ रुमी रायण छांढमी हे ।  
( जोरे० ) आदि जिणंद उदार ॥ मोरी० ॥ तिहां  
जगनाथ समो सरयाहे । ( जोरे० ) पूरव निनाणुं-  
वार ॥ मोरी० ॥ ते० ॥ ४ ॥ इण गिर वरिये उपरा  
हे । ( जोरे० ) सीधा साधु अनंत ॥ मोरी० ॥ चौ-  
मासे रह्या दोय जिनवरा हे । ( जोरे० ) अजितजि-  
णसर शांति ॥ मोरी० ॥ ते० ॥ ५ ॥ चेलणा तळाई

सिद्ध सिद्धाहे । (जोरे०) अद्वचुन उन्नका जेख ॥  
 मोरी० ॥ सिद्धवरु मेत्रुंजे नदी वहे । (जं.रे०) क-  
 रिये नित रंग रोख ॥ मोरी० ॥ ने० ॥ ६॥ इण डूंगर  
 दीठां थकांहे । (जोरे०) उपजे परमानंद ॥ मांगी० ॥  
 गहिरा गिरिवर वांढकीहे । (जं.रे०) चाहे नित  
 जिणचंद्र ॥ मोरी० ॥ ने० ॥ ७ ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरी स्तवन संपूर्णम् ॥ ५१ ॥

## ॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

आज आप चाहो सहियो, सिद्धाचल गिर जड्यै ॥  
 सुणि वहिनी ए गिरीना महिमा । आदिजिनंद इम  
 जाखी ॥ जरथादिक नर पतिने आगल । इंद्रादिक  
 सहु साखीरे ॥ (आज०) ॥ १॥ इण गिरि वारिये वाळ  
 अनंत । साधु अनंता सोधा ॥ जनम मरणना दुःख  
 छोराने । अमल अखय गुण छीधारे ॥ (आज०) ॥ २॥  
 इणगिर सनमुख पगळां जरतां । आतम शुद्ध सु-  
 जावे ॥ कोरु भवारा पातिक कीधा । एक पलक में  
 जावेरे ॥ (आज०) ॥ ३॥ सासतो तीरथ ए सेश्रुजो ।  
 जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवन में इण गिर तोले ।  
 बीजो कोई न दीवोरे ॥ (आज०) ॥ ४॥ नीरंजनसुं

नेह धरीने । आगे ओल्लग करस्यां ॥ अद्भुत आदि-  
 जिनेसर निरखी । प्रेम सुधारस पीस्यांरे ॥ (आज०)  
 ॥५॥ पुद्ग सुगंधा लेई पच रंगा । हार सुगंधा गूंथी ॥  
 पहिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां । शिव मारगनी सूथी  
 रे ॥ (आज०) ॥६॥ गहिर स्वरें जिनवर गुणगातां ।  
 यात्र निनाणूं करिये ॥ मन गमती जमती विच  
 जमतां । जव सायर निस्तरियेरे ॥ (आज०) ॥ ७ ॥  
 पूरव निनाणूं वार प्रथम जिन । रायण रूंखे आया ॥  
 ते तीरथ शुज भावे फरसी । करिये निरमल कायारे ॥  
 (आज०) ॥ ८ ॥ लाज उदे ए गिरवर लहिये ।  
 कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित  
 बच्छल । प्रेम घणें चित आणीरे ॥ (आज०) ॥ ९ ॥  
 ॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५२ ॥

## ॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

॥ श्रीचंदाप्रभु पाहुणारे ॥ एदेशी ॥ नमो रे नमो  
 सेत्रुंज गिरीरे । त्रिकरण शुद्ध त्रिकालरे ॥ पाप प्रकल  
 दूरे टलेरे । तूटे करम जंजालरे ॥ (नमो०) ॥ १ ॥ पूरव  
 निनाणूं समोसरथारे । प्रथम जिनंद जगदीशरे ॥  
 बावीशम जिनवर विनारे । समोसरयां तेवीशरे ॥

(नमो०) ॥ २ ॥ साधु अनन्त अणशण ग्रहीरे ।  
 सीधा एहिज ठोकरे ॥ काल आगामी बलीसीऊ-  
 स्येरे । साधु अनन्ती कोडरे ॥ (नमो०) ॥ ३ ॥  
 अनंत कट्याणक जूमिकारे । महिमावन्त महन्तरे ॥  
 सासतो तीरथ ए सहीरे । अतिशय जास अनंतरे ॥  
 (नमो०) ॥ ४ ॥ कोमि जवंतर जे कियारे । पा-  
 तिक विविध उपायरे ॥ सेत्रुंजे सनमुख चालतारे ।  
 पग पग ते सहु जायरे ॥ (नमो०) ॥ ५ ॥ धन दिन  
 तेहिज जाणसुरे । वहिस्युं सेत्रुंज केरी वाटरे ॥ छहरी  
 यथा विध पालस्युरे । संघ सहित ग्रहि गाटरे ॥  
 (नमो०) ॥ ६ ॥ पग पग उच्छव अति घणारे । पग २  
 याचक दानरे ॥ प्रेम जगति साहमी तणीरे । जी-  
 णोंछार प्रधानरे ॥ (नमो०) ॥ ७ ॥ धन ते गिरिराय  
 निरखसुरे । चढती मंगल मालरे ॥ मणि मोतीयके  
 वधावस्युरे । रजत सोवन जर थालरे ॥ (नमो०) ॥ ८ ॥  
 धन दिन ते गिर फरसस्युरे । करस्युं पावन मोरी-  
 कायरे ॥ जगति जुगति जुहारसुरे । नाभि नंदन  
 जिनरायरे ॥ (नमो०) ॥ ९ ॥ द्रव्य जाव करस्युं मुदारे ।  
 पूजा विविध प्रकारे ॥ जावे जावना भावसुरे ।

करसुं सफल अवतारे ॥ (नमो०) ॥ १० ॥ रतन त्रयी  
 जमती भलीरे । देसुं तेधर बुद्धिरे ॥ जव २ त्रमण  
 निवारसुरे । लहिसुं आनम सुद्धिरे ॥ (नमो०) ॥ ११ ॥  
 विध फरसण मन माहरोरे । मोहिग्यां दिन रातं ॥  
 पुन्य प्रबलथी पामियों । उज्जल गिरि केरी जा-  
 तरे ॥ (नमो०) ॥ १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसायथीरे ।  
 कारज सगला सिद्धिरे ॥ कहे जिन हरषसूरि सशारे ।  
 होयजो मंगल वृद्धिरे ॥ (नमो०) ॥ १३ ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५३ ॥

## ॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

॥ (देशी पंथीकानी) ॥ अंग उमात्रो मोने अति  
 घणो । जेटवा विमल गिरंदरे । (पंथीका) । नाजि-  
 राया कुल चंदलो । जिहां वसे मरुदेवी नंदरे । (पं-  
 थीका) । वहिलुं बेलरे पंथी म्हागा वहिलुं बांदरे  
 ॥ १ ॥ सेत्रुंजो ठे कितनीक दूरे । (पंथीका वहि०)  
 पालिताणो नगर सुहामणो । रूमी ललिता सरनी  
 पालरे ॥ (पंथीका) । जिहां अंबलारे वरुला घणा । जुक  
 रही चंपलानी कालरे ॥ (पंथीका वहि०) ॥ २ ॥ धन  
 ते पंखी पारेका । सेत्रुंज वसियाठे सोररे ॥ (पंथीका) ।

कृमाहो करिने जे घर रहे । माणस नहीं ते ढोररे ॥  
 (पंथीडा बहिलुं०) ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटेजी चालतां ।  
 जीणी २ उमे खेहरे ॥ (पंथीका) । मेला थाये संघना  
 कापका । निरमल थाये देहरे ॥ (पंथीका बहिलुं०) ॥ ४ ॥  
 लंचो देहरो आदिनाथनो । आगल चोकविसालरे ॥  
 (पंथीका) । जिहां मिल २ घणा मानवो । गावे प्रजु  
 गुण मालरे ॥ (पंथीका बहिलुं०) ॥ ५ ॥ घस केसर जर  
 वाटका । पूजे जिनवर अंगरे ॥ (पंथीका) । फूलां हंदो  
 सोहे प्रजु सिर सेहगे । दिवलानो जाति अजंगरे ॥  
 (पंथीडा बहिलुं०) ॥ ६ ॥ ए गिर वर दीठां माहरे । उपजे  
 परम आनंद रे ॥ (पंथीका) । मोने नेटणरोजी  
 कोरुंछे । प्रेम घणो जिनचदर ॥ (पंथीका बहिलुं०)  
 ॥ ७ ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५४ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

जात्रा निनाणु करिये विमल गिरी । जात्रा नि-  
 नाणुं करिये । पूरव निनाणुं वार सेत्रुंज गिरी । ऋषज  
 जिनद समो सरिये । (विम० जा०) ॥ कोमि सहस  
 जव पातिक दूटे । सेत्रुंज सामे-रुग भरिये ॥ (वि०)

जा०)॥१॥ चौथ ठठ दोय अठम तपस्या । करि चढिये  
गिर वरिये ॥ (वि० जा०) । पुंडरीक पद जपिये हरखे ।  
अध्यवसाय शुच धरिये ॥ ( वि० जा० ) ॥२॥ पापी  
अन्नवी निजर न देखे । हिंसक पिण ऊधरिये ॥ (वि०  
जा०) । जूमि संथारी ने नारि तणो संग । दूर थकी  
परि हरिये ॥ (वि० जा०) ॥३॥ एकल आहारी ने स-  
चित परिहारी । गुरु साथे पद चरिये ॥ (वि० जा०) ।  
परिक्रमणा दोय विधसुं कीजे । पाप परल विष ह-  
रिये ॥ (वि० जा०) ॥४॥ कलि काले ए तीरथ मोटो ।  
प्रवहण समभवदरिये ॥ (वि० जा०) । उत्तम ए गिरवर  
सेवंता । पदम कहे जव तरिये ॥ ( वि० जा० ) ॥५॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५५ ॥

## ॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

आज वधाई म्हारे रंग वधाई । मोतियके ० । एचाला ॥  
सिद्धगिरि जेटो जवि जावे । ज्युं सुख संपति आनंद  
थावे ॥ सि० ॥ ए गिरवर के जेटण सेती । पूरब संचित  
अघ सहु जावे ॥ सि० ॥१॥ रायण रुंखे रिषजजि-  
णसर । पूरब निनाणुं आया स्वजावे ॥ सि० ॥ पुंरु-  
रगिरिकी महमा जिननें । जरतादिक सब जनकुं

सुणावे ॥ सि० ॥ ३॥ सासतो तीरथ तीन जुवनमें ।  
 शिवपुरी पाज प्रत्यक्ष कहावे ॥ सि० ॥ कोडि अनन्त  
 साधु इण ऊपर । मुक्ति गये इण गिर के प्रजावे ॥ सि०  
 ॥ ३॥ एक वार गिरकुं भेटण से । सहस कोरुना पातक  
 जावे ॥ सि० ॥ नाजि राय मरु देविके नन्दन । आ-  
 दि जिनन्द जेठ्यां सुख पावे ॥ सि० ॥ ४ ॥ अदञ्जुत  
 विंव अनोपम शोजित । चौमुख जिनवर अति मन-  
 चावे ॥ सि० ॥ देश देशांतर से बहु नरगण । आय  
 जखी विध पूज रचावे ॥ सि० ॥ ५ ॥ कपूर कस्तुरी  
 केसर घोक्षी । मन सुध प्रजुके चरणे चढावे ॥ सि० ॥  
 आज हमारे सुर तरु प्रगट्यो । मनमे हरख आनंद  
 जरावे ॥ सि० ॥ ६ ॥ आज रवि कंचन मझ ऊगो ।  
 विमलाचल जेठ्या शुज जावे ॥ सि० ॥ मुर्शिदाबाद  
 अजीम गंजमें । गोत्र दुधेळ्या प्रगट कहावे ॥ सि० ॥  
 ७ ॥ मोहू तिमर अघ दूर करणकों । बुधसिंह यात्रा  
 करी शुजभावे ॥ सि० ॥ गगन जोग गृह इंडु संवच्छर ।  
 चैत्र उज्ज्वल तेरस मन भावे ॥ सि० ॥ ८ ॥ आयहसें  
 श्रीअजयराजकु । साथ भखी विध यात्रा करावे ॥  
 सि० ॥ संघ साथ श्री खदमीप्रधानना । शिष्य मोहन



प्रचुना गुण गावे ॥ सि० ॥ ए ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

जाव धर धन्यदिन आज सफलो गियो । आ-  
जमें सजनी आनंद पायो ॥ भाव० ॥ हर्ख धरि नि-  
जरि जरि विमलगिरि निरखकर । रजत मणि क-  
नक मोतिय वधायो ॥ जाव० ॥ १ ॥ पग पगे उमग  
धर पंथ नित पूठतां । धन्य दोय चरण जिहां तलक  
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा ।  
आज धन दीह दिन सुजश गायो ॥ जाव० ॥ २ ॥  
दूर दुर गत टलिय यात्र विधसुं करी । पुण्य जंमार  
पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिर सि-  
खर । रिषज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ श्री इति सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५७ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग रामकली ॥

ऊठेने मोरा आतिम राम । जिन मुख जोवा जइ-  
येरे ॥ जिनजीनो दरशण ठे अति दोहिलो । ते किम  
सोहिलो जाणोरे ॥ वार २ मानव जव एहवो । जु-

कत्रो मुश्किल टाणोरे ॥ ऊठो ॥ १ ॥ चार दिवस नो  
चटको मटको । देखीने मत राचोरे ॥ विणसी जातां  
वार न लागे । काया घटठे काचोरे ॥ ऊठो ॥ २ ॥  
अनंतगुणे जरियो हे जिनवर । पूरव पुण्ये पायोरे ॥  
पहने देखी दिलमें आनंद । करतुं सदा सवायोरे ॥  
ऊठो ॥ ३ ॥ हीरो हाथ अमोखख आयो । मूढ  
हिवे मत गम जोरे ॥ सहिज सखूणा पास जिनंदजी  
सुं । राजी हुय चितरम जोरे ॥ ऊठो ॥ ४ ॥ मन मा  
नीता माहरा आतम । करजे सुकृत कमाईरे ॥ लाज  
उदय जिनचन्द्र लहीने । वरतुं सिद्ध वधाईरे ॥  
ऊठो ॥ ५ ॥

॥ इति वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ५७ ॥

॥ अथ श्री ऋषभजिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥

भज मन नाभि नन्दन देव ॥ ( जज० ) ॥ ध्यान  
मुनि जन अमिग धारे । सुर नर करत हैं सेव ॥  
( जज० ) ॥ १ ॥ चक्री चूपति बने सुर पति । वासुदेव  
बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद । शेष मणिधर सेव ॥  
( जज० ) ॥ २ ॥ अशरण शरण है विरुद जाको ।

जक्ति वत्सल देव ॥ राजसिंह प्रभु रिषज शिरपर ।  
नाथ है नित मेव ॥ ( जज० ) ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीऋषभजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

## ॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग खम्बाज ॥

धकी १ पल १ छिन १ निशदिन । प्रभुको सम-  
रण करलेरे ॥ ( घ० ) ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत  
हैं । अशुभ करम सब हरलेरे ॥ घ० ॥ १ ॥ मन  
वच काय लगी चरणन नित । ज्ञान हिये में धरलेरे ॥  
घ० ॥ दौलतराम प्रभु गुण गावे । मन बंछित फल  
वरलेरे ॥ घ० ॥ २ ॥

॥ इति वैराग्य पदम् संपूर्णम् ॥ ६० ॥

## ॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग केरवो ॥

रसना सफल जई । मैं तो गुन गाये महाराज ॥  
रसना० ॥ एआंककी ॥ परम आनंद प्रगट जयो  
मेरे । जब देखे जिनराज ॥ रसना० ॥ १ ॥ अति  
उज्ज्वल जस सुन जिनजीको । संच्यो सुकृत स-

माज ॥ नाक नमन करता प्रचुजीकुं । सारथा आ-  
तम काज ॥ रसना० ॥१॥ पद पंकज प्रचुके फरसत  
ही । दूर गई दुःख दाऊ ॥ कहत कामा कल्याण  
सुपाठक । अब मोहि अविचल राज ॥ रसना० ॥३॥

॥ इति श्रीवैराग्य पद संपूर्णम् ॥ ६१ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग राम गिरी ॥

सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ । बेरन निद्रा तु कहां  
से आई ॥ सोइ० ॥ एआंकमी ॥ निद्रा कहे मेंतो  
वाली रे भोली ॥ बने बने मुनि जन कु नाखुरे ढोली ॥  
सोइ० ॥ १ ॥ निद्रा कहे मेंतो जमकी टासी ॥  
एक हाथ में मुक्ति और दूसरे हाथ में फांसी ॥  
सोइ० ॥ २ ॥ समय सुंदर कहे सुनो जाई बनियां ॥  
आप खुवे सारी खुब गई दुनियां ॥ सोइ० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीवैराग्य पद संपूर्णम् ॥ ६२ ॥

॥ पुनः वैराग्य पद ॥

कहा कीनो नर जब पाके । रहा मोह मद ठाके ॥  
देक ॥ बृद्ध अवस्था आय लगी तब । बेगो बुद्धि

गुमाके ॥ कहा० ॥ १ ॥ जुष्ठबोल धन जोरु लि-  
योहे। जोले जीवन को समझाके ॥ कुमति नार संग  
राचरह्यो है । सुमति गुन को नसाके ॥ कहा० ॥ २ ॥  
मात तात सुता सुत नारी । इनसे नेह लगाके ॥  
ए सब अपने घरको आवे ॥ तेरी देह जलाके  
॥ कहा० ॥ ३ ॥ सत गुरु कहे परजव सुख करले ।  
धरनन चित्त लगाके ॥ अब सुनले फिर कोन  
सुनावे । श्रवनन शुद्ध कराके ॥ कहा० ॥ ४ ॥

॥ इति श्री वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ६३ ॥

## ॥ पुनः वैराग्य पद ॥

॥ राग बेलावल ॥

रे मन क्युं जिन नाम विसारयो ॥ वयुं० ॥  
रे मन० ॥ विषय विकार महा मद्धारयो । जनम  
जुआ ज्युं हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ जीने लोकुं नर  
देही दीनी । गर्ज की आंच उद्धारयो ॥ प्रजुजी  
कुं तें शठ मूरख । एक घनी न संचारयो ॥ रे म-  
न० ॥ २ ॥ नहीं कठु दान शीयल तय पूजा । न-  
हीं जिन नाम उचारयो ॥ जैन धर्म चिंतामणी  
सरिखो । काच जाण कर कारयो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

करले सुकृत दया उरु ले । जो जव चाहत सु-  
धारयो ॥ हरखचंद वर्धमान जिनेसर । श्वसर  
मांहे न संभारयो ॥ रेमन० ॥ ४ ॥

॥ इति श्री वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥६४॥

अथ कुमति मुख वज्र चपेटका

अथवा ननव मुख ॥

कुमति इट तजो कदाग्रहकुं । जिन प्रतिमा पूजा  
स्तव करके ॥ ग्रहो शुद्ध समकित कुं ॥ कु० ॥ १ ॥  
श्रीजिन प्रतिमा जिनेश्वर सदृश । हरो दुःख-  
संशयकुं ॥ गणधर रचित सूत्र चित धरके । तजो  
विभ्रम जयकुं ॥ कु० ॥ २ ॥ अव्य जाव जिन पूजन  
संस्तव । सध चतुर विधकुं ॥ मुनिवर श्री जिनप्र-  
तिमा सन्मुख । करत जाव स्तवकुं ॥ कु० ॥ ३ ॥ नाम  
व्रण अव्य जाव जिनेश्वर । वंदन योग्य मुनिकुं ॥  
श्रीगणांग मध्य है विवरण । सत्य कहे इनकुं ॥  
कु० ॥ ४ ॥ वीतराग निर्विकार प्रतिमा । द्वांति कहा  
तुमकुं ॥ कारज सिद्ध कारण करी होवत । ग्रहो शुद्ध  
नय पयकुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ चिन्ताकार रूप स्थिरनको ।

स्थानक मुनिजनकुं ॥ दशवैकालिक मूल सूत्रमें ।  
 जोग नहीं ननकुं ॥ कु० ॥६॥ जैसे स्त्रियां रूपकर  
 उपजत । विखेजाव जीवकुं ॥ तैसे ठवण जिनेश्वर  
 देखत । धर्म राग जविकुं ॥ कु० ॥७॥ लब्धि प्रजाव  
 चारण मुनि जावत । छीप नंदीश्वरकुं ॥ तहां अंजन  
 पर्वत ऊपर । वदे ठवण जिनकुं ॥ कु० ॥ ८ ॥ यो  
 अधिकार सूत्र भगवति में । त्रम मति जंजनकुं ॥  
 वीर जिनेश्वर श्रीमुख ज्ञाखित । गौतम गणधरकुं ॥  
 कु० ॥ ९ ॥ द्वादश व्रतके धारक श्रावक । कटिपत  
 नहीं तिनकुं ॥ अन्य तीरथी ग्रही जिनप्रतिमा ।  
 वंदे नहीं तिनकुं ॥ कु० ॥ १० ॥ सूत्र उपासक दशा  
 अच्यंतर । आनंद श्रावककुं ॥ कुगुरु कुदेव कुतीर्थी  
 कुं त्यागे । वंदित जिन बिंबकुं ॥ कु० ॥११॥ सम-  
 कित धारक सती द्रौपदा । पूजे जिनेश्वरकुं ॥ ज्ञाता-  
 सूत्र मांहे है वर्णव । छांडो वृथा हठकुं ॥ कु० ॥१२॥  
 ऐसे वचन सुधारस अमृत । सुचित नहीं तुमकुं ॥  
 मिथ्या विषके उदय जावसे । वमन होत तिनकुं ॥  
 कु० ॥१३॥ जिन पूजन मेहिंसा ज्ञाखत । जव जय  
 नहीं तिनकुं ॥ संवर द्वार प्रश्नव्याकरणे । पूजा अ-

हिंसककुं ॥ कु० ॥ १४ ॥ केवल हिंसा २ पुकारत ।  
 श्रद्धा जिष्ट जीवकुं ॥ हिंसा स्वरूप जेद नहीं  
 जानत । खेंवत मत पदकुं ॥ कु० ॥ १५ ॥ त्रिविध २  
 मुनि हिंसा त्यागत । माहणता सबकुं ॥ नदी उतरत  
 जब हिंसा होवत । बंध नहीं तिनकुं ॥ कु० ॥ १६ ॥  
 तैसे जिनवर पूजन में । हिंसा नहीं जविकुं ॥ मोक्ष-  
 मारग साधन अति उत्तम । समणोपासककुं ॥ कु०  
 ॥ १७ ॥ दृढ एकांत पदके धारक । मानत नहीं इन  
 कुं ॥ स्याद्वाद घट मुदगर न्याय करी । प्रहंसत  
 तिनकुं ॥ कु० ॥ १८ ॥ चूर्णि जाण्य सूत्र निर्युक्ति ।  
 मध्य निपेधन पूजनकुं ॥ उत्थापक ये कहां से प्रगटे ।  
 ये आश्चर्य हम कुं ॥ कु० ॥ १९ ॥ दशपुर नगर  
 चोमासिक । स्तवना करि प्रभुकुं ॥ खरतरगच्छ  
 शाजत अति सुंदर । श्रेय सुख श्री संघकुं ॥ कु०  
 ॥ २० ॥ वेद युग्म नंद चद्र समवच्छर । कार्तिककृष्ण  
 पदकुं । कुमति निकदन शिक्षा संपूर्ण । तिथी-  
 त्रयोदशीकुं ॥ कु० ॥ २१ ॥ जिन प्रतिमा जीके चरण  
 कमलको । सरणे श्रेष्ठ माय कुं । सोख्यरत्न वांठिन  
 प्रभु तुमसे । अविचल पद ध्रुवकुं ॥ कु० ॥ २२ ॥



॥ इति कुसति मुख वज्र चपेटका अथवा ननवमुख  
संपूर्णम् ॥ ६५ ॥

॥ अथ श्रीअजित जिनस्तवन ॥

॥ राग जैरवी ॥

अजित जिन लगन लगी सो लगी । तुमरे  
दरस बिन पल न सुहावत । अच्यंतर प्रीति जगी ॥  
अजित० ॥ १ ॥ विकल जयो में कुदेव की संगत ।  
चितधन संपदा लगी ॥ अजित० ॥ २ ॥ ताते कुदेव  
देख जय उपजत । कृतघनी देत दगी ॥ अजित० ॥  
३ ॥ उपसम रस द्रग देख जिनंद्रको । जम मति  
जमत जगी ॥ अजित० ॥ ४ ॥ सौख्यरत्न कुं तव चरनन  
बिन । अन्य न होत सगी ॥ अजित० ॥ ५ ॥

॥ इति अजित जिनस्तवन संपूर्णम् ॥ ६६ ॥

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिनस्तवन ॥

श्रीमत गवकी पार्श्वजिनेश्वर । प्रगटे सकल लोक  
सुख कारा ॥ टेर ॥ मिथ्यातमज्जर वारण कारण ।  
मोह जनित सदलेय निवारा ॥ शुद्ध स्वरूपध्येय  
निज धारक । जारक कर्म शत्रुगण सारा ॥ श्री० ॥ १ ॥

परमात्म पुरुषोत्तम तुमही । भव जय जंजण  
 तारण हारा ॥ मूरख भेद ज्ञान नहीं पावत । सं-  
 तन कुं प्रजु पावन कारा ॥ श्री० ॥ १ ॥ दोष रहित  
 जूषण जूषित तनु । कहि न सके कवि गुण विस्तारा ॥  
 पुण्य उदय करी दर्शन पायो । सफल दिवस है आज  
 हमारा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वामानंदन पार्श्वजिनेश्वर ।  
 सुरतरु सम प्रजु दान दातारा ॥ सकल संघ मन  
 वछित पूरण । ग्राम विठुरा में दियो दिदारा ॥  
 श्री० ॥ ४ ॥ संवत जगणीसे गुणताले । मास चाद्र-  
 पद चवदसे सारा ॥ संघ मुख्य सौजाग जाल  
 शशि वरधन । सौख्य रत्न सुख कारा ॥ श्री० ॥ ५ ॥  
 ॥ इति श्रीगौमीपार्श्वजिनस्तवन संपूर्णम् ॥ ६७ ॥

## ॥ अथ श्रीशांति जिन स्तवन ॥

शांति जिनंटा मुज विनती । अवधारो गुण ज्ञातारे ॥  
 सुनिजर कर मुज ऊपरे । विरुद सुण्यो जग ज्ञातारे ॥  
 शांति० ॥ १ ॥ दिवस घणारी मुज मने । जेटवा प्रजु  
 मुख चंदोरे ॥ आज सुकृत प्रगटी ठशा । निरख्यो  
 शिव सुख कंदोरे ॥ शांति० ॥ २ ॥ सूक्ष्म वादर हुं  
 जम्हो । काल अनंता नंतोरे ॥ हिव तुज चरण शरण

विना । अपराधी न दुःख अंतोरे ॥ शांति० ॥३॥ तुं  
 वल्लभ मुक्त तुं धणी । तुं मुक्त प्राण आधारेरे ॥ प्राण  
 सनेही तुक्त विना । पर सुर न नमं निरधारेरे ॥  
 शांति० ॥४॥ तुक्त अतिशय गुण संपदा । सकल संघ  
 उपकारेरे ॥ तुक्त कल्याणक ने समे । नारक थावर  
 सुखकारेरे ॥ शांति० ॥५॥ दायक मारग मोहनो ।  
 ज्ञायक विश्व स्वरूपोरे ॥ धायक घाति कर्मनो । ध्या-  
 यक शुक्त स्वरूपोरे ॥ शांति० ॥६॥ शांति सुधारस  
 आपिये । कापिये भव दुःख फंदोरे ॥ ठापिये दरशन  
 मुद्रिका । थापिये मुक्त निज बंदोरे ॥ शांति० ॥७॥  
 मुक्त मन मोहन वेलकी । मूरति शांति जिणंदोरे ॥  
 अविहृत् रागे सींचवुं । पामुं परमानंदोरे ॥ शांति० ॥८॥  
 उगणी से छत्तीस में । लश्कर शांति जिणंदोरे ॥  
 आप्या माधव सुदी सप्तमी । सौख्यरत्न चिरनंदोरे ॥  
 शांति० ॥९॥

॥ इति श्री शांतिजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ६७ ॥

॥ अथ श्रीऋषभजिन स्तवन ॥

॥ राग होली ॥

रिषभ जिन तुम सम नांही । जगमें हितकारी ॥  
 टेरे ॥ नाजिराय नंदन चंदन सम । अहित ताप सब

टारी ॥ जव्य सरोज विकासन उदियोरी । सहस्र  
 किरण अवतारी ॥ रिषभ० ॥ १ ॥ तुम गुण समरण  
 धारत चितमें । विघ्न टरत बहु चारी ॥ पूरण सकल  
 मनोरथ जविके । सुर तरु सम अनुकारी ॥ रिषभ० ॥  
 २ ॥ दीन दयाल दया कर सुनिये । दास अरज  
 उर धारी ॥ तारण तरण विरुद सुण तेरो । आयो  
 सरण तिहारी ॥ रिषभ० ॥ ३ ॥ उच्छव अष्ट दिवस  
 लग कीनो । लीनो सुजस सुधारी ॥ धर्म विमुख  
 मुख श्याम जो कीनो । श्रीसंघ मंगल कारी ॥  
 रिषभ० ॥ ४ ॥ संवत जगणीसे सैंतीसे । माघ द्वि-  
 तीया शुचि सारी ॥ नगर इंदोर पंचम अंग पूरण ।  
 सौख्यरत्न सुखकारी ॥ रिषभ० ॥ ५ ॥

॥ इति ऋषभ जिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ६६ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी सिंदुरा ॥

अहो सुख कंद पार्श्वजिनचंद । नील वरण तनु  
 युति अति राजत । लाजत रवि शशि वृंद ॥ पा० ॥ १ ॥  
 प्रभु द्रग दरस वियोग जनित दुःखारोधे निज गुण  
 वृंद ॥ उप सम रस नर वरसत जविये । प्रगटत

अनुन्नव गंध ॥ पा० ॥ २ ॥ वामा नंदन डुरित  
निकंदन । रंजन जविजन वृंद ॥ गंजन मोह महा-  
रिपु डुर्जन । जंजन जव जय फंद ॥ पा० ॥ ३ ॥ वसु-  
दिग दोष रहित सुर तुमकुं । अरचत इंद्र नरिंद्र ॥  
सौख्यरत्न त्रय करण योगते । सेवे जिनपद अर-  
विंद ॥ पा० ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७० ॥

। अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन ।

एक अरज अवधारियेरे ॥ वाढ्हा ॥ श्रीचिंता-  
मण पासरे । माहरो मन जिन चरणे रम रह्यो ।  
सुनिजर कर मो ऊपेरे ॥ वाढ्हा ॥ पूरण कीजे  
अरसरे ॥ म्हां० ॥ १ ॥ सूरति मूरत ताहरी रे ॥  
वाढ्हा ॥ दीठां आवे दायरे ॥ म्हां० ॥ जिण दिन  
देखुं आंखमीरे ॥ वाढ्हा ॥ सो दिन सफल वि-  
हायरे ॥ म्हां० ॥ २ ॥ मत जाणो ए मोहनीरे ॥  
वाढ्हा ॥ उतरस्ये किण वाररे ॥ म्हां० ॥ चोल  
मजीठ तणी परे रे ॥ वाढ्हा ॥ लागोरंग अपाररे ॥  
म्हां० ॥ ३ ॥ आप विचारो आपसुं रे ॥ वाढ्हा ॥  
सेवक नो इकताररे ॥ म्हां० ॥ समरण तुज नि-  
शदिन अछेरे ॥ वाढ्हा ॥ कूरु नहीं किर ताररे ॥

म्हां० ॥ ४ ॥ घिनती वामा नंदसुं रे ॥ वाढ्हा ॥  
 दास तणी अरदास रे ॥ म्हां० ॥ जव श देजो  
 मोक्षणी रे ॥ वाढ्हा ॥ साहिव तोरी सेवरे ॥  
 म्हां० ॥ ५ ॥ अंतरजामी आगळेरे ॥ वाढ्हा ॥ एह  
 प्रकाशुं वातरे ॥ म्हां० ॥ अरिहंत ऊपर आसतारे  
 ॥ वाढ्हा ॥ सुधि त्रिजुवन तातरे ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ खिण श  
 श्रीजिनराजनो रे ॥ वाढ्हा ॥ समरण मनमें एहरे ॥  
 म्हां० ॥ कनक मूरत कहे माहरो रे ॥ वाढ्हा ॥  
 सांचो धर्म सनेहरे ॥ म्हां० ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७१ ॥

## ॥ अथ श्रीसिद्धगिरि स्तवन ॥

सेतुंजानो वासी प्यारो लागे म्हारा राजिंदा ॥  
 से० ॥ इणरे मृगरियां नी जीर्ण २ कोरणी । ऊपर  
 शिखर विराजे म्हारा राजिंदा ॥ से० ॥ १ ॥ चो-  
 मुख विंघ अनोप विराजे । अद्भूत दीर्घ दुःख  
 नाजे म्हारा राजिंदा ॥ से० ॥ २ ॥ कानेंजी कुंमल  
 माथे मुगट विराजे । वाहे वाजूबंध ठाजे म्हारा राजिं-  
 दा ॥ से० ॥ ३ ॥ चोवाश्चंदन अवर अगर्चा । केशर  
 निखर विराजे म्हारा राजिंदा ॥ से० ॥ ४ ॥ इणगिरि

अरदास के ॥ महिर करो जिनजी ॥ महिर करो  
 मोटा करो जिनजी । सेवक आप समानके ॥  
 महिर० ॥ १ ॥ श्रीचिंतामण पेखतां जिनजी ॥  
 मुक्त मन धरत उद्दास के ॥ महिर० ॥ २ ॥ तुं ज-  
 ग जीवन जग गुरु जिनजी ॥ तुमही परम सहा-  
 यके ॥ महिर० ॥ ३ ॥ परम बंधव परमेसरु जि-  
 नजी ॥ तुमही मायने तातके ॥ महिर० ॥ ४ ॥  
 अकलकित अधकी कला जिनजी ॥ तुं अविकार  
 अपारके ॥ महिर० ॥ ५ ॥ जगतवच्छल भव जय-  
 हरुं जिनजी ॥ आतमराम उदारके ॥ महिर० ॥ ६ ॥  
 दीनदयाल कृपा करो जिनजी ॥ शरणागत साधार  
 के ॥ महिर० ॥ ७ ॥ धन वेला धन ए घरी जिनजी  
 ॥ देख्यो तुम दीदार के ॥ महिर० ॥ ८ ॥ आज स-  
 फल नरजव थयो जिनजी ॥ फलिया वंठित का-  
 जके ॥ महिर० ॥ ९ ॥ जात्रा कराई जुगतसुं जि-  
 नजी ॥ हरखे सा बछराज के ॥ महिर० ॥ १० ॥  
 कलश ॥ इम सकल गुण गण रयण सागर नाग-  
 शुभ्र लंठणधरो । जेटिया सतरे तीस वरसे मास  
 मिगसर सुखकरो ॥ कहे दया कुशल शिष्य

धर्म मंदिर साम समरथ तुं धणी । नित उदय  
कारी विघनन वारी जयो पास चितामणी ॥ ११ ॥  
॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७५ ॥

## ॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ फिर मिर वरसे मेहहो लाल । परनाले पाणी  
पने म्हारालाल ॥ एदेशी ॥ जेसाणे जिनराज  
हो लाला । सुंदर साहिब सुखकरु ॥ म्हा० ॥ वं-  
दीजे वरदायहो लाला । मोहन सूरत मनहरु ॥  
म्हा० ॥ १ ॥ जिंग मिंग ज्योति अपारहो लाला ।  
कमल कमल दीपेकला ॥ म्हा० ॥ महिमा तुज-  
ही अपारहो लाला । कहे कुण आशिष केइला ॥  
म्हा० ॥ २ ॥ दीठां राज दीदारहो लाला । अंतर  
आतम उल्लसे ॥ म्हा० ॥ आतम तणेरे आधार-  
हो लाला । हीवका भीतर तू वसे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥  
सूरतमीमो वारहो लाला । निरख्यां तृती लहे नही  
॥ म्हा० ॥ आख्यां ठेरे अपारहो लाला । रोम रा-  
य हरखे सही ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ जे प्रजु सुं मुज नेह-  
हो लाला । परतिप चौल तणीपरे ॥ म्हा० ॥ जै जु-  
ग जाय अछैह हो लाला । नेतो कदयन उतरे ॥



म्हा० ॥ ५ ॥ प्रीत करी मुजसांणहो लाला । नही  
 अवरसुं की जस्ये ॥ म्हा० ॥ मधुकर केतकी माण  
 होलाला । किमते अरणी जीजस्ये ॥ म्हा० ॥ ६ ॥  
 घडी २ ने अंतहो लाला । जाय मिलुं जिनराज-  
 सुं ॥ म्हा० ॥ आतु पहर एकंतहो लाला । मुखे २  
 महाराज सुं ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ एह हमेसां हूंसहो  
 लाला । मननो अंतर मेटिये ॥ म्हा० ॥ कूड कहुंतो  
 सूंसहो लाला । रह रलिया प्रनु जेटिये ॥ म्हा०  
 ॥ ८ ॥ तूँहीज साजन मितहो लाला । प्राण सनेही  
 तूं धणी ॥ म्हा० ॥ चढेन बीजो चित्त हरे लाला ।  
 आस करुं इक तुम तणी ॥ म्हा० ॥ ९ ॥ जीव  
 तुमीणे रंग होलाला । रात दिवस रातोरहै ॥ म्हा०  
 ॥ नवि मेलिये संग होलाला । पल पिण विरहो  
 नवि सहै ॥ म्हा० ॥ १० ॥ जमतां पुरने गाम हो  
 लाला । साहिव नाम न विसरुं ॥ म्हा० ॥ वामानंदन  
 नाम हो लाला । सास समें संजारसुं ॥ म्हा० ॥ ११ ॥  
 जास्येघक्रिय जिकाय हो लाला । तुम विन गिणती  
 नाणसुं ॥ म्हा० ॥ जिण दिन जेटिस आथ  
 होलाला । तेदिन सफलो जाणसुं ॥ म्हा० ॥

॥ १२ ॥ तेवीसमा जगतात हरे हो लाला ।  
 पास अरज सुणो माहरी ॥ म्हण ॥ विध  
 विनती ए वात हो लाला । सुनिजर मांगु ताहरी ॥  
 म्हण ॥ १३ ॥ जेठनणी सुदी तीज हो लाला ।  
 सतरेसे वांसठ सभे ॥ म्हण ॥ वाचक बुध नो बीज  
 हो लाला । श्री सुख लाभ सहुनमे ॥ म्हण ॥ १४ ॥  
 गजानंद सुपसाय हो लाला । वचनविजे मूरत जणे ॥  
 म्हण ॥ कनक मूरत विगताय हो लाला । उलग-  
 जिन आगळ भणे ॥ म्हण ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७६ ॥

## अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन

आज आणद घन उमड्योरे । बुढ्यो अमृत धारा ॥  
 मीठो मिसरी थी घणोरे बाळा । मिलिया पास  
 कुमार ॥ आज जलां जेठ्या हो जगनायक दायक  
 श्री चिंतामण पास ॥ १ ॥ मोतीयेर ऊर मांडियोरे ।  
 घर आइ वह गंग ॥ हीवमो हेजे गेहे गहो । मोरे  
 आज हुवो उछरंग ॥ आज ॥ २ ॥ पूर्व जवे जे संचि-  
 यारे । सुकृत तणोरे जंमार ॥ आज उदे आई जली ।  
 म्हांतो दीठो प्रचुदीदार ॥ आज ॥ ३ ॥ संत सुधा-

मांहे सांजलीरे । सूरत अजव अनूप ॥ तिणथी  
मनको माहरोरे । स्वामी मोह्य रह्यो धर चूप ॥ आज०  
॥ ४ ॥ मोह्यो मानसर वरोरे । बांधी नवली प्रीत ॥  
छीलरीये दुके नही स्वामी । हंसाई याईज रीत ॥  
आज० ॥ ५ ॥ देखी मुद्रा ताहरी स्वामी । मिळगई  
तारो तार ॥ दीठां ही हिवे नहीं रूचे । देव अवर  
स्वोकार ॥ आज० ॥ ६ ॥ जेहवो ठे हित माहरोरे ।  
प्रभुजीसुं सपरांण ॥ तिमजे प्रभु पिण राख सरे  
तो । थाईसी कोड कढ्याण ॥ आज० ॥ ७ ॥ सगळो  
मिळवो सोहिलोरे । राज रमण धनरंग ॥ पिण विण  
सुवारथ नही मिले । म्हाने साहेबजीनो संग ॥  
आज० ॥ ८ ॥ संमत अठारे सतोतरेरे । पोष दशम  
शुभदीस ॥ विनयगणी प्रभु वीनवेरे । श्रीजिन लाभ  
सूरिस ॥ आज० ॥ ९ ॥

इति श्रीचिंतामणिपार्श्व जिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७७ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्व जिन स्तवन ॥

अश्वसेणजीरा ठावा हो अलवेसरु । मात वामा  
देवीरो नंद ॥ गिरवा प्रभुजी हो थें म्हारे आज्यो  
हो मनरंग महल में ॥ उपजे परम आणंद ॥

गिर० ॥ काशी देश हो नगर बाणारसी । ज्यां लीनो  
 अवतार ॥ गिर० ॥ काश्यप गोत्र हो प्रजु चढ़ती  
 कला । प्रभावती प्राण आधार ॥ गिर० ॥ १ ॥ थान  
 विराजे हो सुथर जेसाणमें । जंची अवल विशाल  
 ॥ गिर० ॥ इकदिस आपे हो गढ़रा कांगरा । पास  
 गरमलरी पार ॥ गिर० ॥ २ ॥ परगल मेलो हो पोश  
 दशमदिने । आवे सकल जहान ॥ गिर० ॥ थाल  
 वधावे हो माणक मोतिये । गावे सहनरनार ॥  
 गिर० ॥ ३ ॥ पडचाको सांचो हो जगमें परगमो । आवे  
 संग अपार ॥ गिर० ॥ कनक कचारोहरे घस केसर  
 जला । पूजवा पास जिणंद ॥ गिर० ॥ ४ ॥ भव श  
 दीजो हो चरणांकी चाकरी । मुजने हित सुखकंद  
 ॥ गिर० ॥ ज्युं नित बांधे हो प्रजु तुम ध्यान श्री ।  
 प्रेम सदा जिणचंद ॥ गिर० ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७७ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्व जिन स्तवन ॥

प्रजु पास जिणंद की शोचारे चालो अरे हां ।  
 चालो तो सब संव जेटण जाइये ॥ प्रजु ॥ छोटपुरो

अतहांये केरो । तीरथ जिणमांहे दोय सुरत सुख  
 कारीरे । वारी जाऊं सांवरी सुरत परवारीरे ॥ चालो ०  
 ॥ १ ॥ चिंतामण म्हारी चिंता चूरो । प्रभु शेषफणां  
 आशापूरोरे ॥ चालो ० ॥ २ ॥ मुखरो प्रभुजीको पुनम  
 चंदा । दीवलारी जोत अखंमोरे ॥ चालो ० ॥ ३ ॥ दर-  
 शण देख्यां आणंद उपजे । नाम लियां दुःख जावेरे ॥  
 चालो ० ॥ ४ ॥ सेवक प्रभुजी के शरणे आयो । बंढियां  
 पकरु निस्तारोरे ॥ चालो ० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७९ ॥

## ॥ अथ वैराग्यपद ॥

पिउठा जिन चरणांरी सेवा मीठी मानु लागे ॥  
 पिउ ० ॥ समकित सहस किरण रवि उदयो । जीवन  
 काय नवि जागे ॥ पी ० ॥ १ ॥ त्रिसना तरुणी दूर  
 उवेखी । कुमल पद्म ठे ठागे ॥ पी ० ॥ २ ॥ अंतर  
 हियडो जोय ऊघाढ़ी । घढ़ी घढ़ियाला वागे ॥ पी ०  
 ॥ ३ ॥ सुमत सुहागण इम चेतनने । समजावे मन  
 रागे ॥ पी ० ॥ ४ ॥ रूपविजे कवि चरण रसीधो ।  
 मोहन अनुभव मांगे ॥ पी ० ॥ ५ ॥

॥ इति वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ८० ॥

## ॥ अथ वैराग्य पद ॥

चेतन तूं क्या फिरे जूला । हिडोला करम का  
 जोला ॥ चे० ॥ मगन होय रह्यो क्या घट में । पड्यो  
 तूं आठही मदमें ॥ चे० ॥ १ ॥ कीनि तें कुमत  
 पटराणी । समऊ नहीं चित्तमें आणी ॥ चे० ॥ २ ॥  
 सुलट घट समऊ के देखो । चरण जिनराज का  
 जेटो ॥ चे० ॥ ३ ॥ जीवा तें समऊ चित आणी ।  
 लियो चारित्र धर ध्यानी ॥ चे० ॥ ४ ॥ प्रकृत  
 सब करम की जागी । लगन जिनराज से लागी ॥  
 चे० ॥ ५ ॥ राजा राम कहत करजोकी । प्रभुजीसुं  
 अरज हे मोरी ॥ चे० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री वैराग्यपदं संपूर्णम् ॥ ८१ ॥

## ॥ अथ श्रीशत्रुंजय रास ॥

श्रीरिसहेसर पायनमी, आणीमन आनंद ।  
 रासजणुं रलियामणो, शत्रुंजय सुखकंद ॥ १ ॥  
 संवत चार सत्योतरे, हुवा धनेसर मूर ।  
 तिण शत्रुंजय महातम किन्हु, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥  
 वीरजिणद समोत्तरचा, शत्रुजय ऊपर जेम ।

इन्द्रादिक आगलकहुं, शत्रुंजय महातम एम ॥३॥

शत्रुंजय तीरथ सारिखुं, नही ठे तीरथकोय ।

स्वर्ग मृत्यु पाताल में, तीरथ सघलां जोय ॥४॥

नामें नवनिधि संपजे, दीठां डुरित पुलाय ।

जेटंतां भवजय टले, सेवंतां सुखथाय ॥५॥

जंबूनामे द्वीपए, दक्षिण जरत मजार ।

सोरठ देश सोहामणो, तिहां छे तीरथसार ॥६॥

॥ ढाल पहिली, रामगिरि ॥

शत्रुंजयने श्रीपुंडरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक ॥

विमलाचलने करुं प्रणाम । ए शत्रुंजयना एकवीश

नाम ॥१॥ सुरगिरि महागिरिने पुण्यराश । श्रीपद

पर्वत इन्द्रप्रकाश ॥ महातीरथ पूरवे सुखकाम ।

ए० ॥ २ ॥ शाश्वत पर्वत ने दृढशक्ति । सुक्तिनिलो

तेणैकीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुठाम । ए०

॥३॥ पृथ्वीपीठ सुजद्र कैलास । पाताल मूल अक-

र्मक तास ॥ सर्वकाम कीजे गुणग्राम । ए० ॥ ४ ॥

शत्रुंजयना एकवीश नाम । जपेजबेठा अपणे ठाम ॥

शत्रुंजय यात्रानो फललहे । महावीर जगवंत एम

कहे ॥ ५ ॥

## ॥ दोहा ॥

शत्रुंजो पहिलेअरे, असीजोयण परिमाण ।  
 पहोलो मूले जुंचपणे, छव्वीज जोयणजाण ॥१॥  
 सित्तर जोयण जाणवो, वीजेअरे विशाल ।  
 वीसजोयण ऊचो कहाँ, मुऊ वंदन त्रणकाल ॥२॥  
 साठजोयण त्रीजे अरे, पहोलो तीरथ राय ।  
 शोल योजन ऊचो सही, ध्यान धरुं चित्तलाय ॥३॥  
 पचास जोयण पहोल पणे, चोथेअरे मजार ।  
 जुंचो दशजोयण अचल, नित्य प्रणमें नरनार ॥४॥  
 वार योजन पंचम अरे, मूल तणो विस्तार ।  
 ढोय जोयण ऊचो कहाँ शत्रुंज तीरथ सार ॥५॥  
 सातहाथ छठेअरे, पहोलो पर्वत एह ।  
 जुंचो होशे सोधनुप, शाश्वतुं तीरथ एह ॥६॥

**ढाल दूसरी जिनवरसुं मेरो मनलीनो**

केवलज्ञानी प्रथम तीर्थंकर, अनंत सिद्धा इण-  
 ठामरे । अनंत वली सिद्धसे इणठामे, तिणेरू  
 नित्य प्रणामरे ॥ १ ॥ शत्रुंजे साधु अनंता सिद्धा,  
 सिद्धसे वलीय अनंतरे । जेणे शत्रुज तीरथनहीं



जेव्यो, ते गरजावास लहंतरे ॥ श० ॥ १ ॥ फागुण सुदी  
आठम ने दिवसे, रिषभदेव सुखकाररे । रायण-  
खंख समोसरथा स्वामी, पूरब नवाणुं वाररे ॥

श० ॥ ३ ॥ नरतपुत्र चैत्री पुनमदिन, इण शत्रुंजे  
गिरि आयरे । पांच कोमि शुं पुंरुकि सिद्धा,  
तेणें पुंरुकी कहायरे ॥ श० ॥ ४ ॥ नमि

विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोमि संघातरे ।

फागुण सुदी दशमी दिन सिद्धा, तेणें प्रभु प्रणमुं  
प्रजातरे ॥ श० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदशने

दिन, नमि पुत्री चौशठरे । अणसणकरि शत्रुंज

गिरि ऊपर । ए सहु सिद्धा एकठरे ॥ श० ॥ ६ ॥

पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, द्रावडने वारि खिल्लरे ।

कार्तिक सुदि पुनम दिन सिद्धा, दशकोमि मुनि

निःशिल्लरे ॥ श० ॥ ७ ॥ पांचे पांरुव इणगिरिसिद्धा,

नब नारद रिषि रायरे । सांब प्रद्युम्न गया तिहां

मुक्तें, आठे कर्म खपायरे ॥ श० ॥ ८ ॥ नेमि विना

त्रेवीस तीर्थकर, समोसरथा गिरि शृंगरे । अजित

शांति तीर्थकर बेहु, रह्या चौमासुं रंगरे ॥ श०

॥ ९ ॥ सहस्स साधु परिवार संघाते, थावच्चा सु-

तसाधरे । पांचसे साधुशुं शैलंग मुनिवर, शत्रुजे  
 शिवसुख लाधरे ॥ श० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि  
 शत्रुंजे सिद्धा, जरते सरने पाटरे । राम अने नर-  
 तादिक सिद्धा, मुक्ति तणी ए वाटरे ॥ श० ॥ ११ ॥  
 जाली मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी को-  
 रीरे । साधु अनता शत्रुंजे सिद्धा, प्रणमं धेकर  
 जोनीरे ॥ श० ॥ १२ ॥

## ॥ ढाल तीसरी चौपाईनी ॥

शत्रुंजाना कहु गोलजहार, ते सुणजो सहको  
 सुविचार । सुणतां आणंद अंग नमाय, जन्म जन्म  
 ना पातक जाय ॥ १ ॥ ऋषजदेव अयोध्यापुरी,  
 समोसरया सामी हितकरी । जरतगयो वंदनने  
 काज, ए उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जग मां  
 महोटी अरिहंत देव, चोशठ इन्द्र करे जसु सेव ।  
 तेहथी महोटी संघकहाय, जेहने प्रणमें जिनवर-  
 राय ॥ ३ ॥ तेहथी महोटी संघवी कखो, जरत मुणीने  
 मनगह गयो । जरतरहे ते किम पामिये, प्रजु  
 कहे शत्रुज यात्राकिये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघयी पढमुक्त,  
 ने थापो हुं अंगज तुक्त । इन्हें अ.एया अक्षन

वास, प्रभु आपे संघवी पदतास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तेणी-  
 वेला तत्काल, जरत सुन्नद्रा वेहुनेमाल । पहेरावी  
 घर संप्रेकिया, सखर सोना ना रथ आपिया ॥ ६ ॥  
 ऋषज देवनी प्रतिमावली, रत्न तणी कीधीमनरली ।  
 जरते गणधर धर तेकिया, शांतिक पुष्टिक सहुतिहां  
 किया ॥ ७ ॥ कंकोतरी मूकी सहुदेश, जरतें तेढ्यो  
 संघ अशेष । आठ्यो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम तीर्थ  
 करयात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जक्ति कीधी अतिघणी,  
 संघ चलायो शत्रुंजयभणी । गणधर बाहुवली केवली,  
 मुनिवर कोमिसाथे लियावली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तिनी  
 सघली रिद्धि, जरते साथे लीधी सिद्धि । हय  
 गय रथ पायक परिवार, तेतो कहेलां नावेपार ॥ १० ॥  
 जरते श्वर संघवी कहेवाय, मार्गे चैत्य उद्धरतो  
 जाय । संघआठ्यो शत्रुंजयपास, सहुनी पूगी मननी  
 आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो शत्रुंजोराय, माणि-  
 माणिक मोतीशुं वधाय । तिणें ठामे रही महोत्सव  
 कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ श-  
 त्रुंजय उपर चढ्यो, फरसंता पातक जरुपड्यो ।  
 केवलज्ञानी पगलातिहां, प्रणम्या रायण रुंखठे

जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्रें  
 आणी सुपवित्त । नदी शत्रुंजी सोहामणी, भरतें  
 दीठी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणें उपदेश,  
 इन्द्रेंवली ढीधो आदेश । आदिनाथ तणें देहरो,  
 भरते कराव्यो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनाना प्रासाद  
 उत्तंग, रत्नतणी प्रतिमा मनरंग । भरतें श्री आ-  
 दिश्वर तणी, प्रतिमा स्थापी सोहामणी ॥ १६ ॥  
 मरुदेवीनी प्रतिमा वली, माहीपूनमथापी रली । वा-  
 ह्नीसुन्दरी प्रमुखप्रासाद, भरतें थाप्या नवलेनाद  
 ॥ १७ ॥ एमअनेक प्रतिमा प्रासाद, जरतें कराव्या  
 गुरु प्रसाद । एह जण्यो पहेलो उद्धार, सघलोही  
 जाणे संसार ॥ १८ ॥

## ॥ ढाद चौथी सिंधूरो आशावरी ॥

जरत तणे पाट आठमें, दंरुवीर्य थयो रायोजी ।  
 जरत तणी परें संघक्रियो, शत्रुंजय सघवी कहायो-  
 जी ॥ १ ॥ शत्रुंज उद्धार सांजना, शोलमहोटा श्रीका-  
 रोजी । असेख्याता बीजावली, ते न कहुं अधिका-  
 रोजी ॥ श० ॥ १ ॥ चैत्यकराव्युं रूपातणु, सोना  
 ना विंव सारोजी । मूलगां विंव जंकारियां, पश्चि-

म दिशि तेणीवारोजी ॥ श० ॥ ३ ॥ शत्रुंजनी या-  
 त्रा करी, सफल कियो अवतारोजी । दण्ड वीर्य  
 राजा तणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ४ ॥ सो  
 सागरोपम व्यतिक्रम्या, दण्ड विरजथो जेवारोजी ।  
 ईशानेंद्र करावियो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ५ ॥  
 चोथा देवलोकनो धणी, माहेन्द्रनाम उदारोजी ।  
 तिणें शत्रुंजयनो करावियो, ए चोथो उद्धारोजी ॥  
 श० ॥ ६ ॥ पांचमां देवलोकनो धणी, ब्रह्मैन्द्र  
 समकित धारोजी । तिणें शत्रुंजयनो करावियो,  
 ए पांचमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ७ ॥ जवनपति  
 इन्द्रतणो कियो, ए ठडो उद्धारोजी । चक्रवर्ति  
 सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ श०  
 ॥ ८ ॥ अजिनन्दन पासे सुण्यो, शत्रुंजयनो अधि-  
 कारोजी । व्यंतरेंद्र करावियो, ए आठमो उद्धा-  
 रोजी ॥ श० ॥ ९ ॥ चन्द्रप्रज्ञ स्वामीनो पो-  
 तरो, चन्द्रशेखर नाम मद्धारोजी । चन्द्रयशरायें  
 करावियो, ए नवमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १० ॥  
 शांतिनाथनी सुणीदेशना, शांतिनाथ सुत वि-  
 चारोजी । चक्रधर राय करावियो, ए दशमो उ-

आरोगी ॥ श० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जगदीपतो,  
 मुनिसुव्रत सुवारोगी ॥ श्री रामचन्द्रें करावि-  
 यो, ए इग्यारमो उद्धारोगी ॥ श० ॥ १२ ॥ पाएरु-  
 व कहे अमे पापीया, किमवुटु मोरी मायोगी ॥ कहे  
 कुनी शत्रुंजातणी, यात्रा क्रियां पाप जायोगी ॥ श०  
 ॥ १३ ॥ पांचे पाण्डव संघकरी, शत्रुंजय जेद्व्यो अ-  
 पारोगी ॥ काष्ट चेत्य विंव लेपनो, ए वारमो उद्धारो-  
 रोगी ॥ श० ॥ १४ ॥ मम्माणी पापाणनी, प्रतिमा  
 सुन्दर सरूपोगी ॥ श्री शत्रुंजयनो संघकरी, थापी  
 सकल सरूपोगी ॥ श० ॥ १५ ॥ अष्टोत्तर सो वरसां  
 गयां, विक्रम नृपथी जिवारोगी ॥ पोरवारु जावरु  
 करावियो, ए तेरमो उद्धारोगी ॥ श० ॥ १६ ॥ संवत  
 चारतेरोत्तरे, श्रीमाली सुविचारोगी ॥ बाहुरुदे  
 मुहूर्तें करावियो, ए चांदमो उद्धारोगी ॥ श०  
 ॥ १७ ॥ सवत तेरएकोत्तरे, देग लहेर अधिकारोगी ॥  
 समरे शाहे करावियो, ए पंढरमो उद्धारोगी ॥ श०  
 ॥ १८ ॥ सवत पन्तर सर्यासीयें, वैशाख सुदी शु-  
 नवारोगी ॥ करमेदोमी करावियो, ए सोलमो  
 उद्धारोगी ॥ श० ॥ १९ ॥ सांप्रत काखे सोलमो

ए वरतेछे उद्धारोजी ॥ नित्य २ कीजे वंदना, पामी-  
जे जव पारोजी ॥ श० ॥ २० ॥

## ॥ दोहा ॥

वली शत्रुंज महातम कहुं, सांजलो जिमठे तेम ।  
सूरि धनेसर इम कहे, महावीरें कह्यो एम ॥ १ ॥  
जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुंजे पूजनीक ।  
जगवंतनो जेख मानतां, लाज होवे तहकीक ॥ २ ॥  
श्री शत्रुंजा उपरे, चैत्य करावे जेह ।  
दल परिमाण समुंलहै, पढ्योपम सुखतेह ॥ ३ ॥  
शत्रुंजा ऊपर देहरुं, नवुं निपावे कोय ।  
जीर्णोद्धार करावतां, आठगणुं फलहोय ॥ ४ ॥  
शिरऊपर गागरधरी, स्नात्रकरावे नार ।  
चक्रवर्त्तीनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥  
काती पूनेम शत्रुंजे, चढीने करे उपवास ।  
नारकीसो सागर तणो, करे कर्म नो नाश ॥ ६ ॥  
कातीपरब महोटुं कह्युं, जिहां सिद्धा दशकोमि ।  
ब्रह्मस्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे ठोमि ॥ ७ ॥  
सहस्र लाख श्रावक जणी, जोजन पुण्यविशेष ।  
शत्रुंजसाधु पढिलाजतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

## ॥ ढाल पांचमी ॥

धन्य १ गज सुकुमारने ॥ एदेशी ॥

शत्रुंजे गयां पाप वृट्टिये, लीजे आलोयण एमोजी ।  
 तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कहुं तेमोजी  
 ॥ श० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए  
 आलोयण तासोजी । चैत्रीदिन शत्रुंजय चढी, एक  
 करै उपवासोजी ॥ श० ॥ २ ॥ रत्न तणी चोरी  
 करी, सात आंविल शुद्ध थायजी । काती सात  
 दिन तप कियां, रत्न हरण पाप जायजी ॥ श०  
 ॥ ३ ॥ कांसा पीतल त्रांवा रजतनी, चोरी कीधी  
 जेणजी । सात दिवस पुरिमकृकरे, तो ठूटे गिरि  
 एणजी ॥ श० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मुगिया, जे-  
 णेचोरयां नर नारोजी । आंविल करी पूजा करे,  
 त्रण टंक शुद्ध आचारोजी ॥ श० ॥ ५ ॥ धान्य पाणी  
 रसचोरियां, जेजेटे सिद्ध क्षेत्रोजी । शत्रुंज तलहटी  
 साधुने, पडिलाजे शुभचित्तोजी ॥ श० ॥ ६ ॥  
 वस्त्राचरण जेणें हरयां, ते ठूटे इणें मेलोजी । आ-  
 दिनाथनी पूजाकरे, प्रह उठीवहु वेलोजी ॥ श०  
 ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जेहरे, ते शुद्धथाये एमोजी ।



अधिकुं द्रव्य खरचे तिहां, पाले पोषे बहु प्रेमोजी ॥  
 श० ॥ ७ ॥ गाय जेंस गोधा मही, गज गृह चोरण हारो-  
 जी । बूटे ते तप तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥  
 श० ॥ ८ ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लखे आपणां  
 नामोजी । बूटे ठम्मासी तप क्रियां, सामाधिक  
 तिण ठामोजी ॥ श० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका,  
 सधव विधव गुरु नारोजी । व्रतजांजे तेहने कहुं,  
 छम्मासी तप सारोजी ॥ श० ॥ ११ ॥ गो विप्र  
 बालक कृषी, एहनो घातक जेहोजी । प्रतिमां  
 आगे आलोचतां, बूटे तप करीएहोजी ॥ श० ॥ १२ ॥

## ॥ ढाल छट्टी ॥

॥ कृषज प्रभुजीये ॥ एदेशी ॥

संप्रति काले सोलमो ए । ए वरते छे उद्धार ॥ शत्रुं  
 जय यात्रा करुं ए । सफल करुं अवतार ॥ श० ॥ १ ॥  
 छहरी पालतां चालीयें ए । शत्रुंज केरीवाट ॥  
 पालीताणे पहुँचीयें ए । संघमिद्वया बहुथाट ॥ श०  
 ॥ २ ॥ ललित सरोवर देखियें ए । बलीसत्तानीवाव ॥  
 तिहां विशामो लीजियें ए । बरुने चोत्तरे  
 आव ॥ श० ॥ ३ ॥ पालीताणे पावडीए । चढीयें

उठि प्रजात । शेत्रुंजी नदी सोहामणी ए ।  
 दूरथकी देखात ॥ श० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगलाज  
 नेहके ए । कलिकुंरु नमियेपास ॥ वारीमांहे पेशिये  
 ए । आणी अंग उह्वास ॥ श० ॥ ५ ॥ मरुदेवी-  
 टुंक मनोहरुए । गज चढी मरुदेवी माय ॥  
 शांतिनाथ जिन सोलमो ए । प्रणमीजे तसु  
 पाय ॥ श० ॥ ६ ॥ वंश पोरवामे परगडो ए ।  
 सोमजी शाह महार ॥ रूपजी संघवी करावियो  
 ए । चौमुख मूल उद्धार ॥ श० ॥ ७ ॥ श्रीजिन  
 राज सूरिश्वरुए । खरतरगच्छ गणधार ॥ स्वहाथे  
 जेणे प्रतिष्ठा करिए । शुभदिवस जुनवार ॥ श० ॥ ८ ॥  
 चौमुख प्रतिमा नरचिये ए । जमती मांहे जन्नावि-  
 व ॥ पांचे पांरुव पूजिये ए ॥ अदबुद आदि प्रलवं ॥  
 श० ॥ ९ ॥ खरतर वसई खांत सुं ए । विंव जुहारं  
 अनेक ॥ नेमनाथ चोरी नसुं ए । टालुं अलग  
 उछेग ॥ श० ॥ १० ॥ धर्मछार मांहे नीतरुं ए ।  
 कुगति करुं अनिदुर ॥ आवुं आदिनाथ देहरे  
 ए । कर्म करु चकचूर ॥ श० ॥ ११ ॥ मूलनायक  
 प्रणमुं मुदा ए । आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारं

देहरे ए । जमती मांहे जगवंत ॥ श० ॥ १२ ॥  
 शत्रुंजा उपर कीजिये ए । पांचेठामे स्नात्र ॥  
 कलश अष्टोत्तरशो करी ए । निर्मल नीरशुंगात्र  
 ॥ श० ॥ १३ ॥ प्रथम आदिश्वर आगलें ए ।  
 पुंरुकीक गणधार ॥ रायणतल पगलां वलि ए ।  
 शांतिनाथ सुखकार ॥ श० ॥ १४ ॥ रायणतले  
 पगलां नमुं ए । चौमुख प्रतिमा चार ॥ बीजी  
 चूमें विंबवली ए । पुंरुकीक गणधार ॥ श० ॥ १५ ॥  
 सूरज कुंड निहालीये ए । अतिजलि उलखा  
 जोल ॥ चेलणतलाई शिऊसिला ए । अंगेकरीशुं  
 उल्लोल ॥ श० ॥ १६ ॥ आदि पूरपाजे उत्तरुं ए ।  
 सिऊवमलहुं विश्राम ॥ चैत्य प्रवामी इणीपरेकरी  
 ए । सीधावंठित काम ॥ श० ॥ १७ ॥ जात्राकरी  
 शत्रुंजा तणी ए । सफल कियो अवतार ॥ कुशल  
 हेमसुं आविया ए । संघ सहु परिवार ॥ श० ॥ १८ ॥  
 शत्रुंजय महातम सांजलीए । रासरच्चो अनुसार ॥  
 जेभवि गावे जावशुंए । आनंद होय अपार ॥ श०  
 ॥ १९ ॥ शत्रुंजयरास सोहामणो ए । सांजलजो  
 सहुकोय ॥ घरवेठां जणेंजावसुं ए । तसुजात्राफल

होय ॥ श० ॥ १० ॥ जणशालीथिरु अतिजलोए ।  
 दयावंतदातार ॥ शत्रुंजयसंघ करावियोए । जेसल-  
 मेर मजार ॥ श० ॥ ११ ॥ शत्रुजय महात्म्य ग्रंथ  
 थीए । रासरच्यो अनुसार ॥ जाव भक्ते जणतां  
 थकांए । पामीजे जवपार ॥ श० ॥ १२ ॥ संवत १६७६  
 सोलठयासीये ए । आवण शुदि सुखकार ॥ रास-  
 जण्यो शत्रुंजा तणो ए । नगर नागोर मजार ॥ श०  
 ॥ १३ ॥ गिरुजं गच्छखरतर तणो ए । श्री जिनचंद  
 सूरिस ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए । सकल चंद  
 सुजगीस ॥ श० ॥ १४ ॥ तास शिष्य जगजाणीये  
 ए । समय सुदर उवझाय ॥ रास रच्यो तेणें रुवडो  
 ए । सुणतां आनंद थाय ॥ श० ॥ १५ ॥

॥ इति श्री शत्रुंजय रास संपूर्णम् ॥ ७१ ॥

## ॥ अथ श्रीगौतम रास ॥

वीर जिणेंसर चरण कमल कमला कय वासो ।  
 पण मवि पज्जणिसु सामि साल गोयम गुरु रासो ॥  
 मण तणु वयणे कंत करवि निसुणहु जो जविया ।  
 जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया  
 ॥ १ ॥ जवूदीव सिर जरह खित्त खोणी तल मरुण ।

सगह देस सैणिय नरेस रिउ दल वल खंडण ॥  
 धणवर गुठवर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा ।  
 विप्प वसे वसु जुइ तत्थ तसु पुहवी जज्जा ॥ २ ॥  
 ताणपुत्त सिरि इंदजूय जूव लय पसिद्धो । चवदह  
 विज्जा विविह रूव नारी रसलुद्धो ॥ विनय विवेक  
 विचार सार गुण गणह मनोहर । सात हाथ  
 सुप्रमाण देह रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण  
 कर चरण जणवि पंकजाल पाणिय । तेजहि तारा-  
 चंद सूरि आकास जसाणिय ॥ रूवहि सयण  
 अनंग करवि मेढ्यो निरधाणिय । धीरम मेरु गंजीर  
 सिंधु चंगम चय चाणिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव  
 जास जणजंपे किंचिय । एकाकी किल भित्त इत्थ गुण  
 मेढ्या संचिय ॥ अहवा निच्चय पुव्वजम्म जिणवरइ-  
 ण अंचिय । रंजा पलमा गवरि गंग रतिहाविधि वं-  
 चिय ॥ ५ ॥ नयवुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल्ल  
 रहियो । पंच सयां गुण पात्र छात्र हीने परवरियो ॥  
 करय निरंतर यइ करम मिथ्या मति मोहिय ।  
 अणचल होस्ये चरम नाण दंसणह विसोहिय  
 ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव २ जरहवासंमि । खोणि तल

मंडण । मगहं देश सेणिय नरेसर । वर गुवर गाम-  
 तिहां । विप्प वसे वसु जूइ । सुंदर तसु पुह विज्जा ।  
 सयल गुण गण रूव निहाण । ताण पुत्त विज्जा  
 निलो । गोयम अतिहि सुजाण ॥ ९ ॥ जास ॥  
 चरम जिणेंसर केवल नाणी । चोविह संघ पइ-  
 छा जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो । चउविह देव-  
 निकायहिं जुत्तो ॥ १० ॥ देवहि समवसरण तिहां  
 कीजे । जिण दीठे मिथ्या मत ठीजे ॥ त्रिचुवन  
 गुरु सिंहांमन वेठा । ततखिण मोहदिगंन पइछा  
 ॥ ११ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा । जाये नाठा  
 जिम दिन चोरा ॥ देव पुंडुभी आगासे बाजी ।  
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १२ ॥ कुसुम वृष्टि  
 विरचे तिहां देवा । चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा ॥  
 चामर छत्र सिरोवरी सोहे । रूवहि जिनवर जग  
 सहु मोहे ॥ १३ ॥ उपसम रसजर वर वर संता ।  
 जोजन बाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान  
 जिण पाया । सुरनर किन्नर आवइराया ॥ १४ ॥  
 कंत समोडिय जल हल कंता । गयण विमाणहि  
 रण रण कता ॥ पेखवि इन्द्रज मन चिन्ते । सुर  
 आवे अम जइ हुवंते ॥ १५ ॥ तीर तरक जिम

तैवहिता । समवसरण पुहता गह गहिता ॥ तौ  
 अजिमाने गोयम जंपे । इण अवसर कोपे तणु  
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले । सुर जा-  
 णंता इमकांइ कोले ॥ मो आगल कोइ जाणजणी-  
 जे । मेरुं अवर किम ओपम दीजे ॥ १५ ॥ वस्तु ॥  
 धीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न । पावापुर  
 सुर महिय । पत्तनाइ संसार तारण । तिहिं देवइ  
 निम्महिय । समवसरण बहु सुखकारण । जिणवर  
 जग उज्जोयकरे । तेजहि कर दिनकार । सिंहा-  
 सण सामीठव्यो । हुओतो जय २ कार ॥ १६ ॥  
 ॥ जास ॥ तो चहियो घणमाण गजे । इंद्र चूइ  
 भूय देवतो । हुंकारो कर संचरिय । कवणसु जिण-  
 वर देवतो ॥ जोजन भूमि समोसरण । पेखवि प्रथमा-  
 रंजतो । दहदिस देखे विबुध वधू । आवंती सुर रंज  
 तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरु ध्वज । कोसीसे  
 नव घाटतो । वयर विवर्जित जंतुगण । प्राती  
 हारिज आठतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर । इ-  
 न्द्र इन्द्राणि रायतो । चित्त चमक्रिय चिंतवे ।  
 सेवंतां प्रभु पायतो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी-  
 वीर जिण । पेखवि रूप विशालतो । एह अचंचव

संजवए । साचोए इन्द्रजालतो ॥ तो बोलावइ  
 त्रिजग गुरु । इन्द्र जूइ नामेणतो । श्रीमुख संसा-  
 सामि सवे । फेरवेद पण्णतो ॥ १९ ॥ मानमेल  
 मद ठेल करे । जगतहिं नाम्यो सीसतो । पंच सयासुं  
 वृत लियोए । गोयम पहिलो सीसतो ॥ बंधव संयम  
 सुणविकरे । अगन जूइ आवेयतो । नामलेइ आ-  
 चास करे । ते पिण प्रतिबोधेयतो ॥ २० ॥ इण  
 अणुक्रम गणहर न्यण । आप्या वीर इग्यारतो ।  
 तो उपदेशे जुवन गुरु । संयमसुं व्रत चारतो ॥ विहुं  
 उपवासे पारणो ए । आपणपे विहरंततो । गोयम  
 संयम जग सयल । जय २ कार करंततो ॥ २१ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ इन्द्रजूइ २ चढियो बहुमान । हुंकारो  
 करि कंपतो । समवसरण पहुंतो तुरंततो । जेइ  
 संसा सामी सवे । चरम नाइ फेरु फुरंततो ।  
 बोध बीज संजाय मने । गोयम जवहि विरत्त ।  
 दिक्ख वेहि सिख्या सही । गण हर पय संपत्त ॥  
 २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण । आज  
 पचेलम पुण्य जरो । दीठा गोयम सामि । जो निय  
 नयणे अभियजरो ॥ समवसरण मजार । जे जे  
 संसा उपजेए । ते ते पर उपगार । कारण पूछे मुनि



पवरो ॥ १३ ॥ जिहां दीजे दीख । तिहां केवल  
 उपजेए । आपकने अणहुंत । गोयम दीजे दान इम ॥  
 गुरु ऊपर गुरुनक्ति । सामी गोयम उपनिय । अण  
 चल केवल नाण । रागज राखे रंगभरे ॥ १४ ॥ जो  
 अष्टापद सेल । वंदे चढ चउवीस जिण । आत-  
 मलाब्धि वसेण । चरम सरीरी सोजमुनि ॥ इय  
 देसणा नि सुणेह । गोयम गणहर संचरिय । ता-  
 पस पनरस एण । जो मुनि दीठो आवतो ए ॥  
 १५ ॥ तप सो सिय नियअंग । अह्मां संगतिन  
 ऊपजेए । किम चढस्ये दृढकाय । गज जिम  
 दीसे गाजतोए ॥ गिरु ओए अजिमान । तापस  
 जो मन चिन्तवेए । तो मुनि चढियो वेग । आ-  
 लंबवि दिनकर किरण ॥ १६ ॥ कंचन मणि नि-  
 पन्न । दंड कलस ध्वज बरुसहिय । पेखवि परमा-  
 णंद । जिणहर जरते सरमहिय ॥ निय २ काय  
 प्रमाण । चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब । पणम-  
 वि मन उल्लास । गोयम गणहर तिहां वसिय  
 ॥ १७ ॥ वयर सामीनो जीव । तिर्यक जूंजक  
 देवतिहां । प्रतिबोध्या पुंरुरीक । कंरुरीक अध्ययन  
 जणी ॥ बलता गोयम साम । सवि तापस प्रतिबोध

करे । लेई आपण साथ । चाळे जिम जूथाधिपति  
 ॥ २८ ॥ खीर खांरु घृत आण । अमियवूठ अंगूठ  
 ठवे । गोयम एकण पात्र । करावे पारणो सवे ॥  
 पंचसयां शुभजाव । उज्जल जरियो खीरमिसे । सांचा  
 गुरु संयोग । कवलत केवल रूपहुय ॥ २९ ॥ पंच-  
 सयां जिणनाह । समवसरण प्राकारत्रय । पेखवि  
 केवल नाण । उप्पन्नो उज्जोयकरे ॥ जाणे जण  
 विपीयूष । गाजंती धन मेघ जिम । जिण वाणी  
 निसुणेवि । नाणी हुआ पंचसयां ॥ ३० ॥ वस्तु ॥  
 इण अनुक्रम २ नाण संपन्न । पनरेसे परिवरिय ।  
 हरिय डुरिय जिणनाह वंदइ । जाणेवि जग गुरु  
 वयण । तिहिं नाण अप्पाण निंदइ । चरम जिनेसर  
 इणजणे । गोयम मकरिस खेव । ठेहजाय आपण  
 सही । होस्यां तुह्यावेव ॥ ३१ ॥ जास ॥ सा-  
 मियोए वीरजिणंद । पूनमचद जिम उल्लसिय ।  
 विहरियोए जरह्वासंमि । वरस बहुत्तर संवसिय ॥  
 ठवतोए कणय पळमेण । पायकमल सघे सहिय ।  
 आवियोए नयणाणंद । नयर पावापुर सुरमहिय  
 ॥ ३२ ॥ पेखियोए गोयम सामि । देवसमा प्रति-  
 बोधकरे । आपणोए त्रिलोदेवि । नन्दन पुह्तो

परमपण ॥ बलतोण देव आकास । पेखवि जाण्यो  
जिणसमेण । तोमुनिण मनविषवाद । नादजेद जिम  
ऊपनोण ॥ ३३ ॥ इणसमेंण सामिय देख । आप-  
कनासुं टालियोण । जाणतोण तिहु अणनाह ।  
लोकविवहारन पालियोण ॥ अतिजलोण कीधलो-  
सामि । जाण्यो केवल मांगस्येण । चिंतव्योण  
बालक जेम । अहवा केडे लागस्येण ॥ ३४ ॥ हुं-  
किमण बीरजिणंद । भगतहिं चोले भोलव्योण ।  
आपणोण उंचलो नेह । नाहनसंपै साचव्योण ॥  
साचोण ए वीतराग । नेह न हैजे लालियोण ।  
तिण समेंण गोयम चित्त । राग वैरागे वालियोण  
॥ ३५ ॥ आवतोण जो उद्धट । रहितो रागे सा-  
हियोण । केवलण नाण उपन्न । गोयम सहिज  
उमाहियोण ॥ तिहुअणण जय २ कार । केवल  
महिमा सुरकरेण । गणधरुण करय वखाण । जविथा  
जवाजिम निस्तरेण ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पठम  
गणहर २ वर्ष पच्चास । गिहवासे संवसिय । तीस  
वरस संजम विजूसिय । सिरि केवल नाण पुण ।  
बार वरस तिहु अण नमं सिय । राजग्रही नयरी  
ठव्यो । वाणवइ वरसाउ । सामी गोयम गुणनिलो ।

होस्ये शिवपुर ठाठ ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम  
 सहकारे कोयल टहुके । जिम कुसमावन परमल-  
 महके । जिम चन्दन सोगंध निधि । जिम गंगा-  
 जल लहिर्यां लहके । जिम कणयाचल तेजें  
 ऊलके । तिम गोयम सोजाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम  
 मानसरोवर निवसे हंसा । जिम सुरतरुवर कण-  
 यवतंसा । जिम महुयररा जीव वने । जिम रयणा-  
 गर रयणेविलसे । जिम अंबर तारागण विकसे ।  
 तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनम निसि  
 जिम ससि यर सोहे । सुर तरु महिमा जिम जग-  
 मोहे । पूरव दिसि जिम सहसकरो । पंचानन  
 जिम गिरिवरराजे । नरवई घर जिम मंगलगाजे ।  
 तिम जिनशाशन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु  
 तरुवर सोहे साग्या । जिम उत्तम मुख मधुरी  
 भापा । जिम वन केतकी महमहेए । जिम चूमी-  
 पति जुयवल चमके । जिम जिनमंदिर घंटारणके ।  
 गोयम लव्धे गह गह्योए ॥ ४१ ॥ चिन्ता मणि कर  
 चढियो आज । सुरतरु सारे वंछिय काज । काम  
 कुंज सह वसिहु आए । कामगर्वीपुरे मनकामी ।  
 अष्टमहा सिद्धि आवे धामी । सामी गोयम अणु-

सरोए ॥ ४२ ॥ पणवद्धर पहिलो पजणीजे । माया-  
 वीजो श्रवण सुणीजे । श्रीमती शोभा संजवोए ।  
 देवांधुर अरिहंत नमीजे । विनयपहु उवजाय  
 शुणीजे । इणमंत्रे गोयम नमोए ॥ ४३ ॥ परघर  
 वसतां काय करीजे । देशदेशांतर कांय नमीजे  
 कवण काज आयासकरो । प्रह ऊठी गोयम सम-  
 रीजे । काज समगल ततखिण सीजे । नवनिधि  
 विलसे तिहांघरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय चारोत्तर वरसे ।  
 गोयम गणहर केवलदिवसे । कीयो कवत्त उपगार  
 परो । आदहि संगल एयजणीजे । पुंरवं सहोच्छव  
 पहिलो दीजे । रिद्धि वृद्धि कढ्याण करो ॥ ४५ ॥  
 धन माता जिण उपरे धरियो । धन्य पिता जिण  
 कुल अवतरियो । धन्य सुगुरु जिण दीखियोए ।  
 विनयवंत विद्याजंकार । तसुगुण पुहवी नलज्जइ  
 पार । वरुजिम साखा विस्तरोए । गोयम स्वा-  
 मीनो रास जणीजे । चउविइ संघ रलियायत की-  
 जे । रिद्धि वृद्धि कढ्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चन्दन  
 छनो दिरावो । माणक मोतियां चोकपूगवो । रयण  
 सिंघासण बेसणोए । तिहां बैठी गुरु देसना

देसी । जविक जीव ना काज सरेसी । नित २  
मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥

॥ इति श्री गौतम रास सम्पूर्णम् ॥ ७३ ॥

॥ अथ गौतम स्वामी की प्रजाती ॥

राग प्रजाती जे करे । प्रह जगमने सूर ॥ चूखा  
जोजन संपजे । कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अगूने  
अमृत वसे । लब्धि तणा भंजार ॥ जे गुरु गौतम  
समरिये । मन वंछित दातार ॥ २ ॥ पुंढरीक गोयम  
मुहा । गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीने प्रणमता ।  
चवदेने वावन्न ॥ ३ ॥ खतिखमं गुणकलियं । सुवि-  
णियं सबलज्जि संपण ॥ वीरस्स पढम सीसं ।  
गोयम सामी नमं सामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणा-  
जाय । सर्वार्जीष्टार्थ दायने ॥ सर्वलब्धि निधानाय ।  
गौतम स्वामिने नमः ॥ ५ ॥

॥ इति श्री गौतम स्वामी प्रजाती सम्पूर्णम् ॥ ७४ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग विहाग ॥

समऊ नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो ॥  
समऊ ॥ पल २ आयु घटत ठिन २ ही । गलत

जात जैसे ओरो ॥ समऊ ॥ १ ॥ या तनको  
तोही न जरोसो । छिन मासो छिन तोरो ॥ जो  
कुछ करे सो अवही करले । पुनपर हो जिम  
ओरो ॥ समऊ ॥ २ ॥ तन धन आदि सकल  
सामग्री । गरज २ घन घोरो ॥ रूपचंद त्रिसना  
को बांध्यो । जान बूझ जयो ओरो ॥ समऊ ॥ ३ ॥

॥ इति श्री वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ७५ ॥

## ॥ अथ महावीर स्वामी स्तवन ॥

मगधदेश सुहावनो रे । खेत्रीकुंठ पुरजान ॥  
राजासिद्धारथ तपतपे रे । अरितम भेटनभान ॥  
जिनंदराय धरजो अवि हडनेह ॥ १ ॥ सील  
रयननी पेटिकारे । त्रिशलाराणी नाम ॥ रूपेजोती  
अपठरा रे । सहुमें वधावी माम ॥ जि० ॥ २ ॥  
महाविजयथो आवियो रे । आसाढ सुदो ठठ  
जान ॥ चउदे स्वप्ने परिवरा रे । धरता ठे त्रणनान ॥  
जि० ॥ ३ ॥ पूर्णस्थित अवग्रह लहीरे । जन्मलियो  
शुभवार ॥ चैत्र सुदो तेरस दिनेरे । वरत्या मंगल-  
चार ॥ जि० ॥ ४ ॥ हिव आसन कंण्या थकारे ।  
निजपरिवारे आय ॥ दिशि कुमरी जेझी थई रे ।

आढ्या सहुदेवराय ॥ जि० ॥ ५ ॥ मेरुसिखर  
 उत्सव करे रे । करतां जय मनजाव ॥ संशय मे-  
 ठ्यो इंद्रनो रे । घर आढ्या जिनराय ॥ जि० ॥ ६ ॥  
 तीस वर्ष सुख भोगव्या रे । वर्षिदान ढिराय ॥  
 मगसिरवदि दशमी जलीरे । दीक्षाली वनजाय ॥  
 जि० ॥ ७ ॥ वारे वर्ष लग काटियारे । कर्मनिका-  
 चित जान ॥ सुदी वैशाख दशमो जलीरे । विजय  
 महूरत मान ॥ जि० ॥ ८ ॥ पूर्व करणना भावथी  
 रे । क्षीण मोह गुणठान ॥ क्षुब्धक श्रेणि में आवियो  
 रे । उपन्यो केवल ज्ञान ॥ जि० ॥ ९ ॥ पट्टव्य  
 आवे आतमारे । गति आगति विचार ॥ बंधोदय  
 उदीरणा रे । थे जाणो निरधार ॥ जि० ॥ १० ॥  
 ग्यारे गणधर वृजव्यारे । त्रिपदीने अनुमान ॥ चउठे  
 सहस मुनि आर्जिकारे । ठत्रीस सहस्र परमान ॥  
 जि० ॥ ११ ॥ विचरंता पृथ्वी तलेरे । तीसवर्ष  
 उनमान ॥ निर्वाण जानी आपनोरे । आयापावा  
 पुरठाम ॥ जि० ॥ १२ ॥ कार्तिक वदी अमावस्या  
 रे । शुभ वेलार परजात ॥ आतुं कर्म खपावीने रे ।  
 मोक्ष पहुंता जगतात ॥ जि० ॥ १३ ॥ तीर्थ कहाया



जदयकी रे । सारे लोक मजार ॥ ग्राम २ देश  
 देश नारे । आवे जात्रि अगार ॥ जि० ॥ १४ ॥ मह-  
 तियाण वंशे दीपतो रे । गुण गिरुवोगच्छ थंज ॥  
 श्रीसंघना उरसव किया रे । दूर किया दुख दंज ॥  
 जि० ॥ १५ ॥ अठारेसे पच्चास मेरे । सुदी वैशाख  
 शुभ जाव ॥ पंचमी दिन भले जेटिया रे । मनधर  
 अधिक उच्छाह ॥ जि० ॥ १६ ॥ श्रीजिन अखय  
 सूरि सनो रे । चरण कमल मकरंद ॥ जब २ मांगु  
 तुमतणो रे । सेवा श्रीजिन चंद ॥ जि० ॥ १७ ॥  
 ॥ इति श्रीमहावीर स्वामी स्तवन संपूर्णम् ॥ ७६ ॥

## ॥ अथ चार सरणां ॥

मुजने चार सरणां होयजो । अरिहंत सिद्ध सुसा-  
 धुजी ॥ केवलीए धर्म प्रकाशियो । रत्न अमोलख  
 लाधोजी ॥ मु० ॥ १ ॥ चक्रगति तणों दुःख ठेदवा ।  
 समरथसरणों एहजी ॥ पूरब मुनिसर जेहुआ ।  
 तिण किया सरणा एहजी ॥ मु० ॥ २ ॥ संसार माहें  
 जेह जीवसुं । ताहसीम सरणां चारजी ॥ गणिसमय  
 सुंदर इम जणें । पामीस पुन्य प्रजावजी ॥ मु० ॥ ३ ॥  
 ॥ इति श्री चार सरणां संपूर्णम् ॥ ७७ ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन ॥

लाख चोरासी जीव खमावीए, मन धरी  
परम विवेकजी । मिच्छामी दुक्कमं दीजिये, गुरु  
वचन प्रतिबुजोजी ॥ लाख० ॥ १ ॥ सानलाख  
जुदग तेऊ बाऊ, दस चवद बननां जेदजी ।  
बट वीगल सुरतीर नारकी, चार चार चऊनर  
जेदोजी ॥ लाख० ॥ २ ॥ मुऊ वैरनही ठे कोईसु,  
सहु सहु मैत्री भावजी । गणि समय सुंदर इम  
जणें, पामीस पुन्य प्रभावजी ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीआलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥७७॥

॥ अथ आलोयण स्तवन ॥

पाप अठारे जीव परिहरो, अरिहंत सिऊनी  
साखजी । आलोयां पाप ठूटिये, जगवंत इणपरे  
भाखेजी ॥ पाप० ॥ १ ॥ आश्रव कसायढोय बंधवा  
वली, कलेइ अज्याखेनजी । रत अरत पइसुण  
निझा, मायामोह मिथ्यातजी ॥ पाप० ॥ २ ॥ मन  
वचन कायाए जे किया, मिच्छामी दुक्कमं तेहजी ।  
गणि समय सुन्दर इम जणें, जैन धर्म नो मर्म  
एहजी ॥ पाप० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीआलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥७८॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

धन धन तेह दिन मुक्त कदी होसे, हुं पामीस सं-  
जम सूधोजी । पूरव रूखी पंथचाल सुं, गुरु वचने  
प्रति बूजोजी ॥ धन० ॥ १ ॥ अंध पंथ भिक्षा गलज-  
री, रणवट काबू संगरसुजी । समता जाव शत्रु  
मित्रसुं, संवेग सुधो धरसुंजी ॥ धन० ॥ २ ॥  
संसारना संकट थकी, हुं बुटिस जिनवचने संसा-  
रजी । गणि समय सुन्दर इम जणे, हुं पामीस  
जवनोपारजी ॥ धन० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीवैराग्यपदं संपूर्णम् ॥ ए० ॥

॥ अथ अजितनाथ लावणी ॥

अजित नाथ महाराज गरीब निवाज जरूर  
जिनवरजी ॥ सेवक सिरनामी तने उचारूं अर-  
जी । करमाफी भारो बांक रजलियो रांक अनंता  
जवमें । आधो तुं ताहरे सरण बली-दुख दवमें ।  
कीधा धिक धुताचार खर खर खार लया मुक्त के-  
डे । पडी पापी माहरो नाथ ठेकठंठेके ॥ आमुज-  
रो मुक्त भगवान करूं गुणगान ध्यानमें धरजे ॥  
सेवक सिरनामी तने उचारे अरजी ॥ १ ॥ में

पूर्ण करधा ठे पाप सुणजो आप कहुं करजोडी । मुकु  
चूडामें जगवान जूल नही थोमी । जीव हस्या  
अपरंपार करी करतार हवे सुकहु । कूठो बहु बोली  
सांच में हुं रहूं । तुऊ खोला में मुकु सीस जाण  
जगदीश गमें ते करजो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ मैं  
करधा घणां कुकर्म धग्थो नहीं धर्म पूर्ण हुं पापी ।  
अबलो थई थाहरी आण में उथापी । हुं मुख  
महानिधान गणी मुनीवर तणी करी हरखायो । पर  
दारा देखी लवारु हूल चलायो । कहे कंकर केशव-  
लाल जाणीने चाल दुःखने हरजी ॥ सेवक० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीअजितनाथ लावणी संपूर्णम् ॥ ११ ॥

॥ अथ यूलिजघ्न ऋषिनवरसा ॥

दोहा—

सुख सम्पति दायक सदा, पायक जास सुरिंद ।

शासन नायक समरिये, वांछु वीरजिणंद ॥ १ ॥

जम्बुछीपना भरतमां, पामुलीपुर नृप नंद ।

सकमाल मुह्तो तस प्रिया, लाठल दे सुखकंद ॥ २ ॥

नागर न्यात शिरोमणी, नव तेहन सन्तान ।

सात सुताने दोय सुत, वंश वधारण वान ॥ ३ ॥

थूल जड्र जोगी जमर, मुनिवर मां पिण सिंह ।  
 वेश विलुब्धो ते सही, न गिणे रात ने दिह ॥४॥  
 कनक टका तिण डव्यना, साफी वारह कोरि ।  
 चार वर्ष बोली गया, पिण ठय लन सके ठोरि ॥५॥  
 सकडालसुहृतो तस प्रिया, कवासर छुहव्यो कोय ।  
 ते माटे मरवु पड्युं, ते जाणे सहु कोय ॥६॥  
 सिरीयो बंधव तिणसभे, पामी नृप आदेश ।  
 थूलजड्र ने तेरुवा, आव्यो मंदार वेश ॥७॥  
 हकीकत तेहनी सांजली, थूलिभड्र कहे सुणीनार ।  
 आझा जो आपो तुम्हें, तो जइ आवुं एक वार ॥८॥  
 बलतु वचन कोरया कहे, सुण स्वामी मुऊ बात ।  
 जावा नहीं छुं तुऊने, जाषों किसी बात ॥९॥

**ढाल १ ली-सासु पूछे बहु बात**  
**माला किहां छेरे-एदेशी-शृंगाररस ॥**

मने मारा बाप ना समजो, जावा नहीं दूरे ॥ तुऊ  
 थकी धरुणैक अलगी नहीं रहुरे ॥ १ ॥ जो नंद-  
 रायजी पोते कहस्ये, वालामारा तेहने उत्तर अम्हें  
 देसुरे ॥ जावा नहीं दूरे ॥ मीठका म्हारा राज

फरमावस्यो, ते माथे चमावी ने लेसुरे ॥ जावा०  
 ॥ १ ॥ पामलपुर नी सेरियां जमता ॥ बाला० ॥ में  
 रतन अमोलक लाधुरे ॥ जाण पुरुष में तुंहिज  
 दीतुं, तुजसुं दिलसुं बाधुरे ॥ जावा० ॥ ३ ॥  
 सहजे तादरुं थूंक पळे तिहां ॥ वा० ॥ तिहां हुं लो-  
 हीको रेकुरे ॥ प्राण जीवनजी पात्रो वालो, श्री  
 नदरायनुं तेकुरे ॥ जा० ॥ ४ ॥ खांत करीने खुव्यो  
 खमसु ॥ वा० ॥ पिण नही मूकुं ठेहडुरे ॥ इम  
 करतां जो प्रीज चालो, तो मुजने साथे तेकुरे  
 ॥ जा० ॥ ५ ॥ कोलकरीने थूलिजद्र तिहांथी ॥  
 वा० ॥ आव्यो मन आनंदेरे ॥ चूपने जेटी संयम  
 लीधो, उदय रतन इम वंदोरे ॥ जावा० ॥ ६ ॥

### दोहा-

थूलिजद्र कहे सुण चूपति, किम मारथो मुज  
 तात । मुजने तेमवा किम मोकदयो, कहो हिवसी  
 अवदात ॥ १ ॥ चूपकहे थूलिजद्र सुणो, वांक नही  
 मुज कोय । पंक्ति एक देशतरी, मुज सुण आव्यो  
 सोय ॥ २ ॥ कवित गुण महाराकह्या, ओलग कीधी  
 सार । तव तूवो हु तेहने, दीधा लाख दीनार ॥ ३ ॥

सहिता जणी में सोकदयो, लेवा लाख पसाय । जो-  
 जन जगति करी घणी, पिण नवी दे लाख पसाय  
 ॥४॥ दिन दस पंच बोली गया, कहे पंडित सकडाल ।  
 आपो सुजने हिवे तुम्हें, जे तूथो जूपाल ॥५॥ सहि-  
 तो कहे हुं आपसुं, ड्रव्य सही अरु लाख । पंढित  
 कहे लेवुं नहीं, इस्यो वचन म जाख ॥६॥ हां नां  
 करतां तेहने, रीश चरु शूलिजद्र । ह्रुवडवाद  
 वध्यो घणुं, ते पित होये खुद्र ॥ ७ ॥ तिण रूठें  
 डुहड़ो करी, आवी कही मुज वात । में नवी जांणी  
 कूड़ गति, ते करी जवनी घात ॥ ८ ॥ राज लोक  
 जाणे नहीं, ज्युं सक माल करेस । नंद राय मारी  
 करी, सिरीयो पाट ठवेस ॥ ९ ॥ पंडित नासी ने  
 गयो, मेली म्हारो देस । राज वच्यो जोइये, सुण  
 मुहता सुविसेस ॥ १० ॥ तब में सिरीया ने कह्यो,  
 का सुं क्यो सिरदार । आज पठे वंश माहरो, कोइ  
 न लोपे कार ॥ ११ ॥ तब सिरीये मुजने कह्यो,  
 शूलिजद्र ज्येष्ठ ज्ञात । ते बेठां हुं किम ग्रहुं, सुण  
 नंदराय अवदात ॥ १२ ॥ ते माटे तुमने कहुं, ह्यो  
 काम उजमाल । हुं ठाकुर परजा तणो, तुं लीला

लठपाल ॥ १३ ॥ ते सांभली थूलिजद्र कहे, सुणहो  
 श्री नंदराय । हुं आवुं आलोच हीव, पठे काम  
 ग्रहु सुखदाय ॥ १४ ॥ राज सजाथी जठीने, आव्यो  
 मंदिर जाम । मारग में मुनिवर मिट्या, संजुत विजय  
 तिण नाम ॥ १५ ॥ त्रण प्रदक्षणा देइ करी, आलोचे  
 सुविसाल । थूलिजद्र गुरुने वीनवे, संजम दो सुख  
 काल ॥ १६ ॥ गुरु विचारे चित्तमें, हलूआ करमी  
 तेह । बलि प्राणि प्रति बोधसी, थूलिजद्र गुण  
 गेह ॥ १७ ॥ सिरीयानी अनुमति लही, लीधो  
 सयम जार । विहार करी तिहांथी द्विवे, कोईक  
 देश मजार ॥ १८ ॥ द्विव कामन कोइया तिहां, जोवे  
 वालिम वाट । थूलिजद्र सखी आव्या नहीं, सुती  
 हींकोला खाट ॥ १९ ॥ रे सखी जठ ठतावली,  
 सजी सोले शिणगार । बली विलपंती सुन्दरी, ते  
 कां ठोड़ी किरतार ॥ २० ॥ चार घरू नी अवधीथी,  
 आव्यो आसाढो मास । कामणगारो कंतजी, सखी  
 नाव्यो आवाग ॥ २१ ॥ तेह जठी जलटधरी,  
 वालिम जोवा थाप । दीपविजय इम विनवे, द्विव  
 कोइया करे विजाप ॥ २२ ॥



## ॥ ढाल १ जी-तेहिज ॥

### ॥ हास्यरस ॥

आव्यो आसाढो मासरे ॥ नाव्यो धूतारो रे ॥  
 मोने करड्यो विरह चुजंग, कोई उतारो रे ॥ १ ॥  
 विरह तणो विष व्याप्यो सघले ॥ वालामारा ॥  
 फुलसी देहड़ली दाधीरे । सककालना सुतपांखे  
 बीजो, नहीं कोई मंत्र न वादी रे ॥ नाव्यो ॥ २ ॥  
 एहना जहरनी गति अनेरी ॥ वा ॥ माने नहीं मंत्र  
 ज मोहरोरे ॥ एकण वात नो अंत न पावे, दुख पीण  
 आवे दोहरोरे ॥ नाव्यो ॥ ३ ॥ ऊरमर ऊरमर  
 मेहुलो रे वरस्ये ॥ वा ॥ खलहल वाहला वाजेरे ।  
 वा पीऊको पीऊ १ पुकारे ॥ तिम तिम दिलको  
 दाजेरे ॥ नाव्यो ॥ ४ ॥ वयरी नी परे ए वरसालो ॥  
 वा ॥ मोने आवाने लागे आकोरे । तन मन तन  
 मन मन थयो मिलवा, कोइ मने पिऊको देखाडोरे ॥  
 नाव्यो ॥ ५ ॥ इण अवसर श्री गुरु आदेशे ॥  
 वा ॥ थूलिचछ चोमासे आव्यो रे । उदयरतन  
 कहे कोश्या रंगे, थालचरी मोतीके बधाव्यो रे ॥  
 नाव्यो ॥ ६ ॥

## दोहा-

इण अवसर श्रीगुरुतणो, लेइ आदेश उदार ।  
 चोमासुं रहिवा भणी, श्रीथूलिजड अणगार ॥ १ ॥  
 इरजा सुमति सोधता, हलवे धरता पाय । बाल-  
 पणारी पदमणी, थूलिजड मनाव जाय ॥ २ ॥  
 वज्र कठोटो दढकरी, द्विवे थूलिजड मुणिंद ।  
 कोश्या मंदिर ढंकडा, आव्या मुनि आणंद ॥ ३ ॥  
 तव दासी उतावली, दीधी वधाई वेस । बालम  
 आव्यो विरहणी, मधुरे मन आदेस ॥ ४ ॥ तव  
 ऊठी सा सुन्दरी, पिउने मिलवा काज ।  
 चातुक जिम चतुरा हुंति, ते ऊभी कर लाज ॥ ५ ॥  
 सुण सामी ते मुऊ भणी, बलि ठटकी दीधो ठेइ ।  
 चारघडी मुऊने कही, प्रीउ अवरा कीध सनेइ ॥ ६ ॥  
 फूस तणो जिम तापणो, बली जेवो संव्या वान ।  
 ठहर तणो जिम तेहनो, तिम नागर मित्रनो मान  
 ॥ ७ ॥ मेणा देती माननी, मधुरा बोले बोल ।  
 आज सफल घर आंगणो, आज सफल दिन रेण  
 ॥ ८ ॥ मोती थाल वधावीने, कोश्या करे अरदास ।  
 पूरवप्रीत संचारिये, प्रोतम लीख विदास ॥ ९ ॥

मेहले आवो बालहा, बलिहारी तुज वेश । चंद्र-  
मुखी ऋषिने कहे, मंदिर करो प्रवेश ॥ १० ॥  
पूरवप्रीत संभारिये, थून्निभद्र जीवन प्राण । पभणे  
दीप कोश्या कहे, प्रीत तुमथी खरोमंमाण ॥ ११ ॥

## ॥ ढाल ३ री ॥ करुणारस ॥

म्हारा मन मांही लागे मीठो रे, दीहामो आ-  
जुनो । हुंतो पामी पुन्य संजोगे रे, जोगे मन  
मळूनो ॥ प्राणनाथना पगळा थातां ॥ वालामारा ॥  
माहरो आंगणो नाचवा लागो रे । हरख हीयना  
कमल समोहे, वखत अवर जाय वागो रे ॥ १ ॥  
दीहामो ॥ कुल देव्या एक सुनिजर कीधी ॥  
वा ॥ बली मोतीडे मेह वूठो रे । आज म्हारे  
आंगण आंबो मोरथो, पूरव पुन्यज तूठो रे ॥ २ ॥  
दी ॥ मंदिर सामो हसीने आवे ॥ वा ॥ वारु  
साचो के सुहणो रे । आलसु ने घर गंगा आवी,  
सुख के नहीं कांइ जणो रे ॥ ३ ॥ दी ॥ चार  
घडीनी अवधो करीने ॥ वा ॥ चाड्या चितको  
चोरी रे । मुजने मनथी विसारीने, कुण मनावी  
गोरी रे ॥ ४ ॥ दी ॥ बाहर आवी सुं उजाळो,

मंदिर पावन कीजे रे । दासी तुम्हारी अरज  
करेठे, मुजरो मानी लीजे रे ॥ ५ ॥ दी० ॥ अउं  
ठहाथ अलगी संचरजे ॥ वा० ॥ पठे जिम जाणे  
तिम कीजे रे । धपमप मादल ने धौका रे, फूं-  
दरुनी पर फीरजे रे ॥ ६ ॥ दी० ॥ इम परठीने  
रह्या चोमासे ॥ वा० ॥ उदयरतन इम जाखे रे ।  
नित नित माहरी वदणा होजो, जिम नारुं दृढ  
करी राखे रे ॥ ७ ॥ दी० ॥

दोहा—

शूलिजझकहे सुणसुंदरी, में वशी कीधानेण । तुं  
व्याकुल थई विरहणी, किमजाखे इम वयेण ॥ १ ॥  
कोश्याकहे सुणो पिउजी, तुं मुऊ जीवन प्राण ।  
प्रेम जल हिव सींचिये, वली बधे जिम वांण ॥ २ ॥  
शूलिजझकहे कोश्या सुणो, अम्हे निरलोत्ती साध ।  
रहिसुं चोमासो तुम्ह घरे, पिण मनमें निराबाध  
॥ ३ ॥ कोश्याकहे तुम वयणरे, हुं बलिहारी जाउं ।  
मदिलपधारो मोहना, जिमपूरण सुख पाउं ॥ ४ ॥  
शूलिजझ कोश्याने कहे, साका तीनज हाथ ।  
मुऊथी अलगी तुं रहे, मृग बाघण को साथ ॥ ५ ॥

वाघण हारे बालहा, हुं तु अचला बाल । महिर  
 करो मुऊ उपरे पूरव प्रीतसंचाल ॥ ६ ॥ अचला  
 सबली सिंहथी, दुरगतनी दातार । सिंहणजय  
 एको जवे, रामाजय वार ॥ ७ ॥ थूलिभद्र ऋषी  
 इम कहे, सुणीकोश्या अवदात । पंचमहाव्रत में  
 लिया, हिव सांचल मुऊ वात ॥ ८ ॥ कोश्या कहे  
 अम्ह मंदिरे, आवी रहो चौमास । थूलिजद्र-  
 आव्या तिहां वलि, मंदिर धरी उलास ॥ ९ ॥ जाव  
 जगति नित प्रतिकरे, वलि जोजन सरस तंवोल ।  
 मधुर वयण मुखथी कहे, प्रिउ करिये रंगरोल  
 ॥ १० ॥ मुह मचकोरी इमकहे, कोश्यामुखथी  
 वाण । बालपणारीबालहा, मुऊथी सहीमताण  
 ॥ ११ ॥ विन पुठ्यो व्रत किमग्रह्यो, वालेसर  
 गुणवंत । जोगारंजछोडी करी, इहां रंग रमो  
 एकंत ॥ १२ ॥ हुं प्रनु दासी तुमत्तणी, पग रज  
 रेण समान । हिव अंतराय किम लेखवो, काया  
 करुं कुरवान ॥ १३ ॥ अंतजिहांथी किजिये,  
 तिहां मन मेल न होय । दीपकहे घर आविने,  
 अंतर न करे कोय ॥ १४ ॥

## ॥ ढाल ४ थी ॥ तेहिज-रोदूरस ॥

म्हेतो जोग तुम्हारो जाण्योरे ॥ म्हेलोने आटो-  
 रे ॥ मोने खटके हीयरामांही प्रेमनो कांटोरे ॥ १ ॥  
 म्हे० ॥ जोगीहुवे ते जगल सेवे ॥ वा० ॥ तो रहे जो-  
 गनो पाणीरे ॥ अम्ह घर आवीने जोग चलावस्यो ॥  
 तो जोगनी मुद्रा जाणीरे ॥ २ ॥ म्हे० ॥ ठमकठम-  
 क पाय वीठीया ठमके ॥ वा० ॥ रमऊम जांऊरकी  
 वाजेरे ॥ जांऊरडीना ऊमकारा माहीं, व्रत सघलाई  
 जांजेरे ॥ ३ ॥ म्हे० ॥ एक चौमासो चित्रशाला मा  
 हीं ॥ वा० ॥ बीजु मेहरु टपटप चुवेरे ॥ आंखकीया-  
 ना उलाला मांही, मुनि पिण साहसुं जोवेरे ॥ ४ ॥  
 म्हे० ॥ इम इम मादल ना धोकारे ॥ वा० ॥ थइ  
 थइ नाटक छदेरे ॥ मुखना मुलकडामांहीं, कहो  
 कुण न पडे फंदेरे ॥ ५ ॥ म्हे० ॥ एहवा वचन सुणी  
 कोश्याना ॥ वा० ॥ थूलिजऊकहे सुण वालारे ॥ नाना  
 नाना हिवे नही चुकुं, देखी ताहरा चालारे ॥ ६ ॥  
 म्हे० ॥ उदयरतन कहे ए मुनिवरना ॥ वा० ॥ प्रेमे  
 वंदु पायारे ॥ मनथी जेणे उतारी मेली, वार वरस  
 नी मायारे ॥ ७ ॥ म्हे० ॥

## दोहा—

वयण सुणी वालम तणा, धरती कोश्या दुःख ।  
 प्रिज ने हिव सीकरूं, जिम पूरण पामुं सुख ॥१॥  
 ऋद्धि घणी घरमाहरे, कुंण तेहनो रखवाल । नाग-  
 रकंत ऋषीथयो, हुं लघु अबलावाल ॥२॥ सुणहो  
 प्रिज ते कंतजी, अवगुण विण सही नार । मुज  
 सरीखी नही सुन्दरी, थूलिजद्र हिवे विचार ॥३॥  
 अम्ह आगल सुण साहिवा, इन्द्रसरीखा जेह ।  
 हरिहर ब्रह्मनी परे, अम्हथी संके तेह ॥४॥ ते माटे  
 तुम्हने कहुं, मानो प्रिज मुजबात । नहिं तर प्राण  
 तजुं हिवे, तेह कहो अवदात ॥ ५ ॥ थूलिजद्र  
 कहे कोश्या जणी, हुं नवि खंरु जोग । में विसारी  
 तुजने, समतासु संभोग ॥ ६ ॥ तब दासी कोश्याने  
 कहे, नाटक करिये एक । हावजाव देखामिये, क-  
 रिये रंग अनेक ॥ ७ ॥ सखी दस बीस मेलि करी,  
 मांड्यो नाटक सार । दीपकहे कोश्या त्रिया, सहु  
 सखी सिरदार ॥ ८ ॥

ढाव ५ मी-तेहिज-वीरारस ॥

मेहसुं मांड्यो वाद माननी तरसेरे । गगन मं—

डलमां उंनो गाजेरे ॥ १ ॥ वा० ॥ महिलमां मादल  
 वाजेरे । चित्रशालमां विणवाजेरे, मोर धवे गिर कुंजेरे  
 ॥ २ ॥ महा० ॥ प्रिठ ध चात्रक बोलेरे ॥ वा० ॥ कहु श  
 कोकील कहुंकेरे । गुघरमीना घमकारा मांहीं, ताथइ  
 तान न चूकेरे ॥ ३ ॥ महा० ॥ जखहल काने जालऊ  
 बुकेरे ॥ वा० ॥ जीत खेळीने जीपेरे । पाणी लाल  
 ममोला जीत्यारे ॥ हरिया सालुं अति दीपेरे ॥ ४ ॥  
 महा० ॥ प्रेम तणा रस चूवा लागा ॥ वा० ॥ रंगना  
 रेला चादयारे । लपसी पमीत्रा जोइवु थयुं, वाध्या  
 मनोरथ वेलारे ॥ ५ ॥ महा० ॥ अउठ कोमी रो-  
 मज उलस्या ॥ वा० ॥ जालिम कीधो जोरोरे ॥ ज-  
 लमांही कमल रहे कोरोरे ॥ तिम थूलिजद्र रह्यो  
 कोरोरे ॥ ६ ॥ महा० ॥ ललित फुंदड़ी छेलेती  
 जोवेरे ॥ वा० ॥ श्यामी निजरे हेरेरे ॥ उदयरतन  
 कहे धनमुनिवरजे, जे नवि जोवे फेरीरे ॥ ७ ॥ महा० ॥

### दोहा-

बहुविध नाटिक देखीने, थूलिजद्र न निगो  
 मन । विषयाविटंवे ते विरहणी, कता पठीड़ो  
 तन ॥ १ ॥ जालीम में मन वश करयो, पांचे ग्रहो



सुजट । एकमनी थई कामनी, क्रोध कीयो दह  
 बट ॥ २ ॥ सांजली ताहरा बोलका, हुं चूंकुं  
 नहीं नार । जोगपणो में आदरधो, जोवन अथिर  
 संसार ॥ ३ ॥ जवरूपे तुं मोहनी, साधन विषनी  
 बेलि । इमजाणी में परिहरी, हिव संयसथी मन  
 मेलि ॥ ४ ॥ सुण नंदिखेण सरीखा जती, आ-  
 खादिक जेह । मोह महाभरु वशीकरी, मुक्ति-  
 गया ऋषितेह ॥ ५ ॥ काची काया कारमी, माया  
 मोहनी जालि । बली बली स्युं नायका, हिवे वि-  
 षय थकी मन वालि ॥ ६ ॥ काया कूपी काचरी,  
 पीपल पान समान । अथिरपणुं जीवता घणुं, जे-  
 हवुं संध्यावान ॥ ७ ॥ ते माटे वनिता तुम्हे, म-  
 करो आल पंपाल । दीपकहे थूलिभद्र ऋषि, वयण  
 कहे तत्काल ॥ ८ ॥

॥ ठाल ६ ट्टी-तेहिज-जयरस ॥

तुं स्याने करे ठे चालारे । हुं नवि चूंकुरे ॥ मुने  
 वाली लागे ठे मालारे ॥ ध्यान न मूकुरे ॥ १ ॥ हुं नण  
 शील साथ में कीध सखाई, मेली दूजी मायारे ।  
 जालिम मयणने वस करीने, जीत निसाण वजा-

यारे ॥ १ ॥ हुं० ॥ वज्र क छोटी वाढ्यो सुधो, ते  
 ताहरो ठोड्यो नवि तुटेरे ॥ जो मंजारी घणुं अकु-  
 लाई । तो सरापे ठीको नवि तुटेरे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ त्रा-  
 सीरय जो अंगारे वरसे, समुद्र मर्यादा चूकेरे । प-  
 वने जो कनकाचल कोले, नक्षत्र मारग मूकेरे ॥ ४ ॥  
 हुं० ॥ तो पण ताहरे वसी नवि आबु, तो सुन्दरी  
 मानजे साचुरे । राईना जाव वही गया राते, हीवे न-  
 हीं मन काचूरे ॥ ५ ॥ हुं० ॥ सो बालक जो सा-  
 मठा रोवे, वे पांचे एक न चड़े पांचोरे ॥ फोगट  
 स्यां पाखंरु करे ठे, लागे नहीं तुऊ तानोरे ॥ ६ ॥  
 हुं० ॥ मुनिवर जीते बड़ी कोश्याने, पगनी मोजकी  
 नोलेरे । तेहने माहरी वंदणा होजो, उदयरतन  
 इम बोलेरे ॥ ७ ॥ हुं० ॥

दोहा—

नागर न्यातनो लारुलो, श्रीधूलिभद्र अणगार ।  
 कोश्या वयणथी नविस्मियो, समता थई तिणवार  
 ॥ १ ॥ मन वचन काया वस किया, हे सुन्दर  
 सुण वात । किसो आरुम्बर तुं करे, इम बलि  
 करे विलापात ॥ २ ॥ जिम मजारीने मूपक, जिम

मोरा ने नाग । जिम चीन्ही ने वाज वली, मृग  
 रिपु कहा बाघ ॥ ३ ॥ जिम रामाने ऋषि तणो,  
 जोय पटंतर कोश । पिण हुं तुज प्रतिबोधवा, वली  
 थानर होश ॥ ४ ॥ वचन सुणी वनिता कहे, जले  
 आव्या मुज नाथ । आज सफल दिन माहरो.  
 तुज मुज शिवपुर साथ ॥ ५ ॥ मोह विशेषें वि-  
 रहणी, अति उच्छक उजमाल । कहे वीरहो तुम  
 तणो, हुं न खमीसकुं एकबाल ॥ ६ ॥ व्याकुल  
 जाणी वीरहणी, ऋषि नवी बोले वाण । केमे  
 लागी कामनी, करती खांचा ताण ॥ ७ ॥ बलती  
 रूठी नायका, केमे बिलगी तेह । नाटिक माटे  
 जुंगतसुं, दीपकहे धरी नेह ॥ ८ ॥

## ॥ ढाल-७ मी ॥ तेहिज ॥

सांजली ताहरा वयण, हुं थई महिलारे । मोने  
 साखे हीयडा मांहीं, प्रीतनी पहिलारे ॥ १ ॥ हुं० ॥  
 बार वरस नी प्रीतडी बांधी ॥ वा० ॥ बापना को-  
 लज बोख्यारे ॥ कोल करीने जीमणे हाथे, ते  
 किम जाये मेळ्यारे ॥ २ ॥ हुं० ॥ अद घडी पिण  
 अलगी रहता ॥ वा० ॥ मनमां महाडुःख मानुरे ।

आंखनीये आसुं पकता, विरह नो दुःख न ख-  
 मातुरे ॥ ३ ॥ हुं० ॥ एक दिवस जे तुम्हे रीस  
 करीजे ॥ वा० ॥ तुंजसुं कीधी माठीरे । वाह-  
 जाल मनावी मुकने, ते बेला किहां नाठीरे ॥ ४ ॥  
 हुं० ॥ पहिला लाड लमावी मुकने ॥ वा० ॥ मेरूं  
 ने माथे चारीरे । मूलमंत्र ठांमिता मुकने, मनमां  
 महिर न आवीरे ॥ ५ ॥ हुं० ॥ तापस सहजे  
 निरदेई होवे ॥ वा० ॥ मुखथी बोले मीठेरे ।  
 कालजामांहींथी कपट न ठोरी, तेमे प्रतक् दी-  
 ठेरे ॥ ६ ॥ हुं० ॥ एहवा जलंजा काने सुणने ॥ वा० ॥  
 मुनिवर मन न निगाव्युरे । उदयरतन कहे सुला-  
 छलटे, जिणे ते दीकरो जायोरे ॥ ७ ॥ हुं० ॥

### दोहा-

ओलंजा नारी तणा, सांजलिया श्रवणेह । श्री  
 थूलिजझ कोश्या, साहमां दे उपदेह ॥ १ ॥ रे  
 कोश्या कां विहरणी, बांधे माया जाल । ए काया  
 मल सारिखी, खीण न दीजे उजमाल ॥ २ ॥  
 सुख पिण जीवे जोगव्यां, लक्ख अनंती वार ।  
 त्रिपत न पामी जीवने, कोश्या हिये विचार ॥ ३ ॥

मन संवर कर आपणो, जिम पहुँचे वंछित आस ।  
 संयम लेइ मुक्ते जइ, करिये लील विलास ॥ ४ ॥  
 निसुणी कहे तव नायका, मीठी वालिम बात । तुम  
 गुणकेरी चातुरी, में मुख कही न जात ॥ ५ ॥  
 पिण स्वामी निज नारीने, आदर दो इकवार ।  
 हिव सोमासो उत्तरयो, हुबुजे इस वार ॥ ६ ॥ पंच-  
 रूपनो आकरो, लीधो सुणने कोश । तव कोश्या  
 प्रियने कहे, इम कां छोनो निरदोश ॥ ७ ॥ दोष  
 अनंता नायका, तुज बोलाव्यो होय । दीपविजय  
 कहे सांजलो, शूलिजइ जासे सोय ॥ ८ ॥

## ॥ ढाल ८ मी ॥ तेहिज ॥

में परणी संयम नारीरे, तोने विसारीरे ॥ जे मा-  
 थानी मेली मुऊने तेहवी कामणगारीरे ॥ तोण ॥ १ ॥  
 तेहमोने आकषालीधुं, पलक न मेल पासोरे । अउठ  
 हाथ अलगी तोने, राखी नहीं वारो वासोरे ॥ तोण  
 ॥ २ ॥ निजर मिलावे मिलता नयणे, महारो मनको  
 लीधो उलालीरे । ते आगे स्यों जोअरो ताहरो,  
 बोली रहो मन वालीरे ॥ तोण ॥ ३ ॥ सुहृपति  
 मालाने ओघो, अहनिश रहे मुज पासेरे । ए त्रण

माँणस ठे तेहना, तुऊने तेनो सारी राखेरे ॥ तो०  
 ॥ ४ ॥ चिहुंपासे वे चोकी तेहनी, तेहने हाथे छे  
 कून्त्रीरे ॥ घरमें न पमे पग ताहरो, तुं कां थइ  
 ऊची नीचोरे ॥ तो० ॥ ५ ॥ पांचानी साखे मोने  
 ते परणी, तूंतो ठे मन मानीरे ॥ आखर अमल  
 न पहुंचे ताहरो, ते माटे रह ठानीरे ॥ तो० ॥ ६ ॥  
 सहजे तुऊसु वात करूठु, तो चढ़े तेहने चटकोरे ॥  
 तरवार नी धारा पर दाखी, पिण लाखीणो लट-  
 कोरे ॥ तो० ॥ ७ ॥ चोरनो जोहरो तिहां लगे  
 पहुंचे, तिहां लगी धणी नवि जागेरे ॥ धणी ति-  
 वारे जागी ने जोवे, तिवारे ते मारग लागेरे ॥ तो०  
 ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी मुनिवरना, कोश्या सम-  
 कित पामीरे ॥ बेकर जोमी वडु तेहने, उदयरनन  
 सी नामीरे ॥ तो० ॥ ९ ॥

दोहा—

कोश्या समकित पामियो, शूलिचद्र प्रीतम पास ।  
 आज सफल दिन माहरो, धन चित्रसाली वास ॥ १ ॥  
 ए महिले सुख जोगव्या, इन्द्र तणी परे जेम । इ-  
 णही महिले व्रत लिया, हिवे जावा देउं केम ॥ २ ॥  
 ते माटे तुम्हे इहां रहो, शूलिचद्र ऋषि राय । कहे

थूलिजद्र कोश्या सुणो, हिवे जास्युं गुरुपास ॥३॥  
 हिवे चौमाशो ऊतरयो, मुऊ गुरु जोवे वाट । ए  
 व्रत रूढ़ी परे पावज्यो, म करो मन उचाट ॥४॥  
 शिखामण दीधी जली, कोश्याने तिण वार । तव  
 बनिता इम विनवे, धन धन तुऊ अवतार ॥५॥  
 में उपाय करयां घणा, तुऊ चुकावा स्वामी ।  
 खमज्यो मुऊ अपराधने, कहुतुं हुं सिरनामी ॥६॥  
 चालो इम हुं किमकहुं, पोहचों वंछित आस । व-  
 हिला वलि इहां आवजो, नही विसारुं सासो  
 सास ॥७॥ हरषित आंसु नांखती, विकसीत बोले  
 बेण । गुरु वंदी प्रभु आवजो, म्हारा स्नेही सेण  
 ॥८॥ कहे थूलिजद्र तुम्हे आवजो, मुक्ति महिला-  
 मांही । जन्मजरा तिहां नहीं कहे, रमस्युं मन  
 उच्छाह ॥९॥ मोतीयाल वधावीने, कोश्या दीध  
 आदेश । सुनिवर रखे विसारता, बलिहारी तुम्ह  
 वेश ॥१०॥ तिहांथी थूलिजद्र चालिया, करता  
 शुऊ विहार । जई वांध्या गुरु के चरन, करे दुः  
 कर दुःकरकार ॥११॥ सिंह गुरु थूलिजद्र ने कहे,  
 तुं जग सांचो सिंह । कोश्याने प्रति बूऊवी, तें

राखी जग लीह ॥ १२ ॥ चौराशी चोवीसी लगे,  
अडग रहज्यो तुऊ नाम । कोश्या वयणथी नवि  
डिग्यो, थूलिज्जड गुण धाम ॥ १३ ॥

॥ ढाल ६ मी ॥ राग धन्याश्री ॥

पामिने प्रतिबोध, कोश्यारे कोश्या व्रत उचरेरे ॥  
समकित मूल व्रत वार, कोश्यारे कोश्या मुनि व-  
चने तव आदेरेरे ॥ १ ॥ धन लाछिल दे मात,  
धन धन सकडाल ताहरा तातनेरे ॥ धन धन गौ-  
तम गोत्र, धन धन निर्मल नागर न्यातनेरे ॥ २ ॥  
धन धन जपा बहिन, धन धन सिरीया चातनेरे ॥  
धीर्य पणा धन धान्य, जग मांहीरे तुऊ अवदान-  
नेरे ॥ ३ ॥ सम्भृत विजय धन, जे थगो धर्माचार्य  
ताहगेरे ॥ धन धन ए चित्रगाली, जोतारे जोता  
धन जमवारो माहरे ॥ ४ ॥ जे पामी हुं तुऊ सुं  
प्रीत, जूंज्योरे जूजी वूजी ऊगरथोरे ॥ बाहे जाले-  
स्या माट, मुऊनेरे मुऊने बाढही मल करीरे ॥ ५ ॥  
कोश्यासुं कर सीख मुनिवररे, मुनिवर विहार ति-  
हांथी कररे ॥ पहुंता श्रीगुरुपास, डुक्करे डुक्कर  
फिर गुरु मुख से कहेरे ॥ ६ ॥ नाम राख्यो जग



मांही, जेणेरे जेणे चौराशी चौवीसी लगेरे ॥ धन  
 धन ते नरनार, मनथोरे मनथो विषयथकीजे  
 ऊनगेरे ॥५॥ सतरसे गुणसठी मिगसरगे, मिगसिर  
 सुदी सौन एकादशीरे ॥ शील तणा गुणपद्, श्री-  
 गायोरे गायोरे ऊनाऊ आमे उलसीरे ॥६॥ श्रीश्रू-  
 लिचन्द्र ऋषिराय, गातारे गाता मुंह मांग्या पासा  
 ढढ्या ॥ उदयरतन कहे एम, मननारे मनना मनने-  
 रथ सवि फढ्यारे ॥७॥

॥ इति श्रीश्रूलिचन्द्रकृपि नवरसा सम्पूर्णम् ॥८॥

## ॥ अथ शीयल नववारु ॥

दोहा—

श्रीनेमिश्वर चरण युग, प्रणसुं ऊठि प्रजात ।  
 बावीशम जिन जगगुरु, ब्रह्मचारी विख्यात ॥१॥  
 सुन्दर अपछर सारखी, रति समराजकुंवारी । जर  
 यौवन में जुगतिसुं, छोड़ी राजकुनारी ॥२॥ ब्रह्म-  
 चर्य जिणिपालियो, धरता डुऊर जेह । तेह तणा  
 गुण वर्णवुं, जिम पावन हुवे देह ॥ ३ ॥ सूरि  
 गुरु जो पोते कहे, रसना सहस वणाई । ब्रह्मच-  
 र्यना गुण घणा, तो पिण कहा न जाई ॥ ४ ॥

गलित पलित काया थई, तोही नमुं कई आस ।  
 तरुणपणे जे व्रत धरे, हु बलिहारी तास ॥ ५ ॥  
 जोव विमासी जोइतु, विषयमें राची गंवार । थोडा  
 सुखने कारणे, मूरख घण उमहारी ॥ ६ ॥ दश  
 दृष्टान्ते दोहिलो, लाधो नरनव सार । पालि शीयल  
 नव वाडिसुं, सफल करो अवतार ॥ ७ ॥

## ॥ ढाल १ दी ॥

मनमधु कर मोही रखारे ॥ एडेजी ॥

शील सुतरुवर सेविये, व्रत मांही गुरु यो जेहरे ॥  
 दंज कदाग्रह ठोकिने, धगिये तिणिसुं नेहरे ॥ शी०  
 ॥ ८ ॥ जिनशासन वन अति जलो, नन्दन वन  
 अनुहाररे ॥ जिनवर वनपालक तिहां, करुणा रस  
 जंकाररे ॥ शी० ॥ ९ ॥ मन ठाणे तरु रोपियो, चीज  
 जावना बंजरे ॥ श्रद्धा सारण तिहां बहे, विमल  
 विवेक ते अंजरे ॥ शी० ॥ १० ॥ मूल सुदृढ सम-  
 किन जलें, खंध नवेनत दाखीरे ॥ साख महाव्रत  
 तेहनी, अनुव्रत ते लघु साखी रे ॥ शी० ॥ ११ ॥  
 श्रावक साधु तणा घणा, गुण गण पत्र अनेकरे ॥  
 मउर कर्म शुज बंधनो, परिमल गुण अनिरेकरे ॥

शी० ॥ १२ ॥ उत्तम सुर सुख फूलमा, शिवसुख  
ते फल जाणीरे ॥ जतन करी वृद्ध राखवो, हियमे  
अति रंग आणीरे ॥ शी० ॥ १३ ॥ उत्तराध्यने  
सोलमें, बंनसमाही ठाणरे ॥ कीधी तिणि तरु  
पांखनी, ए नव वामी सुजाणरे ॥ शी० ॥ १४ ॥

दोहा—

हिव प्राणी जाणी करी, राखी प्रथम ए वामि ।  
जो ए नांजी पेसिसी, प्राणे प्रमदाधामि ॥ १५ ॥  
जेहड तेहड खलकती, प्रमदा गय मयमत्त ।  
शीलवृद्ध उपाडिसी, वामि विभामी तुरत्त ॥ १६ ॥

॥ ढाल २ री ॥ नणद्वारी देशी ॥

जाव धरि नित्य पालिये, गुरु ओ ब्रह्म व्रत सार  
हो ॥ नवियण जिणथी शिवसुख पामिये, सुन्दर  
तण सिणगार हो ॥ ज० ॥ जा० ॥ १७ ॥ स्त्री प-  
शु बंरुग जिहां वसे, तिहां रहिवो नहीं वास हो ॥  
भ० ॥ एहनी संगति वारिये, व्रत नो करे विणास  
हो ॥ ज० ॥ जा० ॥ १८ ॥ मंजारी संगति रमें,  
कूकर मूसग मोर हो ॥ भ० ॥ कुशल किहांथो  
तेहने, पामें दुःख अधोर हो ॥ ज० ॥ भा० ॥ १९ ॥

अग्नि कुंभ पासो रह्यो, विघले घृतनो कुंभ  
 हो ॥ ज० ॥ नारी संगति पुरुषनो, रहे किसी प-  
 रिवंच हो ॥ ज० ॥ जा० ॥ २० ॥ सिंह गुफा वा-  
 सी जती, रह्यो कोस चित्रशाल हो ॥ ज० ॥ तु-  
 रत पड्यो वसी तेहने, देश गयो नेपाल हो ॥  
 ज० ॥ भा० ॥ २१ ॥ विकल अकल विण चापका,  
 पंखी करता केली हो ॥ ज० ॥ देखी लखणा म-  
 हासती. रूखी घणी झण मेली हो ॥ ज० ॥ भा० ॥  
 २२ ॥ चित्त चचल पंरुग नरा, वरते तीजे वेद  
 हो ॥ भ० ॥ तजी संगति रति तेहनी, कहे जि-  
 न हरख उमेद हो ॥ ज० ॥ जा० ॥ २३ ॥

दोहा—

अथवा नारी एकली, भलि न संगति तास । धर्म  
 कथा पिण कहेवी नहीं, वेसी तेहने पास ॥ २४ ॥  
 तेथी अवगुण हुवे घणा, शका पामे लोक । आवे  
 अछतो आलसिरी, बीजी वाडि विलोक ॥ २५ ॥

॥ ढाल रे री ॥

॥ रे प्राणी हरी संवेग विचार ॥ एदेशी ॥

जाति रूप कुल देशनी रे, रमणी कथा कहे

जेह । तेह नो ब्रह्म व्रत किम रहे रे, किम रहे व्रतसुं  
 नेह रे ॥ रे प्राणी नारी कथा निवारी, तुंतो बीजी  
 वाकी संजारी रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ चन्द्रमुखी मृग  
 लोयणी रे, बेणी जाणी जुजंग । दीप शिखा  
 सम नाशिका रे, अधर प्रवाली रंग रे ॥ प्रा० ॥  
 २७ ॥ वाणी कोयल जेहवी रे, वारण कुंजो रोज ।  
 हंस गमनी कृसहरि कटी रे, कर जुग चरण सरो-  
 ज रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ रमणी रूप द्रव्य वरणवे रे,  
 आणी विषय मन रंग । मुग्ध लोक ने रीऊवे रे,  
 बाधे अंग अनंग रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ अपवित्र म-  
 लनो कोठिलो रे, कलह काजल नो ठाम । वारह  
 श्रोत्र बहे सदा रे, चरम दीवनी नाम रे ॥ प्रा०  
 ॥ ३० ॥ देह उदारिक कारमी रे, खिण में जंगुर  
 थाय । सप्त धातु रोगा कुली रे, जतन करंता  
 जाय रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ चक्रीचोथो जाणीये रे,  
 देवे दीठो आइ । ते पिण खिण में विणसियो रे,  
 रूप अनित्य कहाइ रे ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ नारी कथा  
 विकथा कही रे, जिनवर बीजे अंग । अनर्थ दंरु  
 अंग सातमें रे, कहे जिन हरख प्रसंग रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥

दोहा—

ब्रह्मचारी जोगी जती, न करे नारी प्रसंग ।  
 एकही आसन वेसतां, थाये व्रतनो जग ॥३४॥  
 पावक गाळे लोहने, जो रहे पावक संग ।  
 इम जाणीरे प्राण्यां, तजि आसन त्रयरंग ॥३५॥

## ॥ ढाल ४ थी ॥

थे सौदागर लाल, चलण न देसुं ॥ एदेशी ॥  
 तीजी वार्नी द्वे चित्त विचारो, नारी सहित  
 वेसवो निवारो लाल ॥ एकही आसन काम दीपावे,  
 चोथा व्रतने दोष लगावे लाल ॥ ती० ॥ ३६ ॥ इम  
 वेसंता आसंगो थाइ, आसंगे काया फरसाये लाल ॥  
 काया फरस विषय रस जागे, तिणथी अवगुण  
 थाये आगे लाल ॥ ती० ॥ ३७ ॥ जोवो श्री सम्भूत  
 प्रसिद्धो, तन फरसे नियाणो कीधो लाल ॥ द्वाद-  
 शमो चक्रवर्ति अवतरियो, चित्रे प्रतिबोध तेहने  
 दियो लाल ॥ ती० ॥ ३८ ॥ तेहने उपदेश लेस  
 न लागो, विरतिनका कायर थइ जागो लाल ॥  
 सातमी नर्क तणा दुःख सहिया, स्त्री फरसे अ-  
 वगुण इम कहिया लाल ॥ ती० ॥ ३९ ॥ काम

विराम वधे दुःख खाणी, नरक तणी सांची सही  
नाणी लाल ॥ एके आसन दूषण जाणी, परिहरि  
निज आत्म हित आणी लाल ॥ ती० ॥ ४० ॥  
माझ बहिन जे बेटी थाये, ते बेसी ने ऊठी जाये  
लाल ॥ कलपे एकण मुहूरत पाछे, वेसे वो जिण  
हरख सु आढे लाल ॥ ती० ॥ ४१ ॥

दोहा—

चित्र लिखित जे पूतली, ते जोहवी नांही ।  
केवल ज्ञानी झमकहे, दशवैकालिक मांही ॥४२॥  
नारी वेद नरपति थयो, चरक कुशील कहाय ।  
लख जव चौथी वारी तजी, रुलियो रूपीराय ॥४३॥

॥ ठाव ५ मी ॥

मोहन मुंदरी लेगयो ॥ एदेशी ॥

मनहर झन्डी नारीना, दीठां वाधेविकार ॥ वागुर  
कांमी मृग जणीहो, पाषर च्यउ करतार ॥ सुगुण रे,  
नारी रूप न जोश्ये जोश्ये नहीं धरी राग ॥ सु० ॥ ४४ ॥  
नारीरूपे दीवलो, कामी पुरुष पतंग । जांपे सुखने  
कारणेहो, दाजे अंग सुरंग ॥ सु० ॥ ४५ ॥ मन  
गमता रमता हीये, उर कुच वदन सुरंग । नहर

अहरे जोगी कस्य हो, जोवन्ता व्रत जंग ॥ सु०  
 ॥४६॥ कामणगारी कामिनी, जीत्यो सयल संसार ।  
 आखी अणीन को रह्यो हो, सुर नर गया सहुहार ॥  
 सु० ॥ ४७ ॥ हाथ पांव ठेव्या हुवें, कान नाक विण  
 जेह । तेपिण सो वरसां तणीहो, ब्रह्मचारी तजे  
 तेह ॥ सु० ॥ ४८ ॥ रूपे रम्जा सारिखी, मीठा  
 ढोली नार । तो किम जोवे एहवीहो, भग यौ-  
 वन व्रत धार ॥ सु० ॥ ४९ ॥ अवला इन्डी जो-  
 वतां, मन थाये वसि प्रेम । राजमति देखी करी  
 हो, तुरत क्यो रहनेम ॥ सु० ॥ ५० ॥ रूप कूप  
 देखी करी, मांदि पमे कामंध । दुःख माने जाणे  
 नहीं हो, कहे जिनहरख प्रबंध ॥ सु० ॥ ५१ ॥

दोहा—

संजोगी पासे रहे, व्रतधारी निशदीश । कुशल  
 न तेहना व्रत भणी, भांगे विश्वावीश ॥ ५२ ॥  
 वसे नहीं कुटि अंतरे, शील तणी हुवे हाणि ।  
 मन चचल वसि राखिवा, हीये धरोजिनवाणि ॥ ५३ ॥

॥ ढाल ६ ट्टी ॥

श्रीचन्द्रप्रभु पाहुणो रे ॥ एदेशी ॥

वाडी हिवे सुणी पांचमीरे, शील तणी रखवाल ।



चूरो पकसी तो सहरीरे, व्रत थासी विसराजरे ॥  
 वा० ॥ ५४ ॥ परियठ जीतने आंतरेरे, नारी रहे  
 जिह्वां रातरे । केलि करे निज कंतसुरे, विरह  
 मरोमे गातरे ॥ वा० ॥ ५५ ॥ कोयल जिम कुहके  
 लवे रे, गावे मधुरे सादरे । गहमाती राती  
 थकीरे, सुरत सरस उनमादरे ॥ वा० ॥ ५६ ॥  
 रोवे विरहा कुल थईरे, दाधी दुःख दव जालेरे ।  
 दीणे हीणे बोलडेरे, काम जगावे बालेरे ॥ वा०  
 ॥ ५७ ॥ काम बसे हरु हरु हसेरे, प्रिय भेटो तन  
 तापरे । वातकरे तन मन हरे रे, विरहिणी करे  
 विलापरे ॥ वा० ॥ ५८ ॥ राग विषय सुणी ऊलसे  
 रे, हांसे अनरथ होयरे । राम घरणी हांसा थकी  
 रे, रावण बध थयो जोयरे ॥ वा० ॥ ५९ ॥ व्रत-  
 धारी नवि सांजलेरे, एहवा विरही वयणरे । कहे  
 जिन हरख धीरम टलेरे, चित्त चले सुणि सयणरे  
 ॥ वा० ॥ ६० ॥

दोहा—

ठठी वाडे इम कह्यो, चंचल मन म निगाई ।  
 खाधो पीधो विलसियो, तिणिसुं चित्तमलाई ॥६१॥

काम भोग सुख प्रारथ्या, आपे नरक निगोद । पर-  
तिखनो कहेवो किसो, विलसे जेह विनोद ॥६२॥

## ॥ ढाव ७ मी ॥

आजनी हेजो दीसे नाहलो ॥ एदेशी ॥

जर जोवन धन सामग्री लही, पामी अनुपम  
जोगोजी । पांचे इन्द्री ने वसी जोगव्या, पांचे  
भोग संजोगोजी ॥ ज० ॥ ६३ ॥ ते चितारे  
ब्रह्मचारी नहीं, धुर जोगविया सुखोजी । आसी  
विसविस साल समोपमा, चीतारथायइ डुक्खो-  
जी ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सेठ माकंदी अंगज जाणिये,  
जिण रक्खीतेणि नामोजी । जहू तणी शिक्षा  
सहु विसरी, व्यामोहित वसी कामोजी ॥ ज०  
॥ ६५ ॥ रयणादेवी सन्मुख जोयो, पूरव प्रीति  
संजारोजी । तो तीखी करवाले बिंध्यो, नांख्यो  
जलधि मजारोजी ॥ ज० ॥ ६६ ॥ जोवो जिन  
पालित पंडित थयो, न कीयो तास वेसासोजी ।  
मूलगली पिण प्रीति न मन धरी, सुख संजोग  
विलासोजी ॥ भ० ॥ ६७ ॥ सेल्लग जहू ततखिण  
उधर्यो, मिलियो निज परिवारोजी । कहे जिन

हरख न पूरव कीलिया, संचारे नर नारोजी ॥  
भ० ॥ ६७ ॥

दोहा—

खाटा खारा चरचरा, मीठा भोजन जेह । मधुरा  
मउल कसायला, रसना सहु रस लेह ॥ ६८ ॥  
जेहनी रसना वशी नहीं, चाहे सरस आहार ।  
ते पामे दुःख प्राणियां, चउगती रुले संसार ॥ ७० ॥

॥ हाव ७ मी ॥

चरणाली चा मुंरिण चढे ॥ एदेशी ॥

ब्रह्मचारी सांजली वातकी, निज आतम हित  
जाणी रे । वाकी म चांजे सातमी, सुणी जिनवरनी  
वाणी रे ॥ ब्र० ॥ ७१ ॥ कवल ऊरे उपासता, घृत  
बिंदु सरस आहारोरे । तेह आहार निवारिये,  
जिणथी वधे विकारोरे ॥ ब्र० ॥ ७२ ॥ सरस रस—  
वती आहारे, दूध दही पकवानोरे । पाप श्रमण  
तेहने कढ्यो, उत्तरा ध्ययन मकारोरे ॥ ब्र० ॥ ७३ ॥  
चक्रवर्त्ति नी रसवती, रसिक थयो नृदेवोरे । काम  
विटवण तिण लही, वरजी श नितमेवो ॥ ब्र० ॥ ७४ ॥  
रसना जजजे लोलपी, लंपट लेण सवादोरे । मगूं

आचारिज परे, पामे कुगति विषादोरे ॥ ब्र० ॥७५॥  
 चारित्र ठांकी प्रमादियो, निज सुतनी रज धानीरे ।  
 राज रसवती वसिपड्यो, जोइ सेलगमद पानीरे ॥ ब्र०  
 ॥ ७६ ॥ सबल आहारे बल बधे, बल उपशमे न वे-  
 दोरे । वेदे व्रत खंडित हुवे, कहे जिन हरख उमेदोरे  
 ॥ ब्र० ॥ ७७ ॥

ढोडा-

अति आहारथी दुःख हुवे, गले रूप बल गात ।  
 आलस नींद प्रमाद घण, दोष अनेक कहात ॥७८॥  
 घणे आहारे विसचके, घणोज फाटे पेट । धान अ-  
 मामो ओरता, हांकी फाटे नेट ॥७९॥

ढाल ६ मी जंवूघीप मजार ॥ एदेशी ॥

पुरुष कवल घत्रीश, जोजन विधिकही । अठा-  
 वीश नारी जणीए । पंरुग नपुंसक कवल चउवीस  
 अधिके दूषण होइ ॥ असाता अति घणीए ॥८०॥  
 ब्रह्मव्रत धर नरनारी थाये, तेहने ऊणोदरीयें गुण  
 घणाए । जीमे जासक जेह, तेहने गुण नहीं अति-  
 चार ब्रह्मव्रत तणाए ॥ ८१ ॥ जोइ कुंरुकी सुणिंद,  
 सहस वरस लगी, तपकरी करि काया दहीए ।

तिणि जागो चारित्र, आयो राजमें अति मात्रा रस-  
वती लहीए ॥ ७२ ॥ मेवाने मिष्टान, विंजन नव  
नवा । शालि दालि घृत लुचिकाए, भोजन करी  
जरपूर सूतो निशी समे, हुई तास विसूचिकाए ॥ ७३ ॥  
वेदन सही अपार, आरति रूद्रमई । मरिगयो ते  
सातमीए, कहे जिन हरख प्रमाण ओछो जीमीयेए  
वानी कही ए आठमीए ॥ ७४ ॥

दोहा—

नवमी वानी विचारीने, पालि सदा निरदोख ।  
पामसी ततखीए प्राणिथां, अविचल पदवी मोख  
॥ ७४ ॥ अंगविजुषा ते करे, जे संजोगी होइ । व्रत  
धारी तन सोजवे, तिहां कारण नवि कोइ ॥ ७६ ॥

॥ ढाल १० मी ॥

वीरा बाहुबल गजथकी उतरो ॥ एदेशी ॥  
शोभा न करे देहनी, न करे तन सिणगार ।  
उगंटणा पीठी वली, न करे किणही वारो “ सुणि  
चेतन चेतन सुणि तुं तों मोंरी विनती, तोंनें सी-  
ख कहुं हितकारी ” ॥ सु० ॥ ७७ ॥ उन्हा ताड़ा  
नीरसुं न करै अंग अघोल । केशर चंदन कुंकुमें,

खांते न करे खोलो ॥ सु० ॥ ७७ ॥ घण मोलाने  
 ऊजला, न करे वस्त्र वणाव । घाते काम महाव-  
 ली, चोथा व्रतने घावो ॥ सु० ॥ ७८ ॥ कांकण कुं-  
 कज मुंदडी, माला मोतीहार पहिरे नहीं सोचा-  
 नणी, जे आये व्रत धारो ॥ सु० ॥ ७९ ॥ काम  
 दीपन जिनवर कहा, नूपण दूपण एह । अंग वि-  
 नूपा टालिवी, कहे जिन हरख सनेहो ॥ सु० ८० ॥

## ॥ ढाल ११ मी ॥

आपसवारथ जगसहूरे ॥ एदेशी ॥

श्री वीर दोइ दस पद्यदा में, उपदिश्यो इम  
 शील । जे पालिसी थल नव वाक्सुं ते लहसी हो  
 शिव संपति लील ॥ ए१ ॥ शील सदा तमे सेव-  
 ज्योरे, फल जेहनाहो अति सरस अखीण । आ-  
 ठ करम अरियण इणीरे. ते पामेहो ततखीण सु  
 प्रवीण ॥ शी० ॥ ए२ ॥ जलजलण अरि करी केस-  
 री, भयजावे सघला जांज । सुर असुर नर से-  
 वा करे, मन वंठित हो सीजे सहु काज ॥ शी० ॥  
 ॥ ए३ ॥ जिनजुवन निपावे नवो, कंचनतणो नर  
 कोइ । सोवन तणी कोइ कोमी देइ, शीलसमव

रु हो तोही पुण्य न होइ ॥ शी० ॥ ए५ ॥ ना-  
रीने दूषण नरथकी, तिम नारीथी नर दोष । ए  
वाडी बिहुं ने सारीखी, पालवी हो मन धरीसंतोष  
॥ शी० ॥ ए६ ॥ निधि नयण सुर शशी १७२ ए चाद्रपद  
वदी बीज । आलस्य छांकी, जिनहरख दृढव्रत पा-  
लिजो, व्रतधारी हो जुगती नव वाडी ॥ शी० ॥ ए७ ॥  
इति श्री ब्रह्मचर्यव्रत विपेशीयलनववारु संपूर्ण-  
म् ॥ ए३ ॥

## ॥ अथ श्रीआलोयण स्तवन ॥

दोहा-

आदिश्वर पहिलो अरिहंत, जय भंजण सामी  
जगवंत । युगला धरम निवारण हार, मन वंठित  
दोलत दातार ॥ १ ॥ चौरासी लख जोनि मजार,  
कीधा पाप अनंती वार । ते जिनवर तुं जाणै सही,  
तो पिण आलोवुं मुख कही ॥ २ ॥ पूरव पाप त-  
णै परकार, पाम्यो नीच कुले अवतार । काज अ-  
काज कीया जेतला, जव भवना दाखुं तेतला ॥ ३ ॥  
जल चर थल चर पंखी जीव, मारया में पामंता  
रीव । रात दिवस आहेके रम्यो, मृग मारे बावन

में जम्हो ॥ ५ ॥ रिण में हाथ गृही हथियार,  
 सुजटा रां कीधा सिंहार । विण अपराधे घाट्या  
 घाव, पिण पापी न कियो पछताव ॥ ५ ॥ पुर  
 पाटण पर जाट्या गाम, अन दव दीधा ठामो  
 ठाम । मील जवे कीधा बहु पाप, सघला जाणे  
 तुं मांय वाप ॥ ६ ॥ पेट भरेवा पातक कियो,  
 हणता जीव घणुं हरखियो । हिंसा दोष विचारयो  
 नही, धवलो तेतो जाण्यो दही ॥ ७ ॥ हंस मोर  
 सारस ने चास, रोज हिरण बलि पाड्या पास ।  
 चारी करी हाथी जालिया, इण विधि पातिक व-  
 हुला किया ॥ ८ ॥ माकरु जूं तावरु नाखिया,  
 बीठू पकडी ने राखिया । मकोरु मार्या घीवेल,  
 बिल में ऊनो पाणी रेल ॥ ९ ॥ माखी ईली ने अलसि-  
 या, कीडी गाद दीया गौमिया । सीप कातरा बलि  
 चूरेल, वरसाले नाख्या पगवेल ॥ १० ॥ मंजारी  
 राखी घर जाण, ऊदर भरता न धरी काण । कुत्ता  
 पाली मोटा किया, असती पोषण न विचारिया ॥ ११ ॥

॥ ढाद १ ली ॥

कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ एदेशी ॥



खांरुण पीसण रांधणे रे, सोवण जीमण ठाम ।  
 पडिमणे जल उपरे रे, देहरासर हित काम रे ॥  
 जिनवर साँजल एह अरदास ( ए आंकणि )  
 ॥ ११ ॥ आठे ठामे चन्द्रुआ रे, वांध्या नहीं रे  
 लिगार । शक्ति ठता धन खर्चता रे, आणयो लो-  
 भ अपार रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ किधी चोरी पारकी  
 रे, पाडी धाह अपार । परनी थापण ओलवी रे,  
 न धरयो पाप लिगार रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ हांसे जय  
 क्रोधे करी रे । बोदया मृषावाद । परना गुण देखी  
 करी रे, आणयो मन विषवाद रे ॥ जि० ॥ १५ ॥  
 सारो दिन राते रह्यो रे, पर नारी ने संग । साते  
 कुविसन से विया रे, पापी ने परसंग रे ॥ जि० ॥ १६ ॥  
 पांचे इन्ड्री मोकली रे, मूकी जिण तिणठाम ।  
 जोले पिण राख्यो नहीं रे, हियमे जिनवर नामरे  
 ॥ जि० ॥ १७ ॥ ब्रतलेइ जाज्यां वलीरे, न धरी  
 गुरुनी काण । समकित शुरू न राखियोरे, चित्त  
 न धरी जिनवाणरे ॥ जि० ॥ १८ ॥ अन्नद्व अ-  
 थाणा मद जख्यारे, रात्रि भोजन कीध । कंद मू-  
 ल टादया नहींरे, अणगल पाणी पीध रे ॥ जि० ॥

॥ १९ ॥ मधु माखण ने मांस नो रे, टालो न कर्यो कोइ । जीन सवादे जीवनेरे, लागा पातिक सोइरे ॥ जि० ॥ १० ॥ माले पंखीमारियारे, ईन्हा फोड्या कोरु । ते दूषण लागा घणारे, आलोउं कर जोड रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ बाल विछोडो मात ने रे, पास्यो कर्म विशेष । गाय न मेली वाठनी रे, पास्यो पातक देख रे ॥ जि० ॥ १२ ॥

## ॥ ढाल १ री ॥

सीखण सीखण चेलणा ॥ एदेशी ॥

गाम मुकाते मेलिया, अकराकर कीध । लोच करी जन मारिया, कूना आलज दीध ॥ अवधारो प्रभु विनती ॥ ए आंकणी ॥ तारो संसार, परमदयाल कृपाकरो मति राखो विचार ॥ अ० ॥ ॥ १४ ॥ मोटा रूख ठेदाविया, कोधा आरंज । हाट हवेशी कराविया, आप्या मोटाधंभ ॥ अ० ॥ ॥ १५ ॥ रांगण पास मंकाविया, नीवाह अनेक । घाणी करात्री अतिघणी, राख्यो न विवेक ॥ अ० ॥ ॥ १६ ॥ निंद्या करता पारकी, ढेन रात गमाया, भोला माणस जोलव्या, करी कूनी माया ॥

॥ अ० ॥ २७ ॥ लोह राठ वेच्या घणा, न करी  
कांइ जयणा । धाहुकार पन्नाविया, दीधा नहीं दे-  
णा ॥ अ० ॥ २८ ॥ करसण कूआ वावरी, बलि  
सूरुने दाण । पापकरी पोतो जरथो, धरतो मद  
माण ॥ अ० ॥ २९ ॥ कूमा माप कराविया, की-  
धा कूमा तोल । घी ने तेल भेला किया, देखी बहु  
मोल ॥ अ० ॥ ३० ॥ चामी करतां परतणी, जम-  
वारो हारथो । खाधी लांच जिहां तिहां, मन मूल  
न वारथो ॥ अ० ॥ ३१ ॥ आपण पौ वखाणियो,  
निरगुण तज लाज । मात पिता मान्या नहीं, करतां  
निज काज ॥ अ० ॥ ३२ ॥ देव अने गुरु धर्मनी,  
न करी कांइ कांण । धरम ठाम पातिक कियो,  
न धरी जिन आण ॥ अ० ॥ ३३ ॥ सात क्षेत्रे धन  
खरचतां, किधी कृपणाई । आप सवारथ राचते,  
केइ बात वणाई ॥ अ० ॥ ३४ ॥ सरवर द्रह जल  
सोसिया, लाख वाणिज कीधा । दंत केस रस वि-  
णजतां, लाख पातिक लीधा ॥ अ० ॥ ३५ ॥ साजी  
साबू ने गूत्री, बलि सोमल खार । कुविणज करतां  
किम हुवे, स्वामी बूटक वार ॥ अ० ॥ ३६ ॥ टंक-

ए लूण मोलाविया, आगर में जाय । लिहाला  
 लेई वेचतां, किम जयणा थाय ॥ अ० ॥ ३७ ॥  
 पुन्य ठाम आवी करी, विकथा परमाद । धर्म  
 लेश सुणयो नहीं, कीयो मोटो वाद ॥ अ० ॥ ३८ ॥

## ॥ ढाल ४ थी ॥

इम अनरथ दंड लगाया रे, पिण थारे सरण  
 नाया ॥ बलि सुलिया धान ज लीधा रे, पीसण  
 जोया विण दीधा रे ॥ ३९ ॥ काचा फल तोकी खाधा  
 रे, पर जीवन जाणी वाधा रे ॥ विषया रस स्वादे  
 मातो रे, में काल न जाण्यो जानो रे ॥ ४० ॥ संयम  
 लेइ नवि पाढ्यो रे, पोतानो जन्म विटाढ्यो रे ॥  
 लख ज्ञाने दूषण लागा रे, तप करने केइ जागा रे ॥  
 ४१ ॥ क्रोधे करी पाप उपाया रे, तप संयम मूल  
 गमाया रे ॥ जिण जिणसुं माया मंकी रे, धर्म सेती में  
 मति ठंकी रे ॥ ४२ ॥ गुरु पुस्तक विनय न कीधो रे,  
 तिण कारज को नवि सिझो रे ॥ लोभे करी चित्त  
 लपटाणो रे, मांखी मधू जेम जराणो रे ॥ ४३ ॥  
 पातिक कर परिग्रह संच्या रे, वाते कर जन जन  
 वंच्या रे ॥ ते अनरथ मूल न जाण्यो रे, मन कुमति

कदाग्रह ताण्यो रे ॥४४॥ जिन मारग मूल न जा-  
 एयो रे, जतने करी बांध्यो ताण्यो रे ॥ चेला रे मोह्ये  
 नडियो रे, तिण पाप अघोरे पडियो रे ॥ ४५ ॥  
 विचरंता गोचरी काजे रे, जे दोष कह्या जिनरा-  
 जे रे ॥ ते दूषण न टले कोई रे, दिन रात पकंत  
 रहोई रे ॥ ४६ ॥ मणि मोहरा औषधि मंत्रे रे,  
 जडी ज्योतिष पारद तंत्रे रे ॥ जन रज्जी बहु धन  
 मेढ्या रे, जूंआरीजूंअट खेढ्या रे ॥ ४७ ॥ चंचल  
 इंड्रि नवि दमिया रे, इम आले नरजव गमिया रे ॥  
 उपशम रस कोइ न आव्यो रे, जिन दरसण  
 हिव पठताव्यो रे ॥४८॥ अपणो मत गाढो पोख्यो रे,  
 फोगट पापे करी सोख्यो रे ॥ किरिया में मूल न पा-  
 ली रे, आलसथी आतमा बाली रे ॥४९॥ तप वे-  
 ढ्या ताक्यो ओलो रे, तप करी न सकुं हुं चो-  
 लो रे ॥ वलिं सूत्र सिद्धान्त न जणिया रे, दूषण  
 टाढ्या के गिणिया रे ॥ ५० ॥ कारज विण परघर  
 जाई रे, बैठो परसंग पराई रे ॥ मुनिवर ने परघर  
 वारथो रे, मन मांहीं तेन विचारथो रे ॥५१॥ इम  
 पातिक जाणी दाख्या रे, छाना में कोई न राख्या

कहेतां जे चितानावे रे, जे जीव तुमे चे जावे ॥  
 ५२ ॥ तुं त्रिनुवन तारण मिलियो रे, सघलारो  
 संशय टलियो ॥ मुऊ आज मनोरथ सिधो रे, में  
 जन्म कृतारथ कीधो ॥ ५३ ॥

## ॥ कलश ॥

इम आदि जिनवर सदा सुखकर सेवता संकट  
 टले । कर जोरु करता वले 'वीनति' सकल मन  
 वदित फले ॥ जिनराज जगगुरु मानसी से कमल  
 हरपे हित जणी । अरदास एहवी करी सुपरे स-  
 फल जव अपणो गिणी ॥ ५४ ॥

॥ इति श्री आलोच्येण स्तवनं सम्पूर्णम् ॥ ५४ ॥

॥ अथ जक्ति मार्गनो कंटक ॥

राग सोरठ-ताल-लावणी-

चादर जीणी रास जीणी ॥ एदेशी ॥

माया काकण दूरे जागी, जिनगुणमा लय लागी  
 ॥ माया ॥ संत समागम करीने हुंतो, थयो वैरागी रे ॥  
 जववृद्धिनी कारण माया, समझी मनथी त्यागी ॥  
 माया ॥ १ ॥ अनंतकालथी साथे रहीने, दुःख आपछे  
 नागी रे ॥ संत वचनथी दुःखकरजाणी, कीधी में तो  
 आधी ॥ माया ॥ २ ॥ अज्ञाने जव वनमा जमत,

अयो मोहनो रागी रे ॥ शिवपदकारण सरल पणु  
ठे, जोयुं हवे में जागी माया ॥ ३ ॥

॥ इति पदम् संपूर्णम् ॥ ए५ ॥

॥ अथ चक्ति रहितोनो उपाखंन ॥

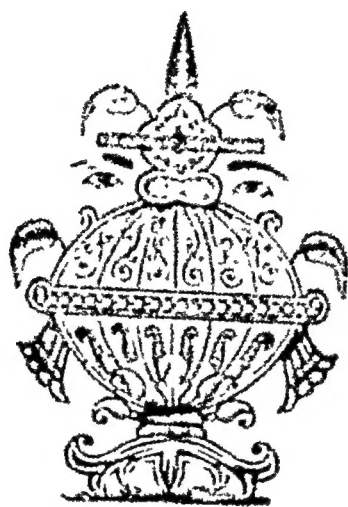
राग किंकोटी-ताल पंजावी ठेको ।

जिन मुखसे प्रजु नामन समयों, तिनमुखमें तेरे  
धुलपरी रे ॥ जिन० ॥ धिक तेरो जनम जिवीत धिः-  
क तेरो धिःक मानुपकी देह धरीरे, जीवित तात  
सुवो नहीं तेरो क्यो जनम्यों तुं पाप करीरे ॥ जिन० ॥  
१ ॥ प्रजु नाम विन रसना कैसी करो इनकी टुक-  
का टुकरी रे, जिन नेननसे नाथ न निरखत ति-  
न नेननमें लुण जरी रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ रतन पदारथ  
जनम मानखो, आवत नहीं सो फेर फरी रे, अब ते  
रो दाव बन्यो है मूरख करना होय सो लेने करी-  
रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ हाथ पसार कीयो नहीं सुकृत्य  
तीरथ सन्मुख दगन जरी रे खीम कहे तुं चूलो  
आयो तेरी खादी खेप परी रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

सम्पूर्णम्.







## मिलने का पता—

जं० यु० श्रीजिनदत्तसूरि आनन्दचन्द्र पाठशाला.

मगनीराम भभुतसिंह

रतलाम ( सी० आई० )

